₹ 20

www.kewalsach.com

निर्भीकता हमारी पहचान

जनवरी 2024

केवल सच

हिन्दी मासिक पत्रिका

RNI NO.- BIHHIN/2006/18181, DAVP NO.-129888, POSTAL REG. NO. :- PT.-35

गठबंधन टूट न जाये!

जन-जन की आवाज है केवल सच

आत्म-निर्भर बनने वाले युवाओं को सपोर्ट करें

आपका छोटा सहयोग, हमें मजबूती प्रदान करेगा

www.kewalsach.com

www.kewalsachlive.in

-: सम्पर्क करें :-

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, मकान संख्या-28/14,
कंकड़बाग, पटना (बिहार)-800020, मो०:-9431073769, 9308815605

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ

सत्येन्द्र नाथ बोस
01 जनवरी 1894

नाना पाटेकर
01 जनवरी 1951

विद्या बालन
01 जनवरी 1978

ममता बनर्जी
05 जनवरी 1955

दीपिका पादुकोण
05 जनवरी 1986

विपाशा वसु
07 जनवरी 1979

ए.आर. रहमान
08 जनवरी 1966

फराह खान
09 जनवरी 1965

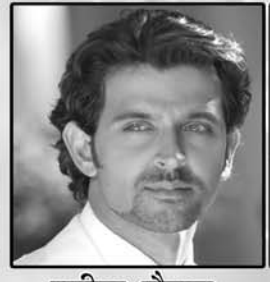

हृतीक रौशन
10 जनवरी 1974

राहुल द्रविड
11 जनवरी 1973

स्वामी विवेकानन्द
12 जनवरी 1863

प्रियंका गांधी
12 जनवरी 1972

राकेश शर्मा
13 जनवरी 1963

मायावती
15 जनवरी 1956

जावेद अख्तर
17 जनवरी 1945

सुभाष चन्द्र बोस
23 जनवरी 1897

बाल ठाकरे
23 जनवरी 1926

बॉबी दिओल
27 जनवरी 1967

लाला लाजपत राय
28 जनवरी 1865

प्रिति जिंटा
31 जनवरी 1975

निर्भीकता हमारी पहचान

www.kewalsach.com

केवल सच

हिन्दी मासिक पत्रिका

Regd. Office :-
East Ashok, Nagar, House No.-28/14, Road No.-14, kankarbagh, Patna- 8000 20 (Bihar) Mob.-09431073769
E-mail :- kewalsach@gmail.com

Corporate Office:-
Vaishnavi Enclave, Second Floor, Flat No. 2B, Near-firing range, Bariatu Road, Ranchi- 834001
E-mail :- editor.kstimes@rediffmail.com

Delhi Office :-
Sanjay Kumar Sinha, A-68, 1st Floor, Nageshwar Talla Shastri Nagar, New Delhi - 110052
Mob.- 09868700991, 09955077308
E-mail:- kewalsach_times@rediffmail.com

Kolkata Office :-
Ajeet Kumar Dube, 131 Chitranjan Avenue, Near- md. Ali Park, Kolkata- 700073 (West Bengal)
Mob.- 09433567880 09339740757

ADVERTISEMENT RATES PER ISSUE

COLOUR

AREA	FULL PAGE	HALF PAGE	Qr. PAGE
Cover Page	5,00,000/-	N/A	N/A
Back Page	1,60,000/-	N/A	N/A
Back Inside	1, 00000/-	60,000/-	35000
Back Inner	90,000/-	50,000/-	30000
Middle	1,50,000/-	N/A	N/A
Front Inside	1, 00000/-	60,000/-	40000
Front Inner	90,000/-	50,000/-	30000

B & W

AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
Inner Page	60,000/-	35,000/-

1. एक साल के नियमित विज्ञापन पर पत्रिका के वेवसाइट **www.kewalsach.com** के फ्रंट पर भी विज्ञापन निःशुल्क तथा आपका वेवसाइट से सीधा लिंक हो सकता है।
2. एक साल के नियमित विज्ञापन पर 10 प्रतिशत की रियायत।
3. आपके प्रोडक्ट या संगठन के प्रचार-प्रसार हेतु आलेख को उचित स्थान।
4. पत्रिका द्वारा सामाजिक कार्य में आपके संगठन/प्रोडक्ट का बैनर/फ्लैक्स को उचित स्थान देकर आपके संगठन का व्यापक प्रचार-प्रसार।
5. विज्ञापन का भुगतान चेक या आर.टी.जी.एस. से ही मान्य होगा।

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

खुद के बुने जाल में फंस गये नीतीश

अपनी प्रतिक्रिया हमारे ई-मेल पर दें:- editor.kstimes@rediffmail.com

अंत भला तो सब भला, लेकिन बिहार के मुखिया नीतीश कुमार ने प्रारंभ बहुत बेहतर किया लेकिन अंत की पटकथा बहुत विवादस्पद एवं चिंताजनक खुद ही बना दिया। शतरंज की चाल की तरह राजनीति में सत्ता पर काबिज होने तथा प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति बनने की चाहत ने सुशासन लाने के बाद पलटीमार राजनीति में बेशर्म मुख्यमंत्री की उपाधि प्राप्त कर फिर से पलटी मारकर एनडीए में शामिल हो गये और स्वार्थ की पूर्ति होता नहीं देख फिर पलटी मारकर लालू की गोद में बैठ गये परन्तु प्रधानमंत्री बनने की महत्वकांक्षा को पूरा होता नहीं देख (मुख्यमंत्री से भी हाथ धोना पड़े और बाद में जेल की यात्रा न करना पड़ जाये) इंडिया से एनडीए में शामिल होने की बौखलाहट साफतौर पर झलक रहा है। जर्जर बिहार को विकासशील बिहार बनाकर, विकसित बिहार की चाहत रखने वाले सत्ता के शीर्ष पर बने रहने की सदैव लालच ने नीतीश कुमार के व्यक्तित्व पर कालिख खुद नीतीश कुमार ने पोत ली है। भले ही जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष कभी शरद यादव, कभी स्वयं तो कभी आरसीपी सिंह तो कभी ललन सिंह और अचानक 2024 के लोकसभा चुनाव (जदयू कभी भी दो भाग में हो सकता था) को ध्यान में रखते हुए खुद राष्ट्रीय अध्यक्ष बनकर पार्टी को बचा लिया लेकिन खुद के बुने जाल में फंसते नीतीश कुमार ने पलटी मारने की कूटनीति में जुट गये हैं। इंडिया में हैं और एनडीए में चले जायें और 2024 में लोकसभा में जदयू का तीर चले की जुगाड़ में ही ललन बाबू को बाहर का रास्ता दिखाया गया है।

बिहार बीमार है, लेकिन नीतीशे कुमार हैं, सीट कितना भी आये, मुख्यमंत्री बनते बार-बार हैं यह नारा भारतीय जनता पार्टी एवं एनडीए के प्रवक्ता कहते नजर आते हैं लेकिन इनका विकल्प कौन है! इसकी तलाश में भाजपा के साथ महागठबंधन भी जुगाड़ लगाने में लगा हुआ है। पलटी मारकर बार-बार मुख्यमंत्री के सिंहासन पर बैठने वाले नीतीश कुमार ने 2005 में जब सत्ता का लगाम अपने हांथ में लिया तो महज 5 साल में ही बिहार का अतित पर वर्त्तमान हावि हो गया और बिहार की गौरवशाली इतिहास पर चर्चा होने लगी लेकिन सत्ता के लालच में 2014 के लोकसभा चुनाव में खुद को एनडीए का प्रधानमंत्री का उम्मीदवार बनने की चाहत ने चुनाव के एक साल पहले ही भाजपा एवं जदयू में ऐसा दरार पड़ा कि एक **बड़का झूठा पार्टी** बन गया तो एक **जनता का दमन और उत्पीड़न** की उपाधि से नवाजा गया। नीतीश कुमार एवं भाजपा के परिश्रम के कारण लालू-राबड़ी का राज समाप्त हो गया और 2010 में राष्ट्रीय जनता दल का सूपड़ा ऐसे साफ हो गया कि वह विपक्ष के लायक भी नहीं बचा। बिहार का जीडीपी की गति बढ़ने लगी और बिहार से बाहर भागने वाले बिहारी तो बिहारी अन्य राज्यों के लोग भी बिहार में विकास कार्य में अपनी भूमिका निभाने लगे। अपराध पर स्पीडी ट्रॉयल से जहां अंकुश लगा वही विकास कार्य की वजह से संविदा पर ही सही लेकिन लोगों को रोजगार का द्वार खुल गया लेकिन नीतीश कुमार को यह लगने लगा कि जिस प्रकार भाजपा उनको बिहार में मुख्यमंत्री का चेहरा बनाकर राजनीति की ठीक उसी प्रकार 2014 में उनको प्रधानमंत्री के रूप में भी स्वीकार करेगी। 2014 के लोकसभा चुनाव के पहले गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी की इंट्री होती है और उसके बाद नीतीश कुमार का सपना टूट जाता है और 2014 के लोकसभा चुनाव में महज 02 सीट नालन्दा और पूर्णिया पर ही जीत सके और नरेन्द्र मोदी स्पष्ट ही नही प्रचंड बहुमत से केन्द्र में सरकार बनाकर प्रधानमंत्री के पद पर काबिज हो गये। इस प्रकार की करारी हार की बौखलाहट के बाद नीतीश कुमार का राजनीतिक संतुलन अस्थिर हो गया और उन्होंने बिहार में मुख्यमंत्री का पद त्यागकर दलित नेता जीतन राम माँझी को मुख्यमंत्री का कमान सौंप दिया लेकिन महज 09 महीने में ही माँझी ने श्री कुमार को शिकस्त देना शुरू किया क्योंकि माँझी, मोदी के करीब होते जा रहे थे। अपनी पराजय का प्रलयकारी रूप से बचने के लिए फिर से एकबार मुख्यमंत्री की कुर्सी छीन ली और खुद विराजमान हो गये और राजनीतिक अहंकार एवं मोदी के मुकाबला के चक्कर में 2015 में राजद एवं अन्य विपक्षी दलों के साथ मिलकर महागठबंधन बना लिया। नीतीश कुमार यह भूल गये कि जिस दल से मुक्ति के लिए दशको संघर्ष किया और उसको नेस्तनाबूत कर दिया उस दल राजद को 2015 में विधानसभा के चुनाव में सबसे बड़ी सफलता मिली और नीतीश कुमार बावजूद इसके मुख्यमंत्री बने लेकिन व्यक्तिगत ब्रांडिंग के कारण 2017 में लालटेन की रौशनी एवं हांथ का साथ छोड़कर अपने अहंकार पर नियंत्रण करते हुए भाजपा के साथ एनडीए में शामिल हो गये और 2019 के लोकसभा चुनाव में 16 सीट पर विजय हुई यानि के 2014 में 02 सीट से मोदी लहर में 14 सीट अधिक जीतने में कामयाब हो गये। इस बार नीतीश कुमार ने राष्ट्रपति एवं उप राष्ट्रपति का सपना देखा लेकिन जब मोदी के प्रभाव के कारण आडवाणी एवं जोशी पर तलवार लटक सकती है वैसे में नीतीश कुमार को देश का सर्वोच्च पद पर कैसे विराजमान कराया जा सकता है। 2020 के विधानसभा चुनाव के नतीजे आयी और भाजपा के 74 विधायक एवं जदयू के मात्र 43 लेकिन मुख्यमंत्री का ताज श्री कुमार को ही मिला लेकिन कारारी हार के लिए भाजपा को जिम्मेवार मानते हुए 2022 में फिर से लालू के गोद में आकर बैठ गये और बिहार में रिकॉर्ड बना दिया मुख्यमंत्री के पद पर आसन होने का। एक तरफ 2014 से मोदी का कद भारत के अलावा विदेशों में बढ़ने लगा तो दूसरी तरफ नीतीश कुमार के अपने ही दल में फूट पड़ गया और आनन-फानन में राष्ट्रीय अध्यक्ष का पद भी हासिल कर लिया ताकि इंडिया गठबंधन उनको प्रधानमंत्री का उम्मीदवार बना दे परन्तु जब एक बार दूध फट जाता है तो वह दही या पनीर बन सकता है लेकिन दूध वाला प्रभाव नहीं बच जाता और नीतीश कुमार की हालत बिहार में वही हो चुकी है। बिहार का 0 से शिखर पर पहुंचाने वाले नीतीश कुमार ने फिर से शिखर से 0 पर लाकर छोड़ दिया है। लगभग 34 साल (आजादी का आधा) कभी लालू तो कभी नीतीश कुमार ने बिहार के अस्तित्व को खतरे में डाल दिया है। नीतीश कुमार का व्यक्तित्व एक सुलझे हुए राजनेता के रूप में होती है पर राजनीतिक सलाहकार के आभाव में नीतीश कुमार ने स्वयं अपने लिए राजनीतिक कब्र खोद ली है, भले ही इसका ठिकरा ललन या लालू पर फूटे। मोदी का शिकार करने के चक्कर में नीतीश कुमार खुद ही अपने बुने जाल में फंस गये लेकिन राजनीति में सबकुछ संभव है और पासा कभी भी बदल सकता है।

दिसंबर 2023

आपको केवल सच पत्रिका कैसी लगी तथा इसमें कौन-कौन सी खामियाँ हैं, अपने सुझाव के साथ हमारा मार्गदर्शन करें। आपका पत्र ही हमारा बल है। हम आपके सलाह को संजीवनी बूटी समझेंगे।

केवल सच

हमारा पता है :-

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका
द्वारा:- ब्रजेश मिश्र
पूर्वी अशोक नगर, रोड़ नं.- 14, मकान संख्या- 14/28
कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)
फोन:- 9431073769/ 8340360961/ 9955077308

हमारा ई-मेल
kewalsach@gmail.com, editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

चला बुलडोजर

संपादक जी,

केवल सच, पत्रिका न सिर्फ राजनीति और भ्रष्टाचार की खबर लिखती है बल्कि बुनियादी समस्याओं को भी स्थान देती है। दिसंबर 2023 अंक में विजय विनीत की खबर ''शिल्पकारों की धरती पर चला बुलडोजर, मूर्तिया गढ़ने वाले अपनी तकदीर नहीं गढ़ सके'' में मूर्तिकारों की दयनीय स्थिति का बहुत ही मार्मिक चित्रण किया है तथा सरकार एवं प्रशासन की उदासीनता को भी फोकस किया है जो काबिले तारिफ है। इस प्रकार की खबर से सही सदेश जाता है।

✦ **संजय पटवा, मानपुर बाजार, गया (बिहार)**

लटकी तलवार

ब्रजेश जी,

दिसंबर 2023 अंक प्रकाशित अमित कुमार की ''**22 हजार बीएड धारक शिक्षकों पर लटकी तलवार**'' खबर में सटीक समीक्षा की गयी है कि अपर मुख्य सचिव के के पाठक और विभाग के मंत्री के बीच विवाद गहरा है, वही दूसरी ओर प्राथमिक संघ की आन्दोलन की तैयारी की बात को भी उल्लेख किया गया है। शिक्षकों की नियुक्ति और उनका नियमित वेतन भी एक चुनौती है और बीपीएससी के चयन पद्धति पर भी सवाल उठना लाजमी है। आपकी केवल सच की खबर काफी बेबाक रहती है।

✦ **पुनित राय, सेक्टर-8, बोकारो, झारखंड**

माया मिली न राम

मिश्रा जी,

दिसंबर 2023 अंक में 'केवल सच', पत्रिका में अमित कुमार की खबर ''**माया मिली न राम...**'' में इंडिया गठबंधन और खासकर नीतीश कुमार को फोकस करके लिखा गया है। 2024 के लोकसभा चुनाव के ध्यान में रखकर बनाया गया इंडिया गठबंधन में जिस प्रकार की राजनीति की जा रही है उससे यह साफ होता जा रहा है कि यह महागठबंधन के बीच काफी दरार है और कोई किसी को सर्वमान्य नेता स्वीकार्य करने को तैयार नहीं है। नीतीश कुमार का सपना संयोजक बनने का ध्वस्त हो गया और भाजपा से दूरी भी बन गयी है।

✦ **रेश्मी चटर्जी, बाबू बाजार, कोलकात्ता, प.बं.**

2024 का चुनाव

मिश्रा जी,

केवल सच, पत्रिका का संपादकीय बेबाक एवं ज्वलंत मुद्दे आधारित होती है। दिसंबर 2023 अंक में आपका संपादकीय ''**श्रीराम मंदिर का उद्घाटन और 2024 का चुनाव**'' में वर्त्तमान समय में प्रभु श्रीराम का राजनीतिकरण पर काफी सटीक एवं व्यंग्यात्मक समीक्षा किया है। प्रधानमंत्री मोदी ने भारत देश को सनातन धर्म का झंडा को बुलंद किया है। एक तरफ मोदी एवं दूसरी तरफ सम्पूर्ण विपक्ष 2024 के चुनाव में श्रीराम के नाम को अपने रैलियों में अवश्य लेगी और इसका लाभ भाजपा को मिलेगा। अमित शाह की कूटनीति का डंका बजता दिख रहा है।

✦ **कौशलेन्द्र झा, टावर चौक, दरभंगा, बिहार**

लूटेरे फरार

संपादक जी,

भोजपुर जिला के मुख्यालय आरा में हुई बैंक लूट की घटना का आमजनता के बीच अनसुलझा माहौल बना हुआ है। ''16 लाख लूटकर पीछे दरवाजे से लूटेरे फरार'' खबर में गुड्डू कुमार सिंह ने पूरे मामले की सटीक पड़ताल करते हुए पुलिस के द्वारा की जा रही कार्रवाई को पाठकों के बीच रखा है। चोरी की अनोखी घटना में बैंक के कर्मी एवं सुरक्षा गार्ड की मिलीभगत की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता है। पुलिस ने इस्तेहार भी निकाला और 50 हजार का इनाम रखा और मामले की छानबीन के लिए डीआईजी भी आये। जानकारी देने वाला खबर।

✦ **प्रमोद कुशवाहा, रमना रोड, आरा, भोजपुर**

राँची की खबरें

संपादक जी,

ओम प्रकाश के द्वारा लिखी गयी राँची की कई खबरें काफी विचारणीय है। पुलिस के साथ राजनीति की भी खबर को भी स्थान मिलना चाहिए। ''**डेली मॉर्केट की सब्जी मंडी में आग लगने से दुकाने जलकर राख**'' की खबर काफी चिंताजनक है तो ''**नाबालिक से सामूहिक दुष्कर्म मामले में छः आरोपी गिरफ्तार**'' की खबर से मन को संतुष्टि मिली की पुलिस सक्रिय है। संजय पाहन के मामले में पुलिस को मिली सफलता भी राँची पुलिस की मुस्तैदी का एहसास कराती है। सभी खबरें पठनीय है।

✦ **मनोज उरांव, करमटोली चौक, राँची, झा०**

अन्दर के पन्नों में

RNI No.- BIHHIN/2006/18181, DAVP No.- 129888

समृद्ध भारत खुशहाल भारत

निर्भीकता हमारी पहचान

केवल सच

राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका

वर्ष:- 18, | अंक:- 212, | माह:- जनवरी 2024, | मूल्य:- 20/- रू

फाउंडर

स्व० गोपाल मिश्र

संपादक

ब्रजेश मिश्र

9431073769 8340360961

editor.kstimes@rediffmail.com

kewalsach@gmail.com

प्रधान संपादक

अरूण कुमार बंका 7782053204

सुरजीत तिवारी 9431222619

निलेन्दु कुमार झा 9431810505, 8210878854

सच्चिदानन्द मिश्र 9934899917

रामानंद राय 9905250798

डॉ० शशि कुमार 9507773579

संपादकीय सलाहकार

अमिताभ रंजन मिश्र 9430888060, 8873004350

अमोद कुमार 9431075402

महाप्रबंधक

त्रिलोकी नाथ प्रसाद 9308815605, 9122003000

triloki.kewalsach@gmail.com

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

पूनम जयसवाल 9430000482, 9798874154

मनीष कुमार कमलिया 9934964551, 8809888819

उप-संपादक

अरविंद मिश्रा 9934227532, 8603069137

प्रसुन्न पुष्कर 9430826922, 7004808186

ब्रजेश सहाय 7488696914

ललन कुमार 7979909054, 9334813587

आलोक कुमार सिंह 8409746883

संयुक्त संपादक

अमित कुमार 'गुड्डू' 9905244479, 7979075212

राजीव कुमार शुक्ला 9430049782, 7488290565

कृष्ण कुमार सिंह 6209194719, 7909077239

काशीनाथ गिरी 9905048751, 9431644829

बिरेन्द्र सिंह 7050383816

सहायक संपादक

शशि रंजन सिंह 8210772610, 9431253179

मिथिलेश कुमार 9934021022, 9431410833

नवेन्दु कुमार मिश्र 9570029800, 9199732994

कामोद कुमार कंचन 8971844318

समाचार प्रबंधक

सुधीर कुमार मिश्र 9608010907

ब्यूरो-इन-चीफ

संकेत कुमार झा 9386901616, 7762089203

बिनय भूषण झा 9473035808, 8229070426

विधि सलाहकार

शिवानन्द गिरि 9308454485

रवि कुमार पाण्डेय 9507712014

चीफ क्राइम ब्यूरो

आनन्द प्रकाश 9508451204, 8409462970

साज-सज्जा प्रबंधक

अमित कुमार 9905244479

amit.kewalsach@gmail.com

कार्यालय संवाददाता

सोनू यादव 8002647553, 9060359115

प्रसार प्रतिनिधि

कुणाल कुमार 9905203164

बिहार प्रदेश जिला ब्यूरो

पटना (श०)	:-	श्रीधर पाण्डेय	9470709185
(म०)	:-	गौरव कुमार	9472400626
(ग्रा०)	:-		
बाढ़	:-		
भोजपुर	:-	गुड्डू कुमार सिंह	8789291547
बक्सर	:-	बिन्ध्याचल सिंह	8935909034
कैमूर	:-		
रोहतास	:-	अशोक कुमार सिंह	7739706506
	:-		
गया (श०)	:-	सुमित कुमार मिश्र	7667482916
(ग्रा०)	:-		
औरंगाबाद	:-		
जहानाबाद	:-	नवीन कुमार रौशन	9934039939
अरवल	:-	संतोष कुमार मिश्रा	9934248543
नालन्दा	:-		
	:-		
नवादा	:-	अमित कुमार	9934706928
	:-		
मुंगेर	:-		
लखीसराय	:-		
शेखपुरा	:-		
बेगूसराय	:-	निलेश कुमार	9113384406
	:-		
खगड़िया	:-		
समस्तीपुर	:-		
जमुई	:-	अजय कुमार	09430030594
वैशाली	:-		
	:-		
छपरा	:-		
सिवान	:-		
	:-		
गोपालगंज	:-		
	:-		
मुजफ्फरपुर	:-	.	
	:-		
सीतामढ़ी	:-		
शिवहर	:-		
बेतिया	:-	रवि रंजन मिश्रा	9801447649
बगहा	:-		
मोतिहारी	:-	संजीव रंजन तिवारी	9430915909
दरभंगा	:-		
	:-		
मधुबनी	:-	सुरेश प्रसाद गुप्ता	9939817141
	:-	प्रशांत कुमार गुप्ता	6299028442
सहरसा	:-		
मधेपुरा	:-		
सुपौल	:-		
किशनगंज	:-		
	:-		
अररिया	:-	अब्दुल कय्यूम	9934276870
पूर्णिया	:-		
कटिहार	:-		
भागलपुर,	:-		
(ग्रा०)	:-	रवि पाण्डेय	7033040570
नवगछिया	:-		

दिल्ली कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- संजय कुमार सिन्हा
A-68, 1st Floor,
नागेश्वर तल्ला, शास्त्रीनगर, न्यू
दिल्ली-110052
संजय कुमार सिन्हा, स्टेट हेड
मो०- 9868700991, 9431073769

उत्तरप्रदेश कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
....., स्टेट हेड

सम्पर्क करें
9308815605

पश्चिम बंगाल कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- अजीत कुमार दुबे
131 चितरंजन एवेन्यू,
कोलकात्ता, पश्चिम बंगाल- 700073
अजीत कुमार दुबे, स्टेट हेड
मो०- 9433567880, 9308815605

मध्य प्रदेश कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
हाउस नं.-28, हरसिद्धि कैम्पस
खुशीपुर, चांबड़
भोपाल, मध्य प्रदेश- 462010
अभिषेक कुमार पाठक, स्टेट हेड
मो०- 8109932505,

झारखंड कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
वैष्णवी इंक्लेव,
द्वितीय तल, फ्लैट नं- 2बी
नियर- फायरिंग रेंज
बरियातु रोड, राँची- 834001

छत्तीसगढ़ कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,

....., स्टेट हेड

सम्पर्क करें
8340360961

संपादकीय व प्रधान कार्यालयः-

☞ पूर्वी अशोक नगर, रोड नं:-14, मकान संख्याः- 14/28, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार) मो०- 9431073769, 9955077308

☞ e-mail:- kewalsach@gmail.com, e ditor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

☞ स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक ब्रजेश मिश्र द्वारा सांध्य प्रवक्ता खबर वर्क्स, ए- 17, वाटिका विहार (आनन्द विहार), अम्बेडकर पथ, पटना 8000 14(बिहार) एवं पूर्वी अशोक नगर, रोड नं. 14, कंकड़बाग पटना-800020 से प्रकाशित, संपादक- ब्रजेश मिश्र। RNI NO.-BIHHIN/2006/18181

☞ पत्रिका में प्रकाशित समाचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।

☞ सभी प्रकार के वाद-विवादों का निपटारा पटना न्यायालय के अधीन होगा।

☞ आलेख पर कोई आपत्ति हो तो एक महीने के भीतर खंडन करें।

☞ किसी भी लेख के लिए रचनाकार/लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे।

☞ सभी पद अवैतनिक हैं।

☞ फोटो-समाचार साभार भी (माध्यम- इंटरनेट एवं अन्य स्त्रोत)

☞ कोई भी शिकायत हमारे पते पर लिखकर भेजें।

☞ **विज्ञापन का भुगतान चेक या ड्राफ्ट एवं RTGS से ही मान्य होगा।**

☞ भुगतान Kewal Sach को ही करें। प्रतिनिधियों को नगद न दें।

☞ A/C No. :- 0600050004768
BANK :- Punjab National Bank
IFSC Code :- PUNB0060020
PAN No. :- AAJFK0065A

प्रधान संपादक

.....
.....

झारखण्ड स्टेट ब्यूरो

.....
.....

झारखण्ड सहायक संपादक

ब्रजेश कुमार मिश्र 9431950636, 9631490205
ब्रजेश मिश्र 7654122344-7979769647
अभिजीत दीप 7004274675-9430192929

उप संपादक

.....
.....

संयुक्त संपादक

.....
.....

विशेष प्रतिनिधि

भारती मिश्रा 8210023343-8863893672

.....
.....

झारखण्ड प्रदेश जिला ब्यूरो

राँची :- अभिषेक मिश्र 7903856569
:- ओम प्रकाश 9708005900
साहेबगंज :- अनंत मोहन यादव 9546624444
खूँटी :-
जमशेदपुर :- तारकेश्वर प्रसाद गुप्ता 9304824724
हजारीबाग :-
जामताड़ा :-
दुमका :-
देवघर :-
धनबाद :-
बोकारो :-
रामगढ़ :-
चाईबासा :-
कोडरमा :-
गिरीडीह :-
चतरा :- धीरज कुमार 9939149331
लातेहार :-
गोड्डा :-
गुमला :-
पलामू :-
गढ़वा :-
पाकुड़ :-
सरायकेला :-
सिमडेगा :-
लोहरदगा :-

श्री चन्द्र प्रकाश सिंह

प्रधान संरक्षक सह प्रबंध संपादक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
राष्ट्रीय संगठन मंत्री, राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक)
पूर्व निदेशक सदस्य, ओरियेंटल बैंक ऑफ कॉमर्स
09431016951, 09334110654

डॉ. सुनील कुमार

शिशु रोग विशेषज्ञ सह मुख्य संरक्षक
'केवल सच' पत्रिका
एवं 'केवल सच टाइम्स'
एन.सी.- 115, एसबीआई ऑफिसर्स कॉलोनी,
लोहिया नगर, कंकड़बाग, पटना- 800020
फोन- 0612/3504251

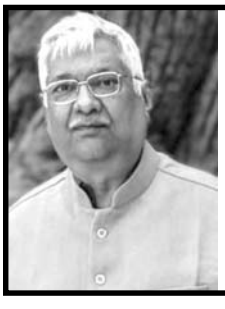

श्री सज्जन कुमार सुरेका

मुख्य संरक्षक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
डी- 402 राजेन्द्र विहार, फॉरेस्ट पार्क
भुवनेश्वर- 751009 मो-09437029875

सुधीर कुमार

मुख्य संरक्षक सह निदेशक ''**मगध इंटरनेशनल स्कूल**'' टेकारी
'' **केवल सच** '' पत्रिका **एवं** '' **केवल सच टाइम्स** ''
9060148110
sudhir4s14@gmail.com

श्री आर के झा

मुख्य संरक्षक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
EX. CGM, (Engg.) N.B.C.C
08877663300

बिहार राज्य प्रमंडल ब्यूरो

पटना		
मगध		
सारण		
तिरहुत		
पूर्णिया	**धर्मेन्द्र सिंह**	9430230000 7004119966
भागलपुर		
मुंगेर		
दरभंगा		
कोशी		

विशेष प्रतिनिधि

आशुतोष कुमार	9430202335, 9304441800
सुमित राज यादव	9472110940, 8987123161
बेंकटेश कुमार	8521308428, 9572796847
राजीव नयन	9973120511, 9430255401
मणिभूषण तिवारी	9693498852
दीपनारायण सिंह	9934292882
आनन्द प्रकाश पाण्डेय	9931202352, 7808496247
विनित कुमार	8210591866, 8969722700
रामजीवन साहू	9430279411, 7250065417

छायाकार

त्रिलोकी नाथ प्रसाद	9122003000, 9431096964
मुकेश कुमार	9835054762, 9304377779
जय प्रसाद	9386899670,
कृष्णा प्रसाद	9608084774, 9835829947

गठबंधन टूट न जाये!

● अमित कुमार

इंडिया गठबंधन अपनी एकजुटता का चाहे जितना प्रदर्शन कर ले, इसका आधार बने बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की पार्टी में गठबंधन के प्रति आग्रही भाव और अविश्वास का पुट क्यों है? जदयू के शीर्ष नेताओं के बयानों का आकलन करेंगे तो इंडिया गठबंधन की टकराहट कह लें या कुछ और आपसी तालमेल का आभाव दिख रहा है। आखिर जदयू के शीर्ष नेताओं में इतनी बेचारगी क्यों है? राजनीतिक गलियारों में जदयू के मुख्य प्रवक्ता केसी त्यागी या नीतीश कुमार के करीबी मंत्री विजय चौधरी के बयानों का विश्लेषण हो रहा। उनके बयानों का एनालिसिस कुछ इस तरह से हो रहा कि जदयू हाफ हर्टेड इंडिया गठबंधन के साथ है। जदयू कहीं न कहीं कांग्रेस के व्यवहार से आहत है। इस वजह से एक नजर एनडीए गठबंधन की तरफ भी है। तेजी की वजह भी है क्योंकि बीजेपी के नेता एक दूसरे के प्रति सॉफ्ट कॉर्नर रख रहे हैं। अब तो कांग्रेस सीधे मुंह जदयू से बात भी नहीं कर रही है। आरजेडी और कांग्रेस की बैठक दिल्ली में होती है। वहां जदयू का साथ नहीं रहना भी पार्टी नेताओं को खला है। इसलिए जदयू नेता अपनी-अपनी खीझ निकाल रहे हैं। एक वरिष्ठ पत्रकार का कहना है कि

इंडिया गठबंधन में नीतीश कुमार की कोई सुन नहीं रहा है। जिस दल का एक सांसद नहीं है अब वह 16 सांसदों वाली पार्टी जदयू को डिक्टेट करेगा। कांग्रेस ने तो जदयू को आइना दिखा ही दिया। न कन्वेनर बनाया और अब तो कांग्रेस वाया राजद नीतीश कुमार से बात कर रही है। जदयू के वरिष्ठ नेता बार-बार सीट शेयरिंग की बात उठा रहे हैं। पर उन्हें यह नहीं दिख रहा है कि नीतीश कुमार पिछले चार महीने से सीट शेयरिंग को लेकर लगातार कहे जा रहे हैं। नीतीश कुमार तो पहली बैठक से ही कह रहे थे कि सबसे पहले सीट शेयरिंग पर ही बात होनी चाहिए। पार्टी के भीतर भी मतभेद है। कोई 16 कोई 17 सीटों पर चुनाव लड़ने की बात कह रहे हैं। मुझे तो लगता है कि नीतीश कुमार भी अनिर्णय के शिकार हैं। वे तय नहीं कर पा रहे हैं कि करना क्या है? इसलिए दोनो तरफ से तोल मोल करना चाह रहे हैं। नीतीश कुमार को जहां ज्यादा हिस्सेदारी मिलेगी वही जाएंगे। हालांकि नये वर्ष में 7 जनवरी को इंडिया ब्लॉक में सीट बंटवारे को लेकर दिल्ली में कांग्रेस नेता मुकुल वासनिक के

घर पर सहयोगी दल आरजेडी के साथ बैठक हुई थी। इस बैठक में कांग्रेस के वरिष्ठ नेता अशोक गहलोत, सलमान खुर्शीद समेत कई दिग्गज मौजूद थे। दूसरी ओर आरजेडी से राज्यसभा सांसद मनोज झा भी इस बैठक में शामिल थे। करीब ढाई घंटों तक चली बैठक के बाद बिहार कांग्रेस अध्यक्ष अखिलेश प्रसाद सिंह ने कहा कि सीटों की शेयरिंग पर विस्तार से चर्चा हुई, एक-दो दिन में जेडीयू से बातचीत होगी। वहीं आरजेडी नेता मनोज झा ने इस बैठक को ऑल इज वेल बताया। साथ ही कहा कि शीट शेयरिंग पर बात अच्छी रही। इस बैठक में क्वालिटी पर बात हुई, क्वांटिटी पर नहीं। सूत्रों के हवाले से बात सामने आयी कि कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और वरिष्ठ नेता अनिल शर्मा बिहार में 10 सीटों पर चुनाव लड़ने की बात कही। दिगर बात है कि 2019 लोकसभा चुनाव में कांग्रेस ने 9 सीटों पर चुनाव लड़ा था, लेकिन पार्टी सिर्फ किशनगंज सीट ही जीत पाई थी। एक बात और दिलचस्प है कि अभी तक बैठकों में ना तो चेहरा तय हो पाया है और ना ही मुद्दों पर सहमति बनी है। बताते चले कि कांग्रेस राज्यों में अधिक सीट लेने की विचार कर रही है। कांग्रेस का मानना है कि पार्टी जहां पर मजबूत है वहां वह पर इस बार भी अपने उम्मीदवार को ही मैदान में उतारेगी। साथ ही कम मार्जिन से हारने वाली सीट पर भी पार्टी उम्मीदवारों को टिकट देने पर विचार कर रही है। कुल मिलाकर कांग्रेस 543 लोकसभा सीटों में से 275 सीटों पर अकेले चुनाव लड़ना चाहती है। हालांकि, पार्टी की ओर से कोई आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है, लेकिन सियासी गलियारों में चल रही चर्चा को देखते हुए यह अंदाजा लगाया जा रहा है कि कांग्रेस राज्यों में क्षेत्रीय दलों से अधिक सीटों पर चुनाव लड़ने का मन बना रखी है।

गौरतलब हो कि जनता दल यूनाइटेड के नये अध्यक्ष और बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार विपक्षी गठबंधन इंडिया ब्लॉक में चल रही सीटों की माथापच्ची के बीच लोकसभा की 16 से 17 सीटों से कम पर राजी नहीं है। उनकी पार्टी जनता दल यूनाइटेड का कहना है कि लोकसभा में हमारे 16 सांसद हैं एक सीट पर हम दूसरे स्थान पर थे, इस लिहाज से 17 से कम सीटों पर चुनाव नहीं लड़ेंगे। बिहार के जल संसाधन मंत्री और नीतीश कुमार के भरोसेमंद सहयोगी संजय कुमार झा ने कहा कि उनकी पार्टी राज्य में 16 लोकसभा सीटों से कम पर चुनाव नहीं लड़ेगी। लोकसभा में हमारे 16 सांसद हैं और बिहार में 16 से कम सीटों पर चुनाव लड़ने का सवाल ही नहीं उठता। उनका बयान राजद नेता और डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव के पटना में नीतीश कुमार के आधिकारिक आवास पर मुलाकात के एक दिन बाद आया है। बता दें कि विपक्षी गठबंधन इंडिया की चौथी बैठक के बाद, बिहार में इसके गठबंधन सहयोगी लोकसभा चुनाव 2024 से पहले एक-दूसरे के साथ कड़ी सौदेबाजी कर रहे हैं। हालांकि बिहार में लोकसभा चुनाव के लिए इंडिया गठबंधन के दलों में सीट बंटवारे का फॉर्मूला तैयार हो गया है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की जेडीयू और लालू प्रसाद यादव की आरजेडी ने सीट बंटवारे का फॉर्मूला दिल्ली भेजा है। सूत्रों के मुताबिक इस फॉर्मूले में जेडीयू और आरजेडी को 17-17 सीटें देने की बात कही गई है। वहीं अन्य 6 में से 4 सीटों पर कांग्रेस तो 2 पर सीपीआई माले को चुनाव लड़ाने का प्रस्ताव है। गठबंधन में शामिल सीपीआई और सीपीएम को एक भी सीट नहीं दी गई है। लालू-नीतीश के इस फॉर्मूले से गठबंधन के अंदर माथापच्ची होने की आशंका जताई जा रही है। महागठबंधन के सूत्रों के मुताबिक कांग्रेस की पांच सदस्यीय राष्ट्रीय गठबंधन कमिटी (एनएसी) को बिहार में सीट बंटवारे का एक प्रस्ताव सौंपा गया है। इस कमिटी के अध्यक्ष कांग्रेस नेता मुकुल वासनिक हैं। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अखिलेश सिंह ने एक चैनल से बातचीत

में कहा कि कमिटी के सामने सीट शेयरिंग को लेकर प्रस्ताव पर चर्चा हो चुकी है। कांग्रेस की गठबंधन कमिटी का गठन समान विचारधारा वाले दलों और इंडिया गठबंधन के क्षेत्रीय सहयोगियों के साथ सीट बंटवारे पर बातचीत करने के लिए किया गया है। इस मुद्दे पर आरजेडी के एक शीर्ष नेता ने बताया कि उनकी पार्टी और जेडीयू को 17-17 सीटें मिलेंगी। जबकि कांग्रेस को चार और 2 सीट पर सीपीआई माले चुनाव लड़ेगी। उन्होंने कहा कि सीट आवंटन 17:17:4:2 अनुपात के तहत किया जाएगा। उम्मीदवारों और अन्य मुद्दों पर आगे की बातचीत पर काम किया जा रहा है। यह सीट शेयरिंग फॉर्मूला लगभग फाइनल है। वहीं, कांग्रेस के शीर्ष सूत्रों ने कहा कि एक वैकल्पिक फॉर्मूले पर भी विचार किया जा रहा है। जिसके तहत जेडीयू को 17 सीटें जेडीयू की दी जाएंगी, जबकि बाकी की आरजेडी को मिलेंगी। आरजेडी अपने ही कोटे की 23 सीटों में से कांग्रेस और वाम दलों को सीटें बांटेगी। महागठबंधन के सूत्रों ने कहा कि सीट बंटवारे के समझौते पर मुहर लगाने के लिए एनएसी जरिए कांग्रेस और क्षेत्रीय दलों के बीच कुछ दौर की बातचीत होगी। इसकी घोषणा इंडिया गठबंधन के तहत सभी 28 पार्टियों के नेताओं की एक प्रस्तावित वर्चुअल बैठक के बाद जनवरी के अंत तक होने की संभावना है। आरजेडी के अंदरूनी सूत्रों ने बताया है कि राजद, जदयू, कांग्रेस और वाम दलों द्वारा जिन सीटों पर लोकसभा चुनाव लड़ा जाएगा, उनकी पहचान कर ली गई है। जीत के कारक के आधार पर सहयोगी दलों के बीच कुछ सीटों पर हल्का फेरबदल हो सकता है। 2019 के लोकसभा चुनाव में आरजेडी ने 20 सीटों पर चुनाव लड़ा था। वामदल के साथ उसका गठबंधन नहीं था लेकिन फिर भी पार्टी ने एक सीट सीपीआई माले के लिए छोड़ी थी। वहीं, महागठबंधन में शामिल कांग्रेस के खाते में 9 सीटें आई थीं। अन्य सीटों पर गठबंधन के सहयोगी पार्टियां जीतनराम मांझी की हिंदुस्तान आवाम मोर्चा, मुकेश सहनी की वीआईपी और उपेंद्र कुशवाहा की रालोसपा ने चुनाव लड़ा था। पिछले लोकसभा चुनाव में बिहार में महागठबंधन की बुरी तरह हार हुई थी। लालू यादव की आरजेडी एक भी सीट जीतने में सफल नहीं हुई। गठबंधन में शामिल सिर्फ कांग्रेस ने एक सीट (किशनगंज) पर जीत दर्ज की थी। अन्य सभी 39 सीटों पर बीजेपी-जेडीयू के एनडीए ने जीत हासिल की थी। नीतीश उस वक्त

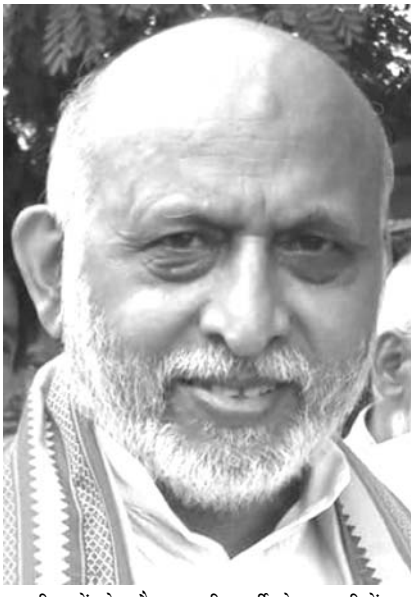

एनडीए में थे और उनकी पार्टी ने 17 सीटों पर चुनाव लड़ा था और 16 पर विजयी हुई। भागलपुर, वाल्मीकि नगर, जहानाबाद, सुपौल, मधेपुरा, गोपालंग, कटिहार, बांका, नालंदा, सीवान, काराकाट, मुंगेर, झंझारपुर, पूर्णिया, सीतामढ़ी और गया सीट जेडीयू के पास है। संजय झा और के सी त्यागी ने साफ किया है कि इन सीटों पर जेडीयू उम्मीदवार ही चुनाव लड़ेंगे। कांग्रेस को 2019 में एकमात्र किशनगंज सीट पर जीत मिली थी, जहां से मोहम्मद जावेद सांसद हैं। लोकसभा में आरजेडी का एक भी सदस्य नहीं है। ऐसे में सीटिंग गेटिंग फार्मूला से बिहार की 40 सीटों में 17 की स्थिति साफ हो गई तो शेष बची 23 सीटों में मुख्य रूप से कांग्रेस, राजद और लेफ्ट के बीच सीट बंटवारा होना है। यह लालू और

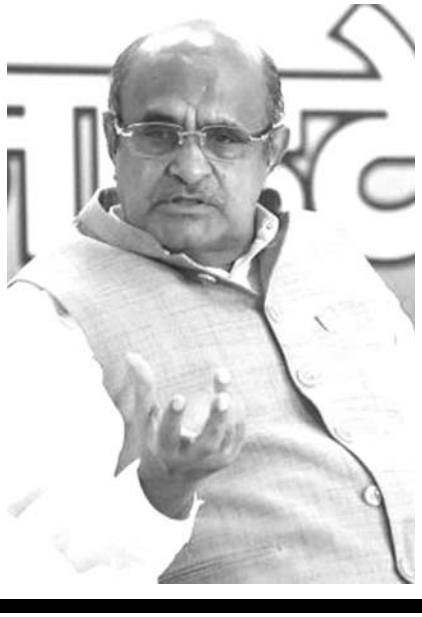

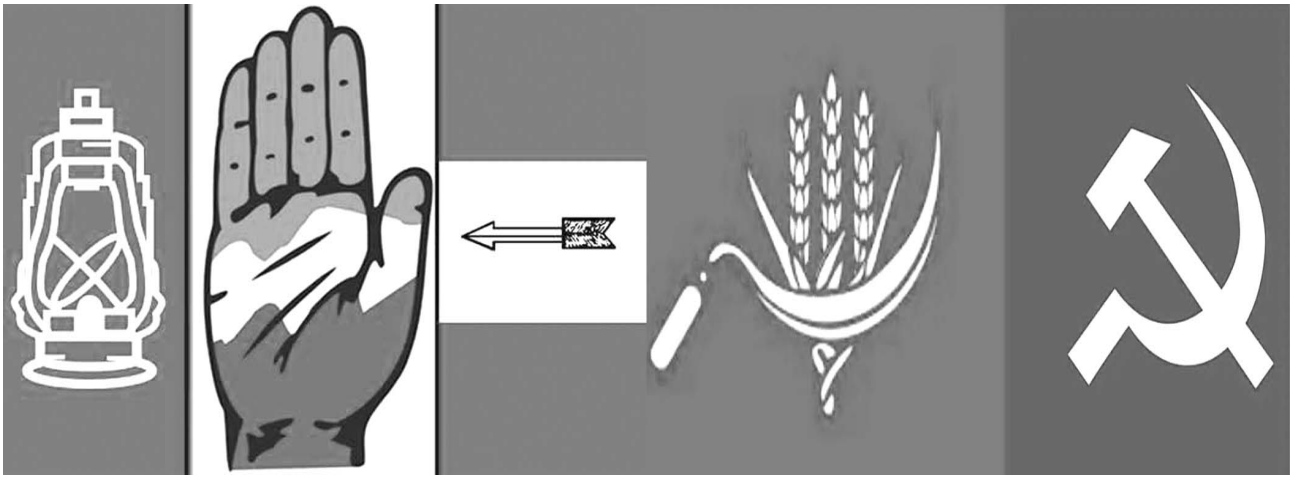

कांग्रेस दोनों के लिए किसी झटके से कम नहीं है। अब 2019 के लोकसभा चुनाव में इंडिया के घटक दलों की स्थिति को समझते हैं। जेडीयू ने जिन 16 सीटों पर जीत दर्ज की थी उनमें 8 पर नीतीश की पार्टी ने आरजेडी को हराया था और 5 सीट पर कांग्रेस को मात दी थी। कुल 13 सीटों पर नीतीश ने लालू और कांग्रेस को हराया। किशनगंज की सीट पर कांग्रेस ने जेडीयू को हराकर जीत दर्ज की। कांग्रेस और आरजेडी उनमें से कुछ सीटें चाहती हैं जहां वे हार गए। संजय झा के बयान से साफ हो गया है कि जिन 16 सीट पर उनके सांसद हैं, वो सीटें पार्टी नहीं छोड़ेगी। जदयू की 2 सीटों पर जीतन राम मांझी की पार्टी हम और उपेंद्र कुशवाहा की रालोसपा दूसरे नंबर पर थीं। अब दोनों एनडीए में चले गए हैं तो वहां कोई संकट नहीं है। लेकिन बाकी सीटों पर खींचतान हो सकती है।

बहरहाल, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली जनता दल-यूनाइटेड (जेडीयू) ने बिहार में 16 सीटों से कम पर चुनाव नहीं लड़ने के अपने रुख को लगभग स्वीकार कर लिया है, जो स्पष्ट संकेत है कि गठबंधन सहयोगियों में एक-दूसरे के साथ मतभेद हैं और हर कोई अंतिम वार्ता में बढ़त हासिल करने की कोशिश कर रहा है। यह स्पष्ट संकेत है कि नीतीश कुमार बिहार में राजद के साथ कड़ी सौदेबाजी के लिए तैयार हैं। जदयू नेता हमेशा नीतीश कुमार को गठबंधन का संयोजक और विपक्षी दल इंडिया ब्लॉक का पीएम चेहरा बनाने की बात उठाते रहते हैं। संजय झा ने कहा कि मैं स्पष्ट करना चाहता हूं कि पार्टी कांग्रेस और वाम दलों के साथ बातचीत नहीं करेगी। नीतीश कुमार ने कहा कि कांग्रेस और वाम दल राजद के साथ अपनी सीटें तय करेंगे और फिर हम उनके साथ अंतिम फॉर्मूले पर चर्चा करेंगे। झा ने कहा कि जदयू कम नहीं बल्कि अधिक सीटें जीतेगी। जदयू का कड़ा रुख राजद और इंडिया ब्लॉक के अन्य गठबंधन सहयोगियों के लिए मुश्किल बना देगा, क्योंकि बिहार में 40 लोकसभा सीटें हैं और अगर जदयू एक या दो सीटों के लिए अधिक सौदेबाजी करता है, तो वह राजद, कांग्रेस, सीपीआई, सीपीएम और सीपीआई-एमएल के लिए केवल 22 से 23 सीटें छोड़ता है। यदि जदयू 16 या अधिक सीटों पर चुनाव लड़ेगा, तो राजद को भी उतनी ही सीटों पर चुनाव लड़ना होगा ताकि यह दावा किया जा सके कि बिहार में उसकी राजनीतिक स्थिति जदयू के समान है। अब समझना होगा कि जदयू की मुख्य सौदेबाजी की ताकत बिहार में उसकी स्थिति है। नीतीश कुमार

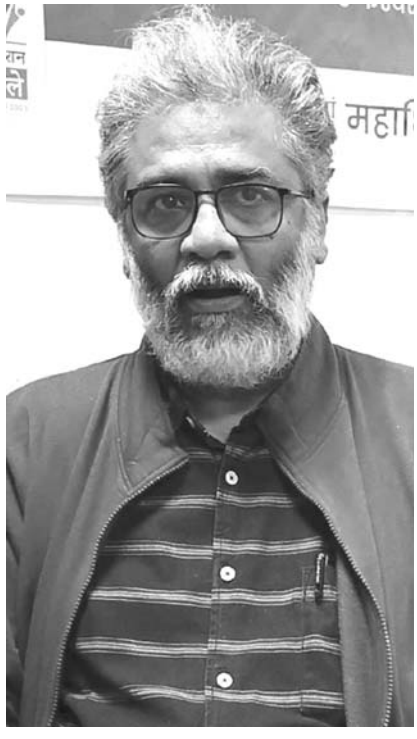

या जदयू का कोई अन्य नेता भले ही सार्वजनिक मंच पर इस बारे में न बोले लेकिन भाजपा के नेतृत्व वाले राजग के साथ जाने का विकल्प हमेशा मौजूद है। पिछले दिनों नई दिल्ली में राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति की बैठक के दौरान तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष ललन सिंह ने पद से इस्तीफा दे दिया था और नीतीश कुमार को राष्ट्रीय अध्यक्ष चुना गया था। उस मौके पर भी नीतीश कुमार ने बीजेपी या प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के खिलाफ कोई कड़ा बयान नहीं दिया। भाजपा के प्रति नरम रुख नीतीश कुमार को गठबंधन सहयोगियों के साथ कड़ी सौदेबाजी करने का बेहतर मौका देता है क्योंकि अगर नीतीश कुमार फिर से अपने पलटीमार कार्यक्रम को क्रियान्वित करते हैं तो इंडिया ब्लॉक के पास लोकसभा चुनाव जीतने का कोई मौका नहीं होगा। अगस्त 2022 में नीतीश कुमार के एनडीए से अलग होने के बाद, उन्होंने और जेडीयू के अन्य नेताओं ने हमेशा कहा कि नरेंद्र मोदी सरकार को 272 के बहुमत के आंकड़े से नीचे लाने के लिए उन्हें एनडीए की केवल 40 सीटें कम करने की जरूरत है। आम चुनाव में नरेंद्र मोदी और भाजपा को चुनौती देने के लिए इंडिया ब्लॉक के लिए यह महत्वपूर्ण है। जेडीयू की मंशा को जेडीयू एमएलसी नीरज कुमार के बयान से भी समझा जा सकता है, जिन्होंने कहा था कि उनकी पार्टी साझेदारों की छाती पर बैठकर राजनीति करेगी। हालांकि, उन्होंने स्पष्ट किया कि गठबंधन के सभी सहयोगियों के साथ उनके संबंध अच्छे हैं। नीरज कुमार ने कहा था कि जेडीयू सिर्फ 45 विधायकों की पार्टी है। फिर भी बिहार की राजनीति हमारी पार्टी के इर्द-गिर्द घूमती है और यह हमारे राजनीतिक दिमाग और चतुराई के कारण ही हो रहा है। कोई भी हमारे खिलाफ साजिश नहीं रचेगा। वे हमारी राजनीति की शैली

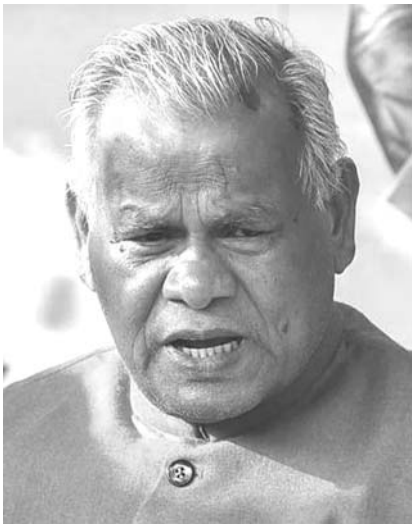

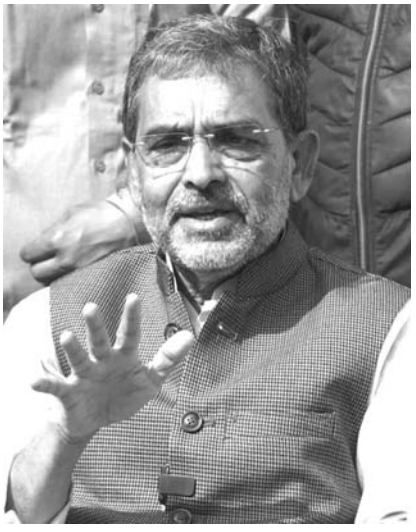

को जानते हैं। विपक्षी गठबंधन की शुरुआत बिहार से हुई और हमारी एक ही महत्वाकांक्षा है कि लोकसभा चुनाव में भाजपा को हराया जाए।

हालांकि लोकसभा चुनाव करीब है और विपक्षी गठबंधन में सीट शेयरिंग की कवायद भी अब रफ्तार पकड़ती नजर आ रही है। दिल्ली में मंथन का दौर चल रहा है और नजरें इसी बात पर टिकी हैं कि बिहार जैसे राज्यों में सीटों की गुत्थी कैसे सुलझेगी? अलग-अलग राज्यों में लोकसभा सीटों को लेकर कांग्रेस के अपने दावे हैं। बिहार में कांग्रेस ने जिन सीटों पर दावा किया है, उसे देखते हुए अब यह कहा जा रहा है कि सीट शेयरिंग की गुत्थी लालू यादव और नीतीश कुमार की सहमति के बगैर सुलझती नहीं दिख रही। बिहार में लोकसभा सीटों के बंटवारे को लेकर दिल्ली में कांग्रेस और आरजेडी नेताओं की पहली बैठक हुई थी। इस बैठक में आरजेडी की तरफ से सांसद मनोज झा शामिल हुए थे। मनोज झा की मुकुल वासनिक के आवास पर कांग्रेस नेताओं के साथ सीट शेयरिंग को लेकर बातचीत हुई थी। इस बैठक के बाद मनोज झा ने इशारों में संकेत दिए थे कि बातचीत सार्थक रही लेकिन अब कांग्रेस से सूत्रों के मुताबिक पार्टी ने बिहार की 40 लोकसभा सीटों में से 10 सीटों पर चुनाव लड़ने के लिए दावा किया है। सूत्रों के मुताबिक कांग्रेस ने उन 10 लोकसभा सीटों की लिस्ट भी आरजेडी को सौंपी है। कहा जा रहा है कि आरजेडी अब इसे लेकर जेडीयू से बातचीत करेगी। सूत्रों के मुताबिक कांग्रेस ने जिन 10 लोकसभा सीटों पर दावा किया है, उनमें किशनगंज और कटिहार के साथ ही सासाराम, सुपौल, पूर्णिया, समस्तीपुर सीट शामिल है। कांग्रेस ने औरंगाबाद, मधुबनी, नवादा और बेतिया लोकसभा सीट पर भी दावा किया है। इनमें से कुछ सीटों पर जबरदस्त पेच है। कटिहार लोकसभा सीट पर आरजेडी और जेडीयू, इंडिया गठबंधन के दोनों बड़े घटक दल भी दावा कर रहे हैं। फिलहाल, यह सीट जेडीयू के पास है। नवादा, मधुबनी और औरंगाबाद सीट पर भी कमोबेश यही हालात हैं। बेतिया सीट पर भी कांग्रेस के दावे को आरजेडी और जेडीयू कबूल करेंगे? इसे लेकर संशय है। बहरहाल, कांग्रेस की तरफ से जिन लोकसभा सीटों पर दावेदारी पेश की गई है, उनकी लिस्ट अब आरजेडी सहयोगी जेडीयू के साथ साझा करेगी। जेडीयू-आरजेडी आपस में बातचीत के साथ-साथ वाम दलों से भी कांग्रेस के दावे वाली सीटों को लेकर बातचीत करेंगे। हालांकि जेडीयू पहले ही यह स्पष्ट कर चुकी है कि हम सीट शेयरिंग को लेकर कांग्रेस के साथ सीधी बातचती नहीं करेंगे। यानी बिहार में आरजेडी को ही कांग्रेस और लेफ्ट पार्टियों के साथ-साथ जेडीयू से भी बातचीत करनी होगी। अब ऐसे में जब जेडीयू की प्राथमिकता अपनी 16 सीटिंग सीटें पाना है तो वहीं आरजेडी भी 17 सीटों पर दावा कर रही है। किन्तु कांग्रेस ने भी 10 सीटों पर दावा कर दिया है। वही लेफ्ट पार्टियां भी आधा दर्जन सीटें मांग रही हैं। ऐसे में 40 सीटें कैसे बंटेंगी? यह लालू यादव, नीतीश कुमार और कांग्रेस नेतृत्व के लिए भी बड़ी चुनौती होगी।

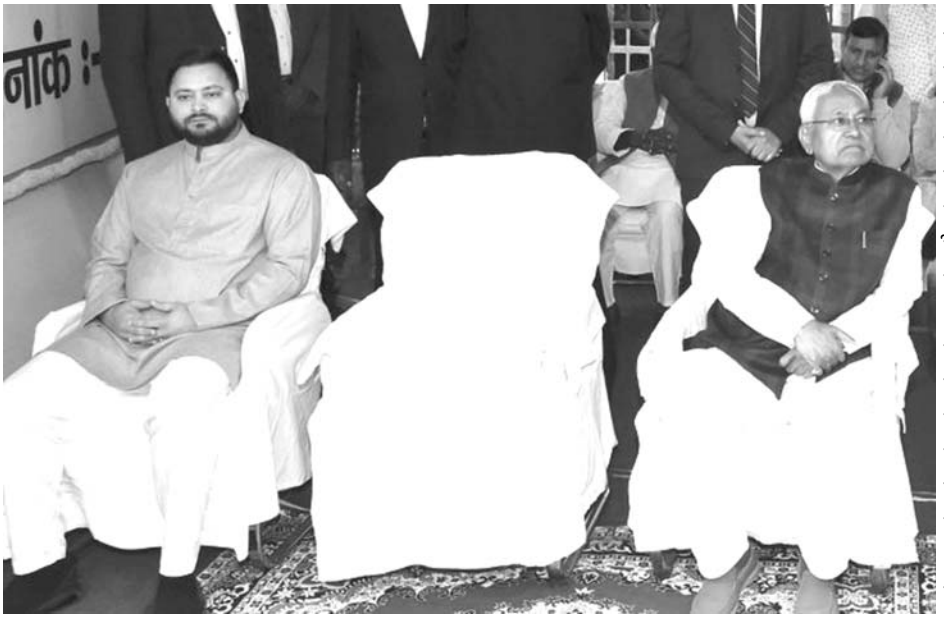

बताते चले कि इंडिया गठबंधन में

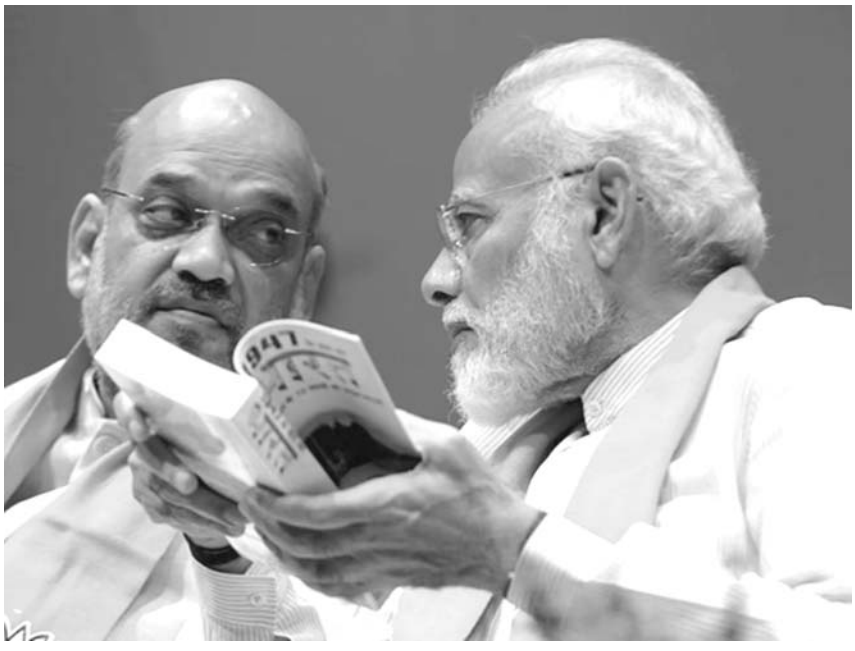

बैठक दर बैठक के बावजूद सीट शेयरिंग को लेकर तस्वीर खबर लिखे जाने तक साफ नहीं हो सकी है। दिल्ली और पंजाब में सत्ताधारी आम आदमी पार्टी के साथ सीट शेयरिंग कैसे होगी? इसे लेकर चर्चा का बाजार गर्म था ही कि अब बिहार को लेकर बहस छिड़ गई थी। कांग्रेस ने बिहार की 40 लोकसभा सीटों में से 10 पर दावा कर दिया है। सूबे में दो बड़ी पार्टियां राष्ट्रीय जनता दल और जनता दल यूनाइटेड भी इंडिया गठबंधन में शामिल हैं। ऐसे में सवाल ये भी उठने लगे हैं कि बिहार में कांग्रेस 10 सीटें आखिर किस आधार पर मांग रही है? दरअसल, इंडिया गठबंधन की दिल्ली बैठक में सीट शेयरिंग को लेकर 31 दिसंबर की डेडलाइन निर्धारित की गई थी। बैठक में कांग्रेस की ओर से यह भी कहा गया था कि सीट शेयरिंग को लेकर राज्य स्तर पर बातचीत की जाएगी। अगर राज्य स्तर पर किसी कारणवश ऐसा नहीं हो पाता है, तब ये मसला दिल्ली में सुलझाया जाएगा। सीट शेयरिंग को लेकर निर्धारित डेडलाइन करीब आ रही है और कांग्रेस एक्शन में है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेताओं ने दिल्ली में बिहार के नेताओं के साथ बैठक कर इस पर चर्चा की। बैठक के बाद लोकसभा सीटों पर दावेदारी से जुड़े सवाल पर बिहार कांग्रेस अध्यक्ष अखिलेश प्रताप सिंह ने कहा कि हम पिछली बार 9 सीटों पर चुनाव लड़े थे तब गठबंधन में जेडीयू नहीं थी। इस बार एक-दो सीटें कम-ज्यादा हो सकती हैं। बिहार कांग्रेस अध्यक्ष के इस बयान के बाद सवाल ये भी उठ रहे हैं कि कांग्रेस की 9 सीटों पर दावेदारी का आधार क्या है? कांग्रेस ने अब 10 सीटों पर दावा किया है तो सवाल इसके आधार को लेकर भी उठ रहे हैं। कांग्रेस पिछले चुनाव में नौ सीटों पर चुनाव लड़ी थी और यही उसके दावे का एकमात्र आधार है। न तो लोकसभा और विधानसभा चुनाव में कांग्रेस का प्रदर्शन बेहतर रहा और ना ही पार्टी की पकड़ ही सूबे की सियासत पर पहले जैसी रही। कांग्रेस को कितनी सीटें मिलती हैं, ये आने वाला समय ही बताएगा लेकिन इसे लेकर सवाल उठने लगे हैं। इन सवालों की वजह 2020 के विधानसभा चुनाव और 2019 के लोकसभा चुनाव में पार्टी का प्रदर्शन है। 2020 के बिहार चुनाव में कांग्रेस ने 70 सीटों पर उम्मीदवार उतारे थे। पार्टी 9.6 फीसदी वोट शेयर के साथ 19 सीटें जीत सकी थी जबकि 44 सीटों पर पार्टी के उम्मीदवार दूसरे स्थान पर रहे थे। दूसरी तरफ, आरजेडी ने 144 सीटों पर उम्मीदवार उतारे थे।

आरजेडी 75 सीटें जीतकर सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी थी। 2019 के लोकसभा चुनाव की बात करें तो कांग्रेस ने 9 सीटों पर उम्मीदवार उतारे थे लेकिन पार्टी 7.9 फीसदी वोट शेयर के साथ एक सीट ही जीत पाई थी, तब जेडीयू, बीजेपी के साथ एनडीए में शामिल थी। दोनों ही पार्टियों ने 17-17 सीटों पर उम्मीदवार उतारे थे। बीजेपी ने सभी 17 और जेडीयू 17 में से 16 सीटें जीती थीं। जेडीयू इस बार कांग्रेस और आरजेडी के साथ इंडिया गठबंधन में शामिल है। ऐसे में 6 पार्टियों वाले गठबंधन में 40 सीटों का बंटवारा कैसे होगा? कौन बड़ा दिल दिखाएगा? ये सवाल भी उठ रहे हैं। आरजेडी विधानसभा में सबसे बड़ी पार्टी है तो जेडीयू के पास बिहार से दूसरे गठबंधन सहयोगियों की तुलना में कहीं अधिक लोकसभा सीटें। दोनों के पास मजबूत आधार है। ऐसे में क्या त्याग कांग्रेस को ही करना पड़ेगा? हालांकि बिहार कैबिनेट के विस्तार पर कांग्रेस लगातार कांग्रेस के और मंत्री बनाये जाने की मांग करती रही है किन्तु नीतीश कुमार बार-बार कांग्रेस की बातों पर गौर नहीं फरमाया। बिहार में सीट बंटवारे को लेकर कहा यह भी जा रहा है कि जेडीयू-आरजेडी, दोनों ही पार्टियां 17-17 सीटों पर चुनाव लड़ सकती हैं। कांग्रेस को 4 और लेफ्ट के खाते में दो सीटें जा सकती हैं। अब सवाल यह भी उठ रहा है कि क्या कांग्रेस चार सीट का ऑफर मानेगी? कांग्रेस के शीर्ष से लेकर प्रदेश नेतृत्व तक, नेताओं की नरमी इसी तरफ इशारा माना जा रहा है कि पार्टी भी ये त्याग के लिए तैयार है। इसे इस तरह भी समझा जा सकता है कि बिहार कांग्रेस के

अध्यक्ष सीटों के सवाल पर पिछले चुनाव में नौ सीटों पर चुनाव लड़ने का जिक्र तो कर रहे हैं, लेकिन साथ ही ये भी जोड़ रहे हैं कि एक-दो सीटें कम अधिक होने से अंतर नहीं पड़ेगा। उनके बयानों से ये प्रतीत होता है कि अगर 10 सीटे नहीं भी मिली तो हम चार भी नहीं लेंगे, उससे अधिक पर हमारी दावेदारी होगी!

बहरहाल, कांग्रेस ने दावा किया कि बिहार में लोकसभा की सीटों पर पार्टी को सम्मानजनक हिस्सा नहीं मिलने की स्थिति में न केवल कांग्रेस बल्कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार सहित पूरे 'महागठबंधन' पर असर पड़ेगा। बिहार प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अखिलेश प्रसाद सिंह ने यह बयान तब दिया जब उनसे मीडिया के एक वर्ग में चल रही अटकलों के बारे में यह पूछा गया कि पार्टी को आगामी आम चुनावों में 40 लोकसभा सीटों में से कांग्रेस को महज चार सीटों की पेशकश की जाने वाली है। अखिलेश सिंह ने कहा कि अगर कांग्रेस केवल चार सीटों पर चुनाव लड़ती है तो जेडीयू सहित पूरे महागठबंधन को नुकसान होगा। हालांकि हम यह नहीं कह रहे हैं कि हमें 10 ही दी जाए क्योंकि 2019 में हम उतने पर लड़े थे। मीडिया के एक वर्ग में यह बात सामने आई है कि जेडीयू अपने लिए 17 सीटें चाहता है, जितनी उसने पांच साल पहले लड़ी थी और इनमें से उसे एक को छोड़कर बाकी सभी सीटों पर जीत हासिल हुई थी। जेडीयू नेता संजय झा ने कहा, हमारे पास 16 सीटें हैं। इन पर दावे या किसी भ्रम का सवाल नहीं उठना चाहिए। कांग्रेस की जो भी मांग हो, उसे बताना चाहिए। राजद के लिए भी यही बात है। हम सीट बंटवारे पर अंतिम चर्चा के लिए राजद के साथ बैठकर चर्चा करेंगे। वही जेडीयू नेता के इस बयान के पीछे का आशय साफ है कि महागठबंधन में शामिल मुख्यमंत्री की पार्टी (जेडीयू) सबसे एक नई पार्टी थी, जो दो साल से भी कम समय पहले बीजेपी का साथ छोड़कर महगठबंधन में शामिल हो गई थी, ऐसे में आरजेडी सबसे बड़ा घटक दल है। इसी तरह का एक बयान कुछ समय पहले सीपीआई (एमएल) लिबरेशन के महासचिव दीपांकर भट्टाचार्य ने दिया था, जिन्होंने कहा था कि उनकी पार्टी जितनी सीटें चाहती है इसकी जानकारी राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव को दे दी गई है जो अन्य कनिष्ठ सहयोगियों से बातचीत करेंगे। किन्तु अब तक किसी भी राजद नेता ने यह संकेत नहीं दिया है कि पार्टी कितनी सीटों पर चुनाव लड़ना चाहती है और लालू प्रसाद यादव के बेटे तेजस्वी यादव ने इस पर सहयोगी जेडीयू के साथ किसी भी तरह के मतभेद होने से इनकार किया है। हालांकि महागठबंधन के नेताओं का मानना है कि राजद, जो विधानसभा में संख्यात्मक रूप से जेडीयू से कहीं बेहतर है, लोकसभा सीटों में बड़ी हिस्सेदारी चाहेगी। हालांकि, 2019 के आम चुनावों में पार्टी के निराशाजनक प्रदर्शन के कारण इसकी सौदेबाजी की ताकत कमजोर हुई है क्योंकि तब पार्टी एक भी सीट नहीं जीत सकी थी। जेडीयू तब भाजपा के नेतृत्व वाले एनडीए में शामिल था। एनडीए ने तब 40 में से 39 सीटें जीती थीं, जबकि कांग्रेस ने किशनगंज सीट हासिल की थी, और वह गठबंधन का एकमात्र घटक दल था जो चुनाव में एक भी सीट नहीं मिलने की शर्मिंदगी से बच गया था। हालांकि, महागठबंधन के सूत्रों का मानना है कि इसकी संभावना नहीं है कि राजद जेडीयू से कम हिस्सेदारी के लिए सहमत होगा, वो भी तब जब नीतीश कुमार ने संकेत दिया है कि अगले विधानसभा चुनाव में तेजस्वी यादव ही गठबंधन का नेतृत्व करेंगे। जेडीयू और राजद दोनों द्वारा 17-17 सीटों पर चुनाव लड़ने का निर्णय लेने की स्थिति में, कांग्रेस, सीपीआई (एमएल) एल, सीपीआई और सीपीआई (एम) को शेष छह सीटों पर समायोजित करना होगा।

बिडम्बना है कि देश में बीजेपी के खिलाफ विपक्षी दलों को एकजुट की सबसे पहले पहल करने वाले बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार अब इंडिया गठबंधन बनने के बाद भी सबसे पहले, आगे-आगे और अकेले भी चलने को बेताब दिख रहे हैं। गठबंधन में सीटों का बंटवारा होने से पहले ही नीतीश कुमार न केवल बिहार से बाहर अपने उम्मीदवार की घोषणा करने लगे हैं, बल्कि अकेले-अकेले अपने प्रदेश और उसके बाहर भी रैलियों का ऐलान करने लगे हैं। एक कहावत है कि 'राह दिखाए सो आगे चले' और ऐसा ही कर कर रहे हैं बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, जिन्होंने देश में विपक्षी एकजुटता की ना सिर्फ राह दिखाई, बल्कि राह बनाई भी और वह अब आगे आगे भी चल रहे हैं, लेकिन फिलहाल अकेले। नीतीश कुमार कई बार कह चुके हैं कि इंडिया गठबंधन में सीटों के तालमेल और चुनावी तैयारी में बहुत विलंब हो रहा है और इस विलंब को देखते हुए इंडिया गठबंधन में शायद एक दबाव बनाने के लिए भी नीतीश कुमार ने सीट बंटवारे के पहले ही अरुणाचल प्रदेश की एक सीट से अपने उम्मीदवार का ऐलान कर दिया और अब नीतीश कुमार अपनी रैलियों का भी ऐलान करने लगे हैं। बता दें कि 21 जनवरी को नीतीश कुमार झारखंड के रामगढ़ में रैली करेंगे। 24 जनवरी को पटना में और फरवरी के पहले सप्ताह बनारस या इसके आसपास एक रैली की भी तैयारी हो चुकी है। नीतीश कुमार कुछ समय पहले तक अपने ही दल की अंदरूनी राजनीति में फंसे रहे, लेकिन अपनी पार्टी का पेंच सुलझाने के बाद नीतीश कुमार पूरी तरह से चुनावी मोड में आ चुके हैं। पार्टी की कमान संभालते ही नीतीश कुमार ने अरुणाचल प्रदेश की एक सीट से अपना उम्मीदवार की घोषणा कर दी और अगले ही दिन अपनी रैलियों का ऐलान करना भी शुरू कर दिया। इन रैलियों में इंडिया गठबंधन के बाकी दलों की कौन पूछे जदयू ने अपने सत्ता सहयोगी राजद को भी अपने साथ रखना उचित नहीं समझा है। कांग्रेस के साथ तो बिहार में ही सीटों को लेकर सबसे बड़ा पेंच फंसा है। हालांकि यह सभी रेलियां पूर्व में भी घोषित होकर रद्द हो चुकी हैं, क्योंकि बैठक में यह तय हुआ कि गठबंधन के सभी दल मिलकर देश भर में रैलियां करेंगे, लेकिन विलंब के कारण ही नीतीश कुमार न सिर्फ अपने उम्मीदवार का ऐलान कर रहे हैं, बल्कि अपनी खुद की अकेले-अकेले रैलियां भी शुरू करने जा रहे हैं। बता दें कि इंडिया गठबंधन के गठन में पहल करने वाले नीतीश कुमार यह आशा कर रहे थे कि उन्हें संयोजक बनाया जाएगा। जदयू के नेताओं ने उन्हें पीएम पद का उम्मीदवार बनाने तक की मांग की थी, लेकिन बंगाल की सीएम ममता बनर्जी ने उनकी आशाओं पर पानी फेर दिया और कांग्रेस के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को पीएम बनाने का प्रस्ताव दे डाला। इन सभी से नीतीश कुमार इंडिया गठबंधन से नाराज दिख रहे हैं और अब उनकी नाराजगी दिखने लगी है। ऐसे में इंडिया गठबंधन के निर्माता रहे नीतीश कुमार नाराजगीवश जब अलग राह पर चलने को तैयार हैं तो फिर इंडिया गठबंधन लोकसभा चुनाव से पूर्व कही तास के पत्तों की तरह विखर न जाये। इससे शायद कांग्रेस को बहुत ज्यादा फर्क न पड़े किन्तु बिहार में जदयू के साथ राजद की जुगलबंदी का सबसे बड़ा प्रभाव उस बात पर पड़ेगा जब अगले मुख्यमंत्री के तौरपर तेजस्वी यादव को प्रोजेक्ट करने की जो चर्चा होगी और कही नीतीश कुमार इस पर पानी न फेर दें। केवल सच ने पहले ही लिखा था कि बिहार की राजनीति के चाणक्य नीतीश हैं और इनकी कुटनीति को समझ पाना असंभव है। बिहार की राजनीति में नीतीश सत्ता के इर्द-गिर्द ही नजर आयेंगे, चाहे एनडीए हो या फिर इंडिया गठबंधन! ●

नीतीश की लालसा कॉन्वेनर या पीएम!

● **अमित कुमार**

मशहूर उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद ने एक बहुत ही सटीक बात कही है कि **''सुख भोग की लालसा आत्म-सम्मान का सर्वनाश कर देती है''** और आज इसका जीता जागता उदाहरण बिहार सीएम विकास पुरूष, सुशासन बाबू नीतीश कुमार हैं। विदित हो कि जब वर्ष 2005 में लालू-राबड़ी सरकार को उखाड़ फेंकने में नीतीश कुमार कामयाब हुए तब पुरानी सरकार द्वारा बिगड़े बिहार को सुधारने में अगर कहे कि 80 फिसदी का काम नीतीश कुमार द्वारा किया गया, तो यह गलत नहीं होगा। एक शिक्षा विभाग को छोड़कर महत्वपूर्ण विधि-व्यवस्था पर लगाम लगाने में सफलता देखी गई। किन्तु ''लालसा'' सत्ता में बने रहने और सीएम कुर्सी के मोह ने वक्त बीतते उनके आत्म-सम्मान का सर्वनाश कर दिया। कुर्सी पर बने रहने के लिए बार-बार आरजेडी और भाजपा में पलटी मारी गई। हालात ये हो गये कि वर्षों तक सुशासन बाबू का टैग लिये नीतीश कुमार ''पलटू राम'' से जाने जाने लगे। यह आत्म-सम्मान का सर्वनाश ही तो है। बहरहाल, पुनः ''लालसा'' पर चर्चा करेंगे। इस बार सीएम नीतीश की ''लालसा'' सीएम से पीएम बनने की है। हालांकि कई दफा उन्होंने ये बयान जरूर दिया कि मुझे किसी चीज की लालसा नहीं है और मुझे पीएम नहीं बनना है किन्तु नीतीश के मन की बात उनके पार्टी के नेता और आवाम भलीभांति समझ रही है। खैर, अकेले मोदी को सत्ता से हटाने की मुहिम को नीतीश कुमार ने अपने आत्म-सम्मान से समझौता करते हुए सारे विपक्षी पार्टियों को एक मंच पर लाकर एक अलायंस तैयार किया। जिसका नामकरण हुआ ''इंडिया''। इस अलायंस को तैयार करने के लिए नीतीश कुमार को ही सूत्रधार माना जाता है और श्रेय भी इन्ही को मिलना चाहिए। इस नाते इस अलायंस का संयोजक बनने की लालसा लिए नीतीश कुमार को झटका बीते 19 दिसम्बर को इंडिया अलायंस की बैठक में लगा, जब संयोजक पद के उम्मीदवार के लिए पश्चिम बंगाल की दीदी यानि सीएम ममता बनर्जी और आम आदमी पार्टी सुप्रिमो सह दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल ने नीतीश कुमार को दरकिनार करते हुए कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे का नाम लिया। केवल सच ने अपने दिसम्बर 2023 अंक में इसपर विस्तार से चर्चा की थी। हालांकि संयोजक अभी कोई भी बनाया नहीं गया किन्तु बीते दिनो खरगे का संयोजक वाले बयान ने राजनीतिक गलियारे में शर्द मौसम के बीच सरगर्मी तेज कर दी। खरगे ने संयोजक पद पर सीएम नीतीश के नाम की चर्चा पर कह दिया कि ये सवाल अमिताभ बच्चन के 'कौन बनेगा करोड़पति' वाले शो जैसा है। खरगे ने संयोजक पद की चर्चा अगली मीटिंग में होने की बात कही और साथ ही यह भी कहा कि फिलहाल कांग्रेस राहुल गांधी की यात्रा को लेकर व्यस्त है। बहुत जल्द इंडिया अलायंस की अगली मीटिंग होगी जिसमें सभी बातें साफ हो जायेगी। दिगर बात है कि कांग्रेस के इस रूखे रैवैये से बेचैन नीतीश कुमार ने भी जदयू की रैली की घोषणा की है। अब कुल मिलाकर कहे तो आगामी लोकसभा चुनाव में महज तीन महीने ही बचे हैं और अभी तक इंडिया अलायंस में संयोजक नहीं बनाया गया और ना ही शीट शेयरिंग पर फाइनल मुहर लगे हैं। ऐसे में चिंतित नीतीश कुमार के बीच यह असमंजस है कि वह अलायंस से अलग होकर पुनः एनडीए के साथ जाये या ना जाये। क्योंकि इंडिया अलायंस का कोई भविष्य नहीं दिख रहा। इसी बीच राजनीतिक पार्टियों के नेता बयानों के वार से अपनी-अपनी बाते रख रहे हैं।

बताते चले कि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के जेडीयू का अध्यक्ष बनने के बाद अब उन्हें इंडिया गठबंधन का संयोजक बनाने की मांग तेज हो गई है। जेडीयू के एमएलसी संजय सिंह ने विपक्षी दलों के गठबंधन में नीतीश कुमार को सबसे काबिल नेता बताया है। साथ ही कहा कि उन्हें संयोजक बनाया जाए। इसके बाद इंडिया गठबंधन के अन्य दलों के नेताओं में खलबली मची है। चर्चा है कि अगली बैठक में नीतीश को संयोजक बनाए जाने पर चर्चा हो सकती है। पटना स्थित सीएम आवास पर जेडीयू के कई नेता मुख्यमंत्री

नीतीश कुमार से मिलने पहुंचे थे। उन्होंने सीएम को जेडीयू का अध्यक्ष बनने की बधाई और नववर्ष की शुभकामनाएं दीं। सीएम नीतीश से मिलने पहुंचे जेडीयू के एमएलसी संजय सिंह ने मीडिया से बातचीत में कहा कि एनडीए ने कभी से लोकसभा चुनाव को लेकर तैयारी शुरू कर दी है। हम लोग हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं। अब कुछ खेल नहीं हो सकता है। उन्होंने कहा कि नीतीश कुमार को बहुत पहले गठबंधन का संयोजक बना देना चाहिए था। पूरे गठबंधन में वे सबसे काबिल नेता हैं। सीएम नीतीश कांग्रेस की ओर से सीट शेयरिंग में हो रही देरी पर भी नाराजगी जता चुके हैं। बता दें कि पिछले महीने दिल्ली में हुई इंडिया गठबंधन की बैठक में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को चेहरा बनाए जाने की चर्चा के बाद से नीतीश की नाराजगी की अटकलें लगाई जा रही हैं। जेडीयू नेता केसी त्यागी ने ममता बनर्जी और अरविंद केजरीवाल के इस प्रस्ताव पर बाद में सवाल भी उठाए थे। अब नीतीश खुद अपनी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष बन गए हैं। कुछ मीडिया रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि उनकी नाराजगी से अन्य विपक्षी पार्टियों में खलबली मची है। गठबंधन की अगली बैठक में उन्हें संयोजक या कोई और पद दिए जाने पर विचार हो सकता है। वही नीतीश कुमार को संयोजक बनाए जाने की चर्चा को लेकर आरजेडी की ओर से रिएक्शन सामने आया है। आरजेडी सांसद मनोज झा ने नीतीश कुमार को संयोजक बनाए जाने की बात पर कहा कि उन्हें ऐसी कोई जानकारी नहीं है, वे भी खबरों में भी सुन रहे हैं। अभी तक कुछ ठोस नहीं है। वहीं आरजेडी के विधायक भाई वीरेंद्र ने कहा कि हम तो चाहते हैं कि बिहार को हर पद मिले। ये तो गठबंधन के शीर्ष नेतृत्व तय करेगा। नीतीश कुमार को संयोजक बनना ही चाहिए। वही आरजेडी नेता तेजस्वी यादव ने कहा है कि नीतीश कुमार बहुत अनुभवी नेता हैं और उन्हें इंडिया गठबंधन का संयोजक बनाने का प्रस्ताव आता है तो अच्छा रहेगा। नीतीश कुमार काफी वरिष्ठ नेता हैं। अगर ऐसा प्रस्ताव आता है, तो यह बिहार के लिए बहुत अच्छा होगा। नीतीश कुमार के संयोजक बनने के सवाल पर बिहार सरकार में वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्री तेज प्रताप यादव ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को 'इंडिया' का संयोजक बनाए जाने की चर्चाओं पर कहा है कि किसी को बनने से कोई रोक नहीं सकता है। जिसमें क्षमता होती है, उसे कोई आगे बढ़ने से रोक नहीं सकता है। आने वाले समय में इंडिया गठबंधन का झंडा पूरे देश में लहराएगा। उन्होंने कहा कि हम सभी को सपोर्ट करते हैं। किसी का पैर खींचकर राजनीति नहीं करते हैं। वही वरिष्ठ नेता केसी त्यागी ने नीतीश को इंडिया गठबंधन का निर्माता बताया। साथ ही कहा कि वह गठबंधन के संयोजक पद से कहीं ऊपर हैं। आगामी लोकसभा चुनाव से पहले केसी त्यागी के इस बयान के सियासी गलियारों में कई मायने निकाले जा रहे हैं। जेडीयू नेता केसी त्यागी ने मीडिया से बातचीत में कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार इंडिया गठबंधन के निर्माता हैं। वह इंडिया गठबंधन के संयोजक पद से कहीं ऊपर हैं। उन्होंने यह भी कहा कि लोकसभा चुनाव को लेकर सीट बंटवारे पर आम सहमति बन रही है। इस पर भी सहमति बनी है कि अपनी सीटिंग सीटों पर वही पार्टी चुनाव लड़ेगी। यानी कि अभी जिस सीट पर जिस विपक्षी दल का एमपी है, 2024 में भी वहां पर वही पार्टी चुनाव लड़ेगी। केसी त्यागी ने साफ कर दिया है कि नीतीश कुमार को इंडिया गठबंधन के संयोजक पद की लालसा नहीं है। बता दें कि जेडीयू कार्यकर्ता लगातार नीतीश को पीएम कैंडिडेट के रूप में प्रोजेक्ट कर रहे हैं। पिछले महीने दिल्ली में हुई बैठक में जब ममता बनर्जी और अरविंद केजरीवाल ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को गठबंधन का चेहरा बनाने का प्रस्ताव दिया तो

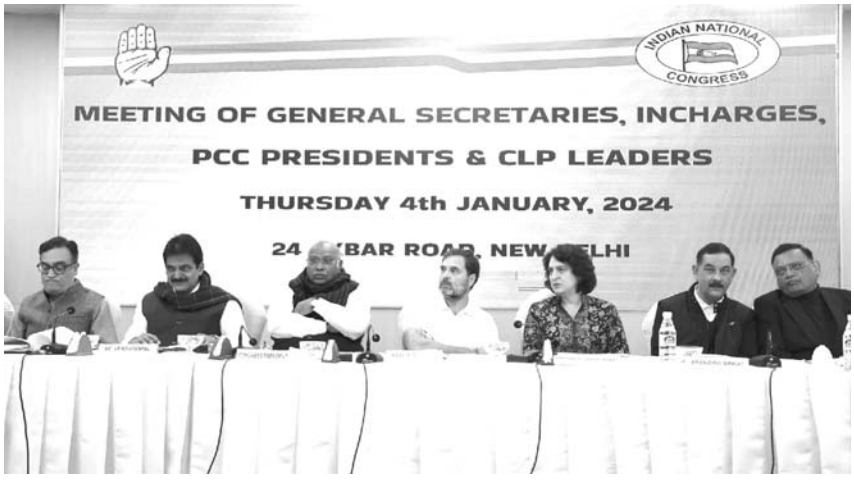

जेडीयू ने आपत्ति जताई थी। हालांकि, नीतीश कुमार अक्सर अपने बयानों में कहते रहते हैं कि उन्हें किसी भी पद की लालसा नहीं है। वे बस विपक्ष को एकजुट करके मोदी सरकार को सत्ता से उखाड़ना चाहते हैं। केसी त्यागी ने पिछले दिनों यह भी स्पष्ट किया था कि इंडिया गठबंध न के नेताओं से नीतीश की कोई नाराजगी नहीं है। दूसरी तरफ बिहार सरकार में वित्त व वाणिज्यकर मंत्री विजय कुमार चौधरी ने कहा है कि इंडिया गठबंधन की बुनियाद ही मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने रखी है। यह पूरे देश ने देखा भी है। ऐसे में गठबंधन में संयोजक बनाने या न बनाने का मामला कोई मायने नहीं रखता है। इस समय सबसे अहम तो गठबंधन में सीटों का राज्यवार बंटवारा है। पटना में पत्रकारों के साथ बातचीत के दौरान विजय चौधरी ने कहा कि इंडिया गठबंधन नीतीश कुमार की पहल और प्रयास का ही परिणाम है। उन्हें किसी पद की लालसा नहीं है। विजय चौधरी ने कहा कि पटना में गठबंधन के साथी दलों की पहली बैठक में ही नीतीश कुमार ने कहा था कि सबसे पहले राज्यवार सीटों का बंटवारा हो जाना चाहिए। इसका फार्मूला तय होने से हमारी स्थिति काफी मजबूत होगी। मंत्री ने कहा कि राजनीतिक रूप से यह बात बेहद अहम है कि किसी गठबंधन में सीटों का बंटवारा जितना जल्द होगा, वह उतनी ही सशक्त और आगे होगा। ऐसे में हमें सीटों पर सबसे पहले निर्णय लेना चाहिए। इससे इंडिया गठबंधन सीधे- सीधे लाभ की स्थिति में होगा।

हालांकि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को इंडिया ब्लॉक का संयोजक बनाए जाने की बात लगभग तय मानी जा रही है। लेकिन, लगता है कि जेडीयू सुप्रीमो की नजर अब उससे भी ज्यादा पर चली गई है, जिसकी

मांग उनकी पार्टी के नेताओं की ओर से काफी समय से हो रही है। ललन सिंह को हटाकर नीतीश के जेडीयू अध्यक्ष बनते ही पार्टी ने जो तेवर दिखाने शुरू किए हैं, उसने कांग्रेस को हैरानी में डाल दिया है और इंडिया ब्लॉक में खलबली मचने लगी है। जेडीयू ने न सिर्फ अरुणाचल वेस्ट लोकसभा सीट से प्रत्याशी के नाम का एकतरफा एलान किया है, बल्कि बिहार में भी बिना सीट तय हुए उसने अपनी पार्टी के नेताओं को मौखिक टिकट बांटना शुरू कर दिया है। विपक्षी दलों के इंडिया ब्लॉक में बिहार को लेकर सीटों के बंटवारे पर बातचीत अभी ठीक से शुरू भी नहीं हो पायी है, ऐसे में नीतीश के पैंतरे देखकर लग रहा है कि वह विपक्षी गठबंधन की अगली बैठक से पहले दबाव की रणनीति में जुट गए हैं। जब नीतीश को विपक्षी दल इतनी अहम जिम्मेदारी देने की सोच रहे हैं, तब जेडीयू बिना सीटों का बंटवारा किए जिस तरह से एकतरफा प्रत्याशियों के नाम तय कर रहा है, उससे लगता है कि नीतीश कुमार के मन में कुछ बड़ा चल रहा है। क्योंकि, अरुणाचल

प्रदेश की दोनों लोकसभा सीटों पर कांग्रेस 2019 के चुनावों में दूसरे नंबर पर रही थी। जबकि, जेडीयू ने अरुणाचल वेस्ट सीट पर पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष रूही तागुंग का नाम प्रत्याशी के रूप में घोषित कर दिया। इसके बारे में जेडीयू के राष्ट्रीय महासचिव और पूर्वोत्तर में पार्टी के इंचार्ज अफाक अहमद खान ने कहा, यह घोषणा जेडीयू अध्यक्ष नीतीश कुमार के निर्देश के अनुसार की जा रही है। स्वभाविक तौर पर कांग्रेस नीतीश के इस फैसले से हैरान है। अरुणाचल में पार्टी के कार्यकारी अध्यक्ष बोसीराम सिरम ने टीओआई से कहा है कि अरुणाचल प्रदेश में लोकसभा की दो सीटें हैं-अरुणाचल पश्चिम और अरुणाचल पूर्व। दोनों सीटों पर कांग्रेस का एक मजबूत जनाधार है और पार्टी दोनों ही सीटों से अपने उम्मीदवार उतारने की तैयारी कर रही है। हालांकि, उन्होंने जेडीयू के फैसले पर टिप्पणी करने से इकार कर दिया। अरुणाचल वेस्ट सीट से अभी केंद्रीय मंत्री और बीजेपी नेता किरेन रिजिजू सांसद हैं और पिछली बार उन्होंने कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष नबाम तुकी को हराया था। दिगर बात है कि नीतीश के फैसले ने बिहार में भी कांग्रेस नेताओं को चिंता में डाल दिया है। क्योंकि, बिहार विधान परिषद के अध्यक्ष देवेश चंद्र ठाकुर पहले ही दावा कर चुके हैं कि जेडीयू ने उन्हें सीतामढ़ी लोकसभा सीट से टिकट देने का वादा किया है। बिहार कांग्रेस के एक वरिष्ठ नेता ने नाम नहीं बताने की शर्त पर कहा है, इंडिया ब्लॉक के एक महत्वपूर्ण सहयोगी होने के नाते जेडीयू को सीटों के बंटवारे से पहले उम्मीदवारों के नाम नहीं घोषित करने चाहिए। उन्होंने कहा कि सिर्फ अरुणाचल में ही नहीं, बल्कि बिहार में भी जेडीयू के कुछ सीनियर नेता लोकसभा चुनावों के लिए खुद को उम्मीदवार घोषित कर रहे हैं। सहयोगियों में इससे गलत

संकेत जा रहा है। तथ्य यह है कि जेडीयू के अध्यक्ष बनने के साथ नीतीश को इंडिया ब्लॉक में सीटों के बंटवारे पर बातचीत और फैसला लेने की जिम्मेदारी भी मिली हुई है। ऐसे में उन्हें पूरा पता है कि पार्टी जिस तरह से गठबंधन में बात किए बिना एकतरफा फैसले ले रही है, उससे इसकी सेहत पर क्या असर पड़ सकता है। अब नीतीश के अध्यक्ष बनने वाले दिन पार्टी के प्रमुख प्रवक्ता केसी त्यागी के बयान पर गौर कीजिए। नीतीश सार्वजनिक तौर पर यही कहते रहे हैं कि उन्हें तो किसी पद का मोह नहीं है। लेकिन, त्यागी ने उन्हें इंडिया ब्लॉक का संयोजक और इसे आगे बढ़ाने वाले विचारों का प्रधानमंत्री बताया था। त्यागी का यह बयान बहुत ही चतुराई से पार्टी के उन्हीं नेताओं के बयान का समर्थन है, जो काफी समय से नीतीश को इंडिया ब्लॉक का पीएम उम्मीदवार बनाए जाने की मांग करते आ रहे हैं।

बहरहाल, संयोजक के मुद्दे पर भाजपा नेता और राज्यसभा सदस्य सुशील कुमार मोदी ने बिहार के सीएम नीतीश कुमार और उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव पर तंज कसा है। इंडिया गठबंधन के संयोजक बनाए जाने के दावे पर उन्होंने तंज कसते हुए कहा कि पीएम पद के उम्मीदवार बनने की बात कह रहे थे, लेकिन अब संयोजक पद से संतोष करना पड़ेगा। संयोजक की कोई हैसियत नहीं होती है। उसका काम सिर्फ मुंशी भर का होता है। सुशील मोदी ने कहा कि नीतीश कुमार कुछ भी बने क्या फर्क पड़ेगा? चले थे पीएम उम्मीदवार बनने अब संयोजक से संतोष करना होगा। क्या वो ममता/सीपीएम, केजरीवाल/कांग्रेस, कांग्रेस/सीपीएम से समझौता करा पाएंगे? नीतीश कुमार कांग्रेस को ब्लैकमेल कर रहे हैं कि संयोजक बनाओ नहीं तो मैं बीजेपी के साथ चला जाऊंगा। वहीं केंद्रीय मंत्री नित्यानंद राय ने कहा कि नीतीश कुमार को संयोजक बनाए या ना बनाए, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। नीतीश कुमार का जनाधार खत्म हो चुका है। नरेंद्र मोदी के सामने कोई चेहरा ही नहीं है। बहरहाल, हिंदी फिल्म का एक फेमस गाना है रूठे रूठे पिया मनाऊं कैसे। 2024 के लोकसभा चुनाव को लेकर बिहार की राजनीति में यह गाना प्रासंगिक बताया जा रहा है। बीजेपी के कद्दावर नेता और केंद्रीय मंत्री ने इसी गाने की तर्ज पर कहा है, रूठे रूठे चचा मनाऊं कैसे? यह कहकर उन्होंने बिहार के सीएम नीतीश कुमार और डिप्टी सीएम तेजस्वी यादव के बीच पिछले दिनों हुई मुलाकात पर कटाक्ष किया है। इंडिया गठबंधन के विभिन्न दलों के बीच सीट शेयरिंग का मुद्दा गर्म है। नीतीश कुमार चाहते हैं कि जल्द से जल्द यह मसला हल हो जाए। किसके खाते में कितनी सीट जाए, इस पर

जेडीयू, आरजेडी और कांग्रेस के बीच खींचतान की खबरें भी आ रही हैं। इंडिया गठबंधन के संयोजक पद को लेकर भी कुछ क्लियर नहीं हो रहा। पिछले कई दिनों से नीतीश कुमार को संयोजक बनाए जाने की अटकलें भी सियासी गलियारे में गूंज रही हैं। विपक्षी बीजेपी का कहना है कि नीतीश कुमार इंडिया गठबंधन में कोई बड़ा पद नहीं मिलने से नाराज हैं। इन्हीं मुद्दों पर चर्चा कर नीतीश कुमार को मनाने के लिए तेजस्वी यादव सीएम आवास गए थे। गिरिराज सिंह ने इस मुलाकात पर तंज कसते हुए कहा कि संयोजक नहीं बनाए जाने से नीतीश कुमार नाराज हैं और तेजस्वी यादव उन्हें मनाने में लगे हैं। इस मुलाकात पर व्यंग्य करते हुए गिरिराज सिंह ने कहा है कि तेजस्वी यादव के मन मे इन दिनों एक गाना चल रहा है, रूठे रूठे चाचा मनाऊं कैसे। केंद्रीय मंत्री ने दावा किया कि जब तक नीतीश कुमार संयोजक नहीं बन जाते हैं तब तक रूठे रहेंगे। तेजस्वी यादव चाहे लाख मनाने की कोशिश करें लेकिन जब तक यह पद नहीं मिलेगा तब तक नीतीश कुमार मानने वाले नहीं हैं। उधर जेडीयू नेताओं ने दावा किया है कि नीतीश कुमार को किसी पद की लालसा नहीं है। जदयू प्रवक्ता नीरज कुमार ने भाजपा पर बेवजह भ्रामक प्रचार करने का आरोप लगाया है। उन्होंने कहा है कि नीतीश कुमार ने कभी इसके लिए कोई क्लेम नहीं किया। इस पद के लिए कोई एडवर्टाइजमेंट या वैकेंसी निकला है क्या?

गौरतलब हो कि इंडिया अलायंस में संयोजक पद को लेकर हो रही चर्चा के बीच मल्लिकार्जुन खरगे के बयान ने और भी तूल दे दिया है। बता दें कि अमिताभ बच्चन के चर्चित रियलिटी टीवी शो कौन बनेगा करोड़पति से बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का कनेक्शन

जुड़ गया है। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने इस कनेक्शन को जोड़ा है। खरगे के बयान से यह भी साफ हो गया है कि इंडिया गठबंधन में नीतीश कुमार को अभी संयोजक नहीं बनाया जाएगा। सभी दलों के साथ बैठक होगी उसमें तय होगा कि यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी किस नेता को दी जाए। कांग्रेस अध्यक्ष ने बैठक की तिथि भी नहीं बताई है। लोकसभा चुनाव 2024 को लेकर इंडिया गठबंधन में सीट शेयरिंग और संयोजक पद का मामला उलझता दिख रहा है। पिछले कई दिनों से यह कयास जोड़ शोर से लगाए जा रहे थे कि नीतीश कुमार इंडिया गठबंधन के संयोजक आज बने तो कल बने। लेकिन कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने इन तमाम अटकलों और कयासों पर विराम लगा दिया है। उन्होंने साफ कर दिया है कि अभी इस पर कुछ भी तय नहीं हुआ है। उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में बैठक होगी और उसमें यह तय किया जाएगा कि कौन क्या बनेगा। उन्होंने यह दावा किया कि इंडिया गठबंधन के सभी दल साथ मिलकर काम कर रहे हैं। बता दें कि दिल्ली में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में एक सवाल का जवाब देते हुए मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा कि जो प्रश्न आपने पूछा है वह कौन बनेगा करोड़पति जैसा सवाल है। जब हमारी बैठक होगी तो उसमें सुनिश्चित हो जाएगा कि किस ढंग से कौन सा पद किसको देना है। अब यह 10-15 दिनों की बात है। दूसरी बात यह कि हर आदमी को जिम्मेदारी मिले यह संभव नहीं है। यहां हर आदमी यूनाइटेडली लोकसभा चुनाव 2024 के लिए काम कर रहा है। उसमें कोई गड़बड़ नहीं है। नीतीश को संदेश देते हुए कहा कि आप चिंता मत कीजिए और हमारे साथ बने रहिए। सब ठीक होगा। इसके पहले नीतीश कुमार और उनके सिपाहसालार बार-बार यह दावा करते रहे हैं कि उन्हें कोई पद नहीं चाहिए। केसी त्यागी ने यहां तक कह दिया कि नीतीश कुमार इंडिया गठबंधन के निर्माता हैं। संयोजक का पद तो इससे बहुत छोटा है। जदयू प्रवक्ता नीरज कुमार ने बीजेपी पर आरोप लगाया कि संयोजक के नाम पर भाजपा राजनीति करती है। बार-बार वहीं से यह सवाल उठता है जबकि हम लोग इसपर चर्चा भी नहीं करते। दूसरी और नालंदा के सांसद कौशलेंद्र, विधायक गोपाल मंडल समेत कई पार्टी नेता नीतीश कुमार को संयोजक और प्रधानमंत्री पद का उम्मीदवार बताने से पीछे नहीं हटते। जबकि, भाजपा कहती है कि बिहार की राजनीति से नीतीश कुमार को केंद्र में शिफ्ट करने के लिए लालू यादव उन्हें संयोजक बनाने की कवायद कर रहे हैं ताकि उनके बेटे तेजस्वी को बिहार में मुख्यमंत्री बनने का मौका मिल सके।

बहरहाल, मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का राजनीति करने का तरीका हमेशा से अनप्रेडिक्टेबल रहा है। उनके आसपास के लोग भी दावे के साथ अनुमान नहीं लगा सकते हैं। हमेशा से आगे क्या होगा कि प्रतिक्षा में चिंतित रहना पर अपने नजदीकियों को रखते रहे हैं। यहीं राजनीति का नीतीश मॉडल है और अब तक सफल है। 2005 से अब तक बिहार की सियासत को अपने हिसाब से चला भी रहे हैं। बीजेपी और आरजेडी सबसे बड़ी पार्टी होने के बावजूद नीतीश कुमार के पीछे लाइन लगाने को मजबूर है। मगर, कांग्रेस के स्ट्रैटिजिस्ट को नीतीश की फंक्शनिंग स्टाइल पता है। शायद यही वजह है कि अब तक की इंडिया गठबंधन की मीटिंग में नीतीश को वो भाव नहीं मिला, जिसकी वो उम्मीद कर रहे थे। अगर, उनका कॉन्वेनर बनने का ख्वाब पूरा भी हो जाता है तो वो सिर्फ खानापूर्ति ही होगी क्योंकि तब तक कांग्रेस अपने हिसाब से चीजों को ढाल चुकी होगी। राजनीति के जानकार बताते हैं कि नीतीश कुमार की जो स्टाइल ऑफ फंक्शनिंग है, उसमें लोग ये उम्मीद कर रहे हैं कि कैमरे के सामने आकर बोलें कि मुझे कॉन्वेनर बना दिया जाए तो वो कभी नहीं करेंगे।

वो जब 2020 में मुख्यमंत्री बने थे, तब भी कह रहे थे कि मुझे मुख्यमंत्री बनने की कोई इच्छा नहीं थी, मुझे लोगों ने बना दिया। वो ऐसे ही चाहते हैं कि घसीटकर कॉन्वेनर की चेयर पर बैठा दिया जाए। जहां तक आरजेडी उनके सहयोगी दल की बात है तो उनकी इच्छा यही है कि नीतीश कुमार कॉन्वेनर बन जाएं। अगर, नीतीश कुमार कॉन्वेनर बनते हैं तो उनके नेता तेजस्वी यादव का बिहार में रास्ता साफ होता है। आरजेडी शुरू से ये मानती रही है कि चाहे ऑन कैमरा हो या ऑफ कैमरा हो, वो ये मानते रहे हैं कि नीतीश कुमार को देश की राजनीति में जाना चाहिए। मतलब, उनके नेता के लिए बिहार की राजनीति छोड़ दी जाए। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या नीतीश कुमार ऐसा होने देंगे? नहीं, बिल्कुल नहीं। नीतीश कुमार ऐसा बिल्कुल नहीं होने देंगे। बिहार में सीएम की कुर्सी नीतीश कुमार नहीं छोड़ेंगे। उन्हें कॉन्वेनर बनाया जाए या नहीं बनाया जाए, वो तेवर दिखाते रहेंगे। नीतीश कुमार की पॉलिटिकल स्टाइल ही है कि उनके साथ रहनेवाले लोगों को भी अनकम्फर्टेबल रखते हैं। हालांकि नीतीश कुमार के बारे में लगातार चर्चा हो रही है कि वो इंडिया में रहेंगे या एनडीए में जाएंगे। दरअसल, नीतीश कुमार के राजनीति करने के तरीके को ये सूट करता है। ये नीतीश कुमार का स्टाइल ऑफ फंक्शनिंग है। नीतीश कुमार के साथ हैं या उनके विरोधी सबको ऑन टेंटरहूक रखते हैं। ऐसे में कभी भी उनके ऊपर दांव नहीं खेल सकते कि वो आपके साथ हैं या नहीं हैं। वर्तमान में उनके सहयोगी आरजेडी उतने ही असमंजस में है, जितने कि एनडीए। ऐसे में मीडिया, पब्लिक या राजनेता, वो सारे लोग डिबेट करते रहेंगे कि वो किसकी तरफ जाएंगे। ये नीतीश कुमार के काम करने का तरीका शुरू से रहा है। दरअसल, नीतीश कुमार की राजनीति का जो मॉडल रहा है, उसमें ये सूट करता है। फिलहाल जो हालात हैं, उसमें जेडीयू के जो बड़े नेता हैं, उनमें नीतीश कुमार को कॉन्वेनर बनाने की आवाज काफी तेज हो गई है। ऐसे में सवाल उठता है क्या वो खुद से बोल रहे हैं? क्या पार्टी के तरफ से उन्हें बोलने की इजाजत है? अगर, नीतीश कुमार को कॉन्वेनर बनने की इच्छा नहीं है तो वो अब पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष हैं, इंस्ट्रक्शन दे सकते हैं। इसका सीधा मतलब है कि ये सबकुछ उनके कॉन्सेंट से हो रहा है। जेडीयू में नीतीश के बिना कुछ भी नहीं हो सकता है। अगर, जेडीयू के नेता लगातार नीतीश कुमार को इंडिया गठबंधन का संयोजक बनाने और पीएम पद के उम्मीदवार बनाने की बात हो रही है तो इसका सीधा मतलब है कि नीतीश कुमार चाहते हैं कि उनके नाम को उछाला जाए। ऐसे में ममता बनर्जी हों या अरविंद केजरीवाल, वो नीतीश कुमार के नाम को आगे नहीं आना देना चाहेंगे। उनकी अपनी राजनीति है।

गौरतलब हो कि नीतीश कुमार ने इंडिया गठबंधन का कॉन्सेप्ट इसलिए तो नहीं शुरू किया था कि देश का कल्याण हो? अपनी राजनीति के लिए अगर वो चाहते हैं कि कॉन्वेनर बनें और फिर पीएम पद का उम्मीदर बनें तो वो क्यों न करें, ये काम? मगर, नीतीश कुमार फ्रंट में आकर ये कभी नहीं करेंगे। वो दूसरे लोगों से ये काम कराएंगे। जबतक, इस पर कोई ठोस फैसला नहीं आ जाता, तब तक रोजाना का असमंजस रहेगा कि नीतीश कुमार किधर जाएंगे। ये ऐसा इसलिए होगा कि नीतीश कुमार चाहते हैं कि ये स्थिति बनी रहे। उनका यही काम करने का तरीका है। वो ऐसी स्थिति बनाकर रखते हैं। वो ऐसा हर काम करते हैं, जिससे कोई अनुमान न लगा पाए। दरअसल, नीतीश कुमार हों या फिर नरेंद्र मोदी, जो बड़े नेता हैं, वो इस तरह की स्थिति बनाकर रखते हैं ताकि आप उनके फैसले पर चौंकते रहें। लंबे समय तक राजनीति करते-करते एक पॉलिटिकल मॉडल बना लिए हैं। इसी में इनको मजा आता है। ऐसे में इनके अगले कदम का कयास लगाना मुश्किल हो जाता है। असमंजस की स्थिति बनी रहे। ऊहापोह वाले हालात दिखते रहे। हमेशा टेंडर हूक पर रहें। ये हर समय डर बना रहे कि पता नहीं क्या कर दें, किधर चले जाएं। क्या फैसला ले लें। अब तक ये मॉडल काम करता आया है। ऐसी स्थिति आगे भी बनी रहेगी। हालांकि इन सबके बीच बीजेपी के लिए मुश्किल है कि अगर कोई व्यक्ति तीन बार आपका साथ छोड़ चुका हो और चौथी बार आना चाहे तो क्या उस पर भरोसा किया जाए? ऐसे में ट्रस्ट डेफिसिट का मामला बड़ा हो जाता है। बीजेपी भी भरोसा करना नहीं चाहेगी। इस चीज को नीतीश कुमार के हिसाब से देखें तो एनडीए में वापस जाकर उन्हें वो इज्जत कभी नहीं हासिल होगी, जो इसके पहले उन्हें था। नीतीश कुमार को कुछ बड़ा बीजेपी दे दे, ऐसा नहीं लग रहा है। नीतीश कुमार फिलहाल महागठबंधन के नेता हैं। मुख्यमंत्री हैं। इंडिया गठबंधन के कॉन्वेनर बनाने की चर्चा है। नीतीश कुमार के उम्र को देखते हुए ऐसा नहीं लग रहा है कि 15-20 साल की पॉलिटिक्स प्लान कर रहे होंगे। वो फिलहाल 2024 और 2025 पर फोकस कर रहे हैं। बीजेपी की तरफ से बहुत कुछ ऐसा नहीं है कि वो चाहते हों कि नीतीश कुमार उनके तरफ आ जाएं। अमित शाह भी जब बिहार दौरे पर आए थे तो उन्होंने कहा था कि नीतीश कुमार के लिए सारे रास्ते बंद हो चुके हैं। वर्तमान स्थिति के हिसाब से अगर नीतीश कुमार एनडीए में जाते हैं तो उनको वहां क्या हासिल होगा? कम से कम इंडिया गठबंधन में कॉन्वेनर और पीएम उम्मीदवार बनाने को लेकर बयानबाजी तो हो रही है। ऐसे में जो कुछ भी संभावना नीतीश कुमार के लिए बची है, वो इंडिया गठबंधन में ही है। बहरहाल, ऐसे में सवाल उठता है कि क्या कॉन्वेनर बन जाने से प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार बन जाएंगे? ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। इसमें एक बात जरूर है कि अगर कुछ ऊंच-नीच होता है तो आगे रास्ता थोड़ा आसान हो जाएगा। आगे किसी ओहदे के लिए कंसिडर किए जा सकते हैं। जो कुछ भी जेडीयू की ओर बयानबाजी हो रही है, उसमें नीतीश कुमार की सहमति जरूर है। दरअसल, नीतीश कुमार ने जो इंडिया गठबंधन का कॉन्सेप्ट लाया था, उस समय उनकी प्लानिंग थी कि वो पूरे देश में घूमेंगे। हर सीट पर मैन टू मैन मार्किंग होगी। अपोजिशन का एक उम्मीदवार होगा। मगर, अब तक ऐसा कुछ हुआ नहीं। अगर नीतीश कुमार कॉन्वेनर बना दिए जाते हैं तो इतना जरूर होगा कि इस काम में थोड़ी तेजी आएगी। वो अगर कॉन्वेनर पोस्ट को पायलट करेंगे तो इंडिया गठबंधन का एक सेप दिखने लगेगा। फिलहाल, नीतीश कुमार पैसिव मोड में हैं। मीटिंग तो अटेंड करते हैं, मगर बहुत ऐक्टिव नहीं हैं। नीतीश कुमार अगर इंडिया गठबंधन के संयोजक बनते हैं तो उनकी ऐक्टिविटी जरूर बढ़ जाएगी।

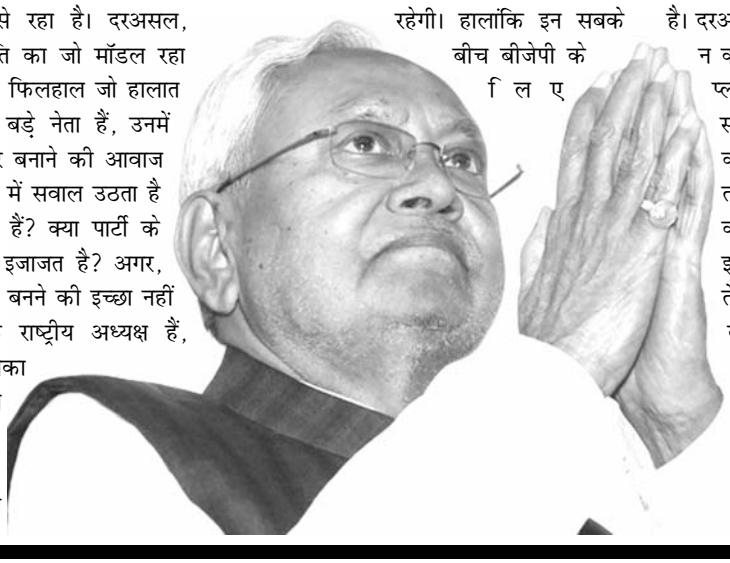

कौन लड़ेगा पीएम मोदी के खिलाफ चुनाव?

● **अमित कुमार**

बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने उन अटकलों को खारिज कर दिया कि पिछले दिल्ली में विपक्षी 'इंडिया' गठबंधन की बैठक में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे को प्रधानमंत्री पद का चेहरा बनाने का सुझाव और उन्हें गठबंधन का संयोजक नहीं बनाए जाने के कारण उन्हें ''मायूसी'' हुई और वे इसको लेकर उन्हें ''नाराजगी'' है। भाजपा के विरोध में विपक्षी दलों को एकजुट करने की पहल करने वाले जदयू नेता ने कहा, ''मुझे कोई मायूसी नहीं हुई, कोई नाराजगी नहीं हुई।'' दिवंगत प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती के अवसर पर आयोजित एक कार्यक्रम के बाद पत्रकारों से बातचीत के दौरान नीतीश ने दिल्ली और पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्रियों क्रमशः अरविंद केजरीवाल और ममता बनर्जी द्वारा खरगे के नाम प्रस्तावित किए जाने के बारे में कहा कि बैठक में एक नेता का नाम आया। मैंने शुरू में ही स्पष्ट कर दिया था कि हमारी अपनी कोई इच्छा नहीं है। सबलोग साथ मिलकर चलें यही हम चाहते हैं। फिर एक और नाम प्रस्तावित किया गया, मैंने कहा कि यह ठीक है।'' भाजपा नेतृत्व वाले राजग में जदयू नेता के विरोधियों ने इस घटनाक्रम की आलोचना करते हुए दावा किया था कि आम आदमी पार्टी प्रमुख केजरीवाल और तृणमूल कांग्रेस सुप्रीमो बनर्जी ने वास्तव में नीतीश की कथित प्रधानमंत्री पद की महत्वाकांक्षाओं को दरकिनार कर दिया है। बैठक के बाद खरगे ने जिस संवाददाता सम्मेलन को संबोधित किया उसमें कांग्रेस अध्यक्ष ने प्रधानमंत्री पद के चेहरे के मुद्दे को ठंडे बस्ते में रखने की इच्छा व्यक्त की थी और इस बात पर जोर दिया था कि इंडिया गठबंधन को पहले पर्याप्त संख्या में लोकसभा सीटें जीतने की जरूरत है। नीतीश से जनवरी तक सीट बंटवारे को अंतिम रूप देने के उनके कथित आग्रह के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि हां, मैंने कहा था कि सीट बंटवारे को जल्द से जल्द अंतिम रूप दिया जाना चाहिए। मैं पहले भी इसको लेकर अपने विचार व्यक्त कर चुका हूं। मुझे विश्वास है कि ऐसा सभी राज्यों में सही समय पर कर लिया जाएगा। राजद नेता तेजस्वी यादव ने कहा कि सीट बंटवारा सही समय पर हो जाएगा। केंद्र की मोदी सरकार पर मीडिया पर लगाम लगाने का आरोप लगा चुके नीतीश ने कहा कि आप मीडिया वालों प र नियंत्रण किसी और का है। हम आपकी इज्जत करते हैं और करते रहेंगे। आपलोग खूब आगे बढ़िए। उन्होंने दिवंगत वाजपेयी के प्रति अपने मन में अपार सम्मान की बात करते हुए कहा कि श्रद्धेय अटल जी की सरकार में हम तीन-तीन विभागों के मंत्री थे। वे मुझे बहुत मानते थे। मुझे बिहार का मुख्यमंत्री बनाने में अटल जी का बहुत बड़ा योगदान है।'' उन्होंने कहा कि उनके प्रति मेरा आदर का भाव हमेशा से रहा है और हम जब तक हैं वो जीवनभर रहेगा। जब तक श्रद्धेय अटल जी प्रधानमंत्री थे तो किसी भी धर्म के माननेवालों को किसी प्रकार की कोई दिक्कत नहीं होती थी। दिवगंत अटल बिहारी वाजपेयी की विचारधारा से संबंधित प्रश्न का जवाब देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि हमलोग जो भी अपनी बात रखते थे वे उसको स्वीकार करते थे। उनके समय में बहुत काम हुआ। हर क्षेत्र में उन्होंने मदद किया, हमने काम भी किया है।

सनद् रहे कि विपक्षी दलों के गठबंधन 'इंडिया' की चौथी बैठक में 2024 के लोकसभा चुनाव में वाराणसी से विपक्ष का एक मजबूत संयुक्त उम्मीदवार उतारने पर भी चर्चा हुई थी। बैठक में विपक्षी दल इस बात पर सहमत हुए कि चुनाव में भाजपा का मुकाबला करने के लिए कुछ अलग विचारों की जरूरत है। बैठक में 2024 के लोकसभा चुनाव में वाराणसी से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के खिलाफ विपक्ष का एक मजबूत संयुक्त उम्मीदवार खड़ा करने पर भी चर्चा हुई। उल्लेखनीय है कि 2014 के संसदीय चुनावों में, आम आदमी पार्टी के संयोजक अरविंद केजरीवाल ने वाराणसी से मोदी के खिलाफ चुनाव लड़ा था और वह 3.37 लाख वोटों के अंतर से हार गए थे। वर्ष 2019 में चर्चा थी कि कांग्रेस नेत्री प्रियंका गांधी वाड्रा वाराणसी से चुनाव लड़ सकती हैं। हालांकि, कांग्रेस ने अजय राय और समाजवादी पार्टी ने शालिनी यादव को मैदान में उतारा था। मोदी ने 60 प्रतिशत से अधिक वोट हासिल कर चुनाव जीता था।

बहरहाल, कांग्रेस नेतृत्व ने अपनी बिहार इकाई के वरिष्ठ नेताओं के साथ बैठक की, जिसमें सहयोगी दलों के साथ सीट बंटवारे को लेकर सामंजस्य बैठाने पर जोर देने के साथ ही एक कार्ययोजना के साथ आगे बढ़ने का फैसला किया गया। बैठक में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल, बिहार प्रभारी मोहन प्रकाश, प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अखिलेश प्रसाद सिंह और कई अन्य नेता मौजूद थे। बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी के नेता 29 दिसंबर को पार्टी की राष्ट्रीय गठबंधन समिति की बैठक में अपनी बात रखेंगे और उसके आधार पर यह समिति राष्ट्रीय जनता दल और जनता दल (यूनाइटेड) के साथ सीट बंटवारे को लेकर बातचीत करेगी। कांग्रेस मुख्यालय में हुई इस बैठक में बिहार में संगठन की स्थिति, चुनाव की तैयारियों और सीट बंटवारे को लेकर चर्चा हुई। बैठक के बाद खरगे ने एक्स पर पोस्ट किया कि लोकसभा चुनाव संबंधी तैयारियों को लेकर कांग्रेस की बिहार इकाई के नेताओं से चर्चा हुई। बिहार में महागठबंधन सरकार मजबूती से बिहार के लोगों की आशा के अनुरूप काम कर रही है। उन्होंने कहा कि हम सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्ध हैं। बिहार की तरक्की, खुशहाली और अमन-चैन के लिए कांग्रेस का एक-एक कार्यकर्ता पूरी मेहनत से जन-जन तक जाने और बिहार के लोगों की आकांक्षाओं के अनुरूप खरा उतरने को तत्पर है। वही बैठक के बाद अखिलेश प्रसाद सिंह ने कहा कि पहले से स्पष्ट है कि कांग्रेस बिहार में गठबंधन में चुनाव लड़ेगी। एक कार्ययोजना बनाई गई है, उसे विस्तृत रूप देकर आगे बढ़ेंगे। 29 दिसंबर को गठबंधन समिति की बैठक में सीटों को लेकर प्रदेश कांग्रेस कमेटी की तरफ से अपनी बात रखी जाएगी। खरगे और राहुल गांधी ने विस्तार से बात सुनी। उन्होंने कुछ बातें बताई, हम इस पर रूपरेखा तैयार करके आगे बढ़ेंगे। यह पूछे जाने पर कांग्रेस कितनी सीट पर चुनाव लड़ेगी? तो उन्होंने कहा कि पिछली बार हम राष्ट्रीय जनता दल और वाम दलों के साथ मिलकर चुनाव लड़े थे। इस बार जनता दल (यू) भी है। 1-2 सीट आगे-पीछे होने में कोई तकलीफ नहीं है। हम सामंजस्य बनाकर लड़ेंगे और भाजपा को हराएंगे। जब गठबंधन होता है तो रुख में लचीलापन दिखाना होता है। हम गठबंधन समिति के समक्ष अपनी बात रखेंगे और वह दूसरे दलों के साथ बातचीत करेगी। कांग्रेस ने गत् 19 दिसंबर को 5 सदस्यीय राष्ट्रीय गठबंधन समिति का गठन किया था। यह समिति सीट बंटवारे को लेकर सहयोगी दलों के साथ बातचीत करेगी। इस समिति में राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, पार्टी के वरिष्ठ नेता मुकुल वासनिक, सलमान खुर्शीद और मोहन प्रकाश शामिल हैं। कांग्रेस 2019 के विधानसभा चुनाव में बिहार की 9 लोकसभा सीटों पर चुनाव लड़ी थी और उसे सिर्फ किशनगंज लोकसभा क्षेत्र में सफलता मिली थी। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली बिहार की महागठबंधन की सरकार में कांग्रेस साझेदार है। महागठबंधन के सभी घटक राष्ट्रीय जनता दल, जनता दल (यूनाइटेड), कांग्रेस और वाम दल राष्ट्रीय स्तर पर बने विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' का हिस्सा हैं।●

राममय हुआ संसार

● संजय सिन्हा

22 जनवरी को अयोध्या में श्रीराम मंदिर उद्घाटन एवं मुत्ती प्राण प्रतिष्ठा को पुरे संसार में कमोबेश मनाया जा रहा है, भारत में वे दक्षिणी – पश्चिमी भारत हो या पूर्वी – उत्तरी भारत समूचे देश में वातावरण राममय सा हो गया है, कभी तमिलनाडु से अयोध्या के लिए कुछ उपहार भेजा जा रहा है , तो कभी नेपाल से, कभी पटना से, तो कभी मध्यप्रदेश से, देश आजादी के बाद पहली बार भारत की जनता अपने स्वार्थ अपने जातिवाद एवं क्षेत्रवाद से उपर उठकर प्रभु श्रीराम के नाम पर सभी सनातनी एक हो गयें हैं, देश में आम चुनाव बिल्कुल दस्तक देने वाली है अगले महीने देश में आम चुनाव का तिथि के साथ बिगुल बजने को तैयार है, विपक्ष समझ नहीं पा रहा कि क्या किया जायें? मंदिर का गुणगुना करें या कोई बेमेल तर्क देकर लोगों को धार्मिक होने से अलग करें?

जो राजनीतिक दल मंदिर के विरोध में दर्जनों वकील बैठा रखा था,वो भी अब मंदिर उद्घाटन में आमंत्रण पत्र मांग रहे थें, पर जब वैसे राजनीतिक दलों को आमंत्रण पत्र भेज दिया गया तो अब बहाना कर रहे हैं कि, मैं मंदिर नहीं जाता, मंदिर जाने से क्या रोजगार मिल जायेगी? मंहगाई कम हो जायेगी इत्यादि, लेकिन देश की जनता को राम मन्दिर अयोध्या का खुमारी अपने चरम पर है, चरम पर हो भी क्यों नहीं? आज सभी के पास कम से कम नौ-दस हजार की मोबाईल जो हाथ में है साथ साथ दुनिया के सबसे कम दर पर नेट की सुविधा, अगर बातें करें तो मंहगाई दर आज अपने निचले स्तर पर हैं, मंहगाई दर निचले स्तर के अलावा सभी देशों से कम इसी का नतीजा है कि आज समुचा देश राम भक्ति में सराबोर है,

काशी-मथुरा भी अब हम हिन्दुओं को मिलेगा : आलोक कुमार

विश्व हिन्दू परिषद् के अंतर्राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष व अधिवक्ता श्री आलोक कुमार के साथ दिल्ली से संजय सिन्हा के साथ साक्षात्कार के प्रमुख अंश

★ विहिप के लिए अयोध्या के बाद अगला लक्ष्य कौन सा होगा काशी या मथुरा?

ऐसा है कि विश्व हिन्दू परिषद् सन् 1964 में शुरू हुआ और रामजन्मभूमि 1984 में शुरू हुआ मेरा सिर्फ मंदिर ही लक्ष्य नहीं है परन्तु काशी और मथुरा हम हिन्दू समाज को मिलेगा ऐसा हम सभी को उम्मीद है, ये हमारा संकल्प भी है, इस काम के लिए हमारे मुकदमा न्यायालय में चल रहे हैं मैं एक वकील के नाते भी इस मुकदमे का अध्ययन किया हैं और हमें विश्वास है कि ये मुकदमा हम जीत पायेगें इसलिए इस दोनों विषय पर आन्दोलन करने की जरूरत नहीं है, हमने समाज को कहा है कि हम इसे संवैधानिक तरीके से इसको लेगें और समय की प्रतिक्षा करने का प्रयत्न करें हमें समाज को भी अच्छा बनाना है, जैसे प्रभु श्रीराम और केवट की मित्रता एवं श्रीराम का शवरी के यहाँ जाना ये सब समरसता का भाव एवं जाति का अहंकार खत्म हो जातियों का बड़ा छोटा का अहंकार खत्म हो ये ऐजेंडा हमारे टांप पर है, महिलाओं को सभी अधिकार मिले समाज से निशाचर आतंकवाद खत्म हो , सभी को रोटी कपड़ा मकान उपलब्ध हो, धर्म के आनुसार सभी जीवन जियें इन व्यापक उदेश्यों के लिए विश्व हिन्दू परिषद् की स्थापना हुई है और हम ये करते रहेगें.

★ संघ प्रमुख श्री मोहन भागवत कहते हैं कि हमने सिर्फ अयोध्या की राम मन्दिर के लिए लड़ाई लड़ी है अब आगे कोई मंदिरों के लिए नहीं लड़नी हैं?

ये उन्होंने ठीक कहा है न? ये उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के लिए कहा है, लेकिन विश्व हिन्दू परिषद् ने तो तीनों के लिए संकल्प किया हुआ है, हाँ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संगठन के नाते राम जन्मभूमि के आन्दोलन में आया था हमसब ने मिलकर उस लड़ाई को लड़ा है और सफल किया है अब आगे की लड़ाई सभी हिन्दू समाज को मिल कर लड़नी हैं, और विश्व हिन्दू परिषद् उसमें अपनी भुमिका अदा करेगा.

★ देश के गरीब राम भक्तों के लिए विश्व हिन्दू परिषद् अयोध्या दर्शन के लिए कुछ सुविधा प्रदान करेगी?

इस 22 जनवरी के कार्यक्रम में वैसे भी दश लोग आयेगें जिन्होंने अपनी आर्थिक स्थिति कम होने के बाबजूद अपने पास से सौ रूपये दिये थे और वे मजदूर व उनके परिवार भी आयेगें जिसने इस मंदिर बनाने में पसीने बहाये है और राम जी तो है ही निर्धन के धन राजाराम अयोध्या में ऐसे लोगों के लिए बहुत कम खर्च में ठहरने और खाने के लिए व्यवस्था एवं निशुल्क खाने की व्यवस्था भी हिन्दू समाज कर रहीं हैं और राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र एवं विश्व हिन्दू परिषद् ये बराबर सहभागी हो रहें हैं और हमें लगता है कि ये सभी सफलता प्राप्त होगा.

★ 22 जनवरी या 5 अगस्त को क्या हिन्दू दिवस या राम पूर्नजागरण दिवस का नाम क्यों नहीं देना चाहिए?

सुझाव अच्छा है इस पर विचार करेगें, आपकी बातों को अपने साथियों के साथ रखुगां , सब मिलकर विचार रखेंगे.

एक कहावत है कि भुखे पेट 'हरि नहीं भजाते' इसलिए कोई कुछ भी कहें? बातों में सच्चाई है कि देश की आधे जनता फ्री में राशन भी ले रही है, शौचालय, मकान भी व पांच लाख का स्वास्थ्य बीमा भी,देश की जनता प्रधानमंत्री मोदी को बहुत आशा के नजरों से देखती है, गरीब पिछड़े वर्ग की जनता तो साफ कहती है कि अगर मोदी योगी से हमें भला न हुई तो हमें भगवान भी नहीं बचायेंगे? ऐसा नहीं है कि वर्तमान सरकार से मुसलमान खुश नहीं है, वे जानते हैं कि मोदी सरकार सभी को बराबर नजरों से देखती है, हाँ इस सरकार में मुस्लिमों के लिए तुस्टीकरण की व्यवस्था नहीं है, परंतु वो हिन्दू हो या कोई अन्य धर्म के लोगों सभी का भविष्य आगे उज्वल है.

☞ **देश में चार लाख मंदिर सजाये जायेगें** :- दिल्ली प्रदेश विश्व हिन्दू परिषद् के संगठन महामंत्री सुबोध चन्द्रा ने बताया कि दिल्ली में लगभग साढ़े चार हजार मंदिर है इसमें करीब डेढ़ हजार मंदिरों को सजाई जायेगी, टीवी एलईडी लगाये जायेगें, हरेक मंदिर को दीपों से दिवाली मनाई जायेगी जगह-जगह शोभायात्रा निकाले जायेगें उम्मीद है कि 22 जनवरी को स्कूलों में छुट्टियां रहेगी, हिन्दू अब जात पात से उपर उठ गया है अब सभी पहले हिन्दू है फिर जात गोत्र ये देश के लिए खुशखबरी माना जा सकता है।●

झूठे मुकदमे में बर्बाद होता जीवन

● **त्रिलोकी नाथ प्रसाद**

पिछले दिनों नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो से सूचना के अधिकार के तहत पूछे गए सवाल के जवाब के सवालों से एक खबर आई। इससे पता चला कि एक साल में करीब सवा लाख मुकदमे झूठ पाए गए। दूसरों को फंसाने के लिए कराए गए थे, जिन लोगों पर किए गए थे उनके खिलाफ आरोपों की पुष्टि नहीं हो सकी यानी कि झूठे थे, कहीं रास्ते से विवाद में दुष्कर्म का मुकदमा दर्ज कराया गया, कहीं विरोधी पर दबाव बनाने के लिए छेड़खानी का मुकदमा तो कहीं दुश्मनी निकालने के लिए मारपीट का मुकदमा दर्ज कराया गया। इन मुकदमों में फंसने के बाद लोगों को का जीवन तबाह हो गया। कुछ लोग बदला लेने के लिए कुछ भी करते हैं और वह किसी एक आदमी पर नहीं बल्कि पूरे परिवार पर आरोप लगा देते हैं। आखिर कानून में इतनी खामियां क्यों है कि कोई किसी के भी खिलाफ झूठा मुकदमा दर्ज कर देता है जिसके खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया जाता है। उसके पास यदि इतने संसाधन ना हो कि वह कानूनी लड़ाई लड़ सके तो उसे सजा भी मिल जा सकती है। ऐसा नहीं है कि पुलिस को सच्चाई मालूम नहीं होती। पुलिस भले ही कहती हैं कि हमारे हाथ बंधे रहते हैं सच जानते हुए भी वह कुछ नहीं कर सकती। परंतु यह बे बुनियाद है। पुलिस को निर्दोष साबित करने में एक दिन लगती है परंतु न्यायालय को निर्दोष साबित करने में 10 /20 30 साल लग सकती हैं। फतुहा थाना में एक वीरेंद्र कुमार मेघावी थाना प्रभारी थे। उनके द्वारा एक भी निर्दोष जेल नहीं गया। गंभीर मामला में एफ आई आर करने के पहले एक पदाधिकारी पदाधिकारी भेजकर सर्वेक्षण करा लेते, उसके बाद ही एफआईआर दर्ज करते। फतुहा मे में एक थे नसीम अहमद, उनके बारे बताया जाता है कि काउंटर केस करवाना उनका दिनचर्या बन गया था। पुलिस का औकात उस समय निकल जाती है यदि कोई व्यक्ति झूठ मुकदमा मंत्री, सांसद या विधायक पर करना चाहे। डॉ लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल ने कहा की कानून लोगों की मदद करने के लिए है,न कि उनमें भय पैदा करने के लिए, निर्दोष को जेल भेजने के लिए। कानून बना हुआ है कि निर्दोष को जेल भेजने वालों को भी जेल भेजना होगा, परंतु यह करेगा कौन ? डॉ लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल ने कहा कि हर प्रदेश में आदित्यनाथ योगी जैसे मुख्यमंत्री हो जाए या हर एक जिला में पटना के पूर्व एस पी किशोर कुणाल जैसे एसपी हो तो अपने को सुरक्षित कर सकेगी।●

बाबर के वंशज बोले, अयोध्या में बने भव्य राम मंदिर

● **गौतम कुमार सिंह, अधिवक्ता**

तुलसीदास जी राम राज्य का सार प्रस्तुत कर रहे हैं :-

बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग, चलहिं सदा पावहिं सुखहि नहि भय सोक न रोग!

जब प्रत्येक व्यक्ति अपने वर्ण एवं आश्रम के धर्म के अनुसार जीवन व्यतीत करता है अथवा जब प्रत्येक व्यक्ति जीवन के विभिन्न चरणों के अनुसार अपने निहित कार्य उसी प्रकार करता है जैसा कि वेदों में परिभाषित है, जब कहीं भी किसी भी प्रकार का भय ना हो, दुख ना हो तथा रोग ना हो, वही राम राज्य है।

अयोध्या के भव्य राम मंदिर में रामलला के विराजित होने की तैयारियां की जा रही हैं. राम मंदिर के इतिहास में बाबर से लेकर राम मंदिर तक लगभग 500 सालों का समय लगा. 9 नवंबर 2019 का दिन सुनहरे अक्षरों में दर्ज किया गया. जब सुप्रीम कोर्ट की पांच जजों वाली बेंच ने ऐतिहासिक फैसला सुनाया और विवादित जमीन हिंदू पक्ष को मिली. भारतीय पौराणिक कथाओं में, रघुवंशियों को राजाओं के वंशज माना जाता है, जिनकी वंशावली सूर्य या सूर्य भगवान से मानी जाती है। ऐसा माना जाता है कि रघुवंशियों का वंश वृक्ष राजा मांधाता से शुरू हुआ था, जो पूरी पृथ्वी पर विजय प्राप्त करने के लिए जाने जाते थे, और आगे चलकर हरिश्चंद्र, सागर, भागीरथ, दिलीप, रघु, अज, दशरथ और राम (भगवान राम) तक पहुंचे। भगवान राम का वंश वृक्ष ब्रह्मा से शुरू होता है जिन्होंने पीढ़ियों को आगे बढ़ाते हुए 10 प्रजापतियों (राजाओं) को बनाया। राम का जन्म दशरथ से हुआ जो वंशावली में 66वें स्थान पर थे। ऐसा माना जाता है कि उनके बाद उनके जुड़वां बेटे - लव और कुश आते हैं। पौराणिक कथाओं के अनुसार, लव ने दक्षिण कोसल पर शासन किया था जबकि कुश ने अयोध्या सहित उत्तरी कोसल पर शासन किया था।

यहां राजस्थान और यूपी के सात लोग हैं जिन्होंने राम की वंशावली पर दावा किया है। अयोध्या से सटे पूरा बाजार ब्लॉक व आसपास के 105 गांव के' सूर्यवंशी क्षत्रिय परिवार 500 साल बाद फिर एक बार पगड़ी बांधेंगे और चमड़े के जूते पहनेंगे। कारण-राम मंदिर निर्माण का इनका संकल्प पूरा हुआ'। इन गांवों में घर-घर जाकर और सार्वजनिक सभाओं में क्षत्रियों को पगड़ियां बांटी जा रही हैं। सूर्यवंशी समाज के पूर्वजों ने मंदिर पर हमले के बाद इस बात की शपथ ली थी कि जब तक मंदिर फिर से नहीं बन जाता, वे सिर पर पगड़ी नही बांधेगें, छाते से सिर नहीं ढकेंगे और चमड़े के जूते नही पहनेंगे। सूर्यवंशी क्षत्रिय अयोध्या के अलावा पड़ोसी बस्ती जिले के 105 गांव में रहते हैं। ये सभी ठाकुर परिवार खुद को भगवान राम का वंशज मानते हैं। सुप्रीम कोर्ट के राम मंदिर निर्माण के आदेश के बाद अयोध्या के इन गांवों में गजब का उत्साह है। अयोध्या के भारती कथा मंदिर की महंत ओमश्री भारती का कहना है, 'सूर्यवंशियों ने सिर न ढंकने का जो संकल्प लिया था, उसका पालन करते हुए शादी में अलग तरीके से मौरी सिर पर रखते रहे हैं, जिसमें सिर खुला रहता है। पूर्वजों ने जब जूते और चप्पल न पहनने का संकल्प लिया था, तब चमड़े के बने होते थे। लिहाजा खड़ाऊ पहनने लगे। फिर बिना चमड़े वाले जूते-चप्पल आए तो उन्हें भी पहनने लगे, लेकिन चमड़े के जूते कभी नहीं पहने गए। सूर्यवंशी क्षत्रियों के परिवार कोर्ट के फैसले से खुश हैं और उन्हें भव्य मंदिर बनने का इंतजार है और ऐसा होना भी चाहिए क्योंकि राम आपके चरित्र और जीवन के मार्ग को प्रशस्त करती है।

कवि जयराज ने लिखा था- "जन्मभूमि उद्धार होय ता दिन बड़ी भाग। छाता पग पनही नहीं और न बांधहिं पाग।'' राम नाम लेने से आपके अंदर ऊर्जा का विस्तार होता है जो आपके हुनर और जीत का मार्ग प्रशस्त करती है।

☞ **सिया राम :-** 'रामायण को हिंदू धर्म' का सबसे पवित्र ग्रंथ माना जाता है। इसके सभी पात्रों का अलग महत्व है। प्रभु श्री राम को हम भगवान के रूप में पूजते हैं और माता सीता को भी उनके साथ हमेशा पूजा जाता है। माता सीता प्रभु श्री राम की अर्धांगिनी थीं और महाराज जनक की पुत्री थीं, उन्हें लक्ष्मी जी का अवतार भी माना जाता है और ऐसा कहा जाता है कि जब विष्णु जी के अवतार के रूप में भगवान श्री राम ने धरती पर अवतार लिया तब माता सीता ने लक्ष्मी के अवतार के रूप में जन्म लिया। अयोध्या की बाबरी मस्जिद में नवंबर 1858 में घुसकर कुछ समय तक वहां पूजा-पाठ और हवन करने वाले 'निहंग सिखों के वंशज अब राम मंदिर के उद्घाटन के मौके पर लंगर चलाएंगे'. निहंग सिखों की आठवीं पीढ़ी के बाबा हरजीत सिंह रसूलपुर ने कहा कि वह अयोध्या में लंगर लगाकर भगवान राम के प्रति अपने पूर्वजों की भक्ति को आगे बढ़ाएंगे. दस्तावेजों के मुताबिक नवंबर 1858 में निहंग बाबा फकीर सिंह खालसा के नेतृत्व में 25 निहंग सिख अयोध्या में बाबरी मस्जिद में घुस गए थे और उसमें हवन किया था. 'गागा भट्ट ब्राह्मण', जिनके वंशज कराएंगे रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा बाबर के वंशज बोले, अयोध्या में बने भव्य राम मंदिर।

बिनु सत्संग विवेक न होई।
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई
सठ सुधरहिं सत्संगति पाई।
पारस परस कुघात सुहाई!!!

अर्थ : तुलसीदास जी कहते हैं सत्संग के बिना विवेक नहीं होता अर्थात अच्छा बुरा समझने की क्षमता विकसित नहीं होती है राम की कृपा अच्छी संगति की प्राप्ति नहीं होती है सत्संगति से ही हमें अच्छे ज्ञान की प्राप्ति होती है दुष्ट प्रकृति के लोग भी सत्संगति वैसे ही सुधर जाते हैं जैसे पारस के स्पर्श से लोहा सुंदर सोना बन जाता है।

सिया राम सबके हैं।।।
जय सिया राम

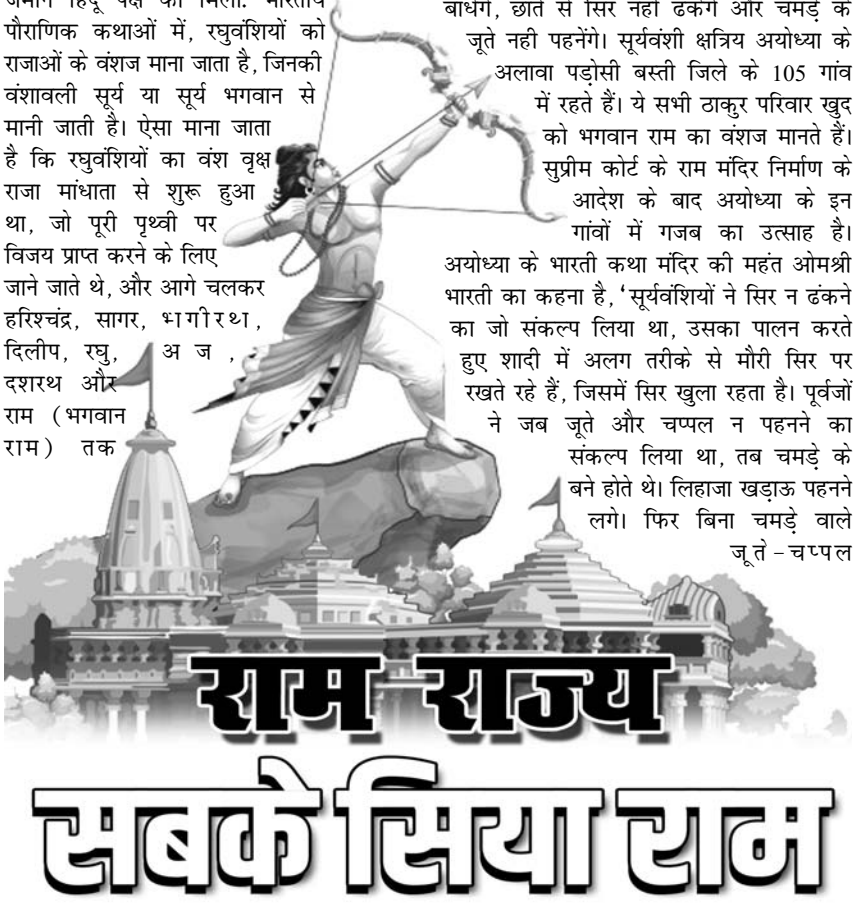

25 से अधिक पैक्सों ने गटक गए एसएफसी के 24033 क्विंटल चावल

☞ **जिले के आलाधिकारियों की मिली भगत से चावल घोटाला मे शामिल दोषी पैक्स अध्यक्षों पर अब तक कार्रवाई नहीं।**

☞ **चावल गबन के बाद भी खुले घूम रहे पैक्स अध्यक्ष।**

☞ **पैक्स अध्यक्षों पर प्राथमिकी के बाद भी नही हुई गिरफ्तारी।**

● **ललन कुमार**

जिले में वर्ष 2017 में हुई धान अधिप्राप्ति और सीएमआर जमा कराने में हुए घोटाले की खुलासे के बाद भी संबंधित पैक्स अध्यक्षो पर अब तक कोई कार्रवाई नही हुई है। उन दिनो लंबी जांच के बाद जिला प्रशासन द्वारा घोटाले में शामिल सभी पैक्स अध्यक्षो पर प्राथमिकी दर्ज कराई गई थी। इस आदेश से जिला के सभी पैक्स अध्यक्षों में हड़कंप मच गया था। आम जिलेवासियों को यह उम्मीद जगी थी कि इतने बड़े चावल घोटाले में शामिल पैक्स अध्यक्षों की सामत आने वाली है। गरीबों का हक छिनने वाले सभी पैक्स अध्यक्ष जेल के भीतर होंगे। लेकिन नालंदा पुलिस की निष्क्रियता तथा रसूखदार पैक्स अध्यक्षों की पहुंच पैरवी के कारण इस मामले में जिला प्रशासन भी लाचार नजर आ रहा है। इस चावल घोटाले के 6 वर्ष बीत जाने के बावजूद जिले की पुलिस के द्वारा एक भी पैक्स अध्यक्ष को गिरफ्तार नहीं किया गया। बल्कि उन्हें बार-बार अवसर देकर एक प्रकार से घोटाला करने वाले पैक्स अध्यक्षों का मनोबल बढ़ाया गया है। जिले की पुलिस प्रशासन के इस व्यवहार से जिले के आम लोगों मे भारी हैरानी है। जहां आम आदमी छोटे-मोटे मामलों में लंबे जेल की सजा भुगतते हैं। वही पहुंच पैरवी रखने वाले पैक्स अध्यक्षों पर आज तक नालंदा पुलिस कोई कार्रवाई नहीं कर उन्हें बचाने का अवसर देते आ रही है। सूत्रों से प्राप्त जानकारी के अनुसार इनमें से कई पैक्स अध्यक्षों द्वारा जमानत भी कराई गई है और कई पैक्स अध्यक्ष जमानत कराने के चक्कर में दौड़ रहे हैं। पूर्व में भी कई पत्र पत्रिकाओं में इस चावल घोटाले की खबरें प्रकाशित होने पर आम लोगों को न्याय मिलने की उम्मीद बढ़ी थी लेकिन बाद में फिर कोई कार्रवाई नहीं होने से जिलेवासी नालंदा पुलिस से निराश हो चुके हैं। उल्लेखनीय है कि धान अधिप्राप्ति 2016-17 में लगभग 24033 क्विंटल चावल का विभागीय अधिकारियो, पैक्स अध्यक्षो तथा मिलरो की मिली भगत से गबन कर लिया गया था। तात्कालिक जिला पदाधिकारी डॉ त्याग राजन एसएम के द्वारा मामले की जांच कर तत्काल संबंधित पैक्स अध्यक्षों पर प्राथमिकी दर्ज करने तथा गिरफ्तारी करने का निर्देश दिया गया था। मामले की जांच पूरी होने के बाद जिले के 25 पैक्स अध्यक्षों पर चावल गबन का आरोप तय हो गया था। इससे संबंधित पैक्स अध्यक्षों में खलबली मच गई थी। खरीफ विपणन मौसम 2016-17 में जिले में लक्ष्य के अनुरूप धान की अधिप्राप्ति जिले के पंचायत पैक्सो तथा व्यापार मंडलों के द्वारा किया गया था। अधिप्राप्ति की गई धान की मात्रा के अनुरूप सीएमआर जमा कराना था। जबकि राज्य भंडार निगम के गोदामों में लगभग 24033 क्विंटल चावल की कमी पाई गई थी। तत्कालिक राज्य खाद्य निगम के प्रबंधक रामबाबू के द्वारा तत्कालिक राज्य भंडार निगम के अधीक्षक रंजीत कुमार, राज्य भंडार निगम के कार्यपालक सहायक अभय कुमार तथा मिलर दिनेश कुमार के साथ साथ अज्ञात पैक्स अध्यक्षों पर प्राथमिकी दर्ज कराई गई थी। लेकिन राज्य खाद्य निगम को चावल अब तक प्राप्त नहीं हो सका है। तात्कालिक जिला पदाधिकारी डॉ त्यागराजन एसएम के द्वारा मामले की जांच का निर्देश दिया गया था. शुरू से ही यह मामला संदेहास्पद प्रतीत हो रहा था तथा इसमें अधिकारियों के साथ-साथ मिलरो तथा पैक्स अध्यक्षों की मिलीभगत नजर आ रही थी। आखिर लंबी जांच प्रक्रिया के बाद जिले के 25 पैक्स अध्यक्ष भी इस चावल घोटाले में संलिप्त पाए गए थे। इसके बाद जिला प्रशासन के द्वारा संबंधित थानों को संलिप्त पैक्स अध्यक्षों को गिरफ्तार करने का निर्देश दिया गया था। निर्देश

में यह भी कहा गया था कि जिन पैक्स अध्यक्षों की गिरफ्तारी नहीं हो सकेगी उनके घरों में कुर्की जब्ती की जाए। हैरानी की बात तो यह है कि नालंदा पुलिस के द्वारा घोटाले के लगभग 6 वर्ष बाद भी इस मामले में कोई कार्रवाई नहीं की गई है। जिलेवासी इससे भारी हैरानी में है कि आखिर इन दोषी पैक्स अध्यक्षों को क्यों और किसके द्वारा बचाया जा रहा है?

★ बाइक तथा यात्री वाहन से पहुंचाए गए चावल :- मामले की जांच जिला परिवहन पदाधिकारी द्वारा की गई थी। जांच में यह सामने आया था की पैक्स अध्यक्षों द्वारा चावल जमा करने मे जिन वाहनों की रसीद जमा की गई है, उनमें से अधिकांश रसीद फर्जी है। रसीद में मालवाहक वाहनों के दिए गए नंबर बाइक और यात्री वाहनों के नंबर थे। ऐसे में यह मानना संभव नहीं था की पैक्स अध्यक्षो ने बाइक पर लादकर चावल को गोदामों तक पहुंचा दिया। जांच के अन्य बिंदुओं पर भी जिले के मिलर तथा पैक्स अध्यक्षों पर ही गड़बड़ी करने का आरोप पुष्ट हुआ था। हालांकि इस मामले में अब तक पुलिस प्रशासन द्वारा बरती जा रही निष्क्रियता की सर्वत्र निंदा हो रही है। इसके बावजूद नालंदा पुलिस के द्वारा कोई कठोर कदम नहीं उठाया जा रहा है। ऐसा बताया जा रहा है कि इस चावल घोटाले में जितने भी नाम शामिल है, वह किसी न किसी रूप में बिहार सरकार से काफी नजदीकी ताल्लुक रखते हैं।

★ केवल सच पत्रिका ने मामले को उठाया :- नालंदा जिले में हुए चावल घोटाले की दुर्गंध जब राजधानी पटना तक पहुंच गई तो केवल सच पत्रिका के संपादक ब्रजेश मिश्रा के द्वारा संबंधित विभाग और महामहिम राज्यपाल के साथ-साथ नालंदा जिले के आला अधिकारियों से भी इस मामले में पुख्ता प्रमाण के साथ पत्राचार कर जानकारी मांगी गई थी। हालांकि

जिले के निम्नलिखित पैक्स है आरोपित :-

पंचायत पैक्स	अध्यक्ष
अजयपुर	निर्मला देवी
बडारा	अरुण कुमार
पपरनौसा	हरेंद्र प्रसाद सिंह
इमामगंज	पिंकू यादव
पतासंग	रामजी प्रसाद
मय फरीदा	शशिराज कुमार
डुमरामा	अशोक कुमार
राना बिगहा	रणवीर कुमार सिन्हा
पावा	कामेश्वर प्रसाद शर्मा
परोहा	अनिल प्रसाद
मुरौरा	सतीश कुमार
चौरिया	रंजन कुमार
पचौड़ा	रंजीत प्रसाद
लोहरा	विजयकृष्ण सिंह
गोनावा	अमरेश उपाध्याय
चेरण	राम प्रसाद सिंह
करियना	बलिराम सिंह
बराकर	श्रवण सिंह
घोस्तावा	श्याम किशोर शर्मा
कतरी	उदय कुमार सिंह
दरवेशपुरा	शशिकांत सिंह
कचहरिया	उदय कुमार सिंह
मालती	भोला प्रसाद
नाहुब	श्याम देव प्रसाद
बिंद	विपिन कुमार

जिला प्रशासन के द्वारा संपादक श्री मिश्रा को भी इसकी जानकारी देना मुनासिब नहीं समझा गया। एक प्रकार से कहा जाए तो नालंदा जिला प्रशासन के द्वारा इतने बड़े घोटाले की लीपापोती करने का प्रयास किया जा रहा है। जब मुख्यमंत्री के गृह जिले का यह हाल है तो राज्य के अन्य जिलों की हालत का अनुमान आसानी से लगाया जा सकता है। कैसे सरकार अंदरुनी रूप से अपराधियों को बचाने में मदद करती है। यह इसका स्पष्ट प्रमाण है।●

शराबबंदी पर सर्वे क्यों करा रही है बिहार सरकार?

● **मनीष कुमार**

जातिवार गणना के बाद बिहार में अब शराबबंदी पर सर्वे की तैयारी है। इसके जरिए नीतीश सरकार यह जानना चाहती है कि कहीं शराबबंदी को लेकर किसी तबके में नाराजगी तो नहीं है। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार शराबबंदी को अपनी बड़ी उपलब्धि गिनाते आए हैं। उनका कहना है कि वो इसे कभी वापस नहीं लेंगे। बावजूद इसके सरकार शराबबंदी पर सर्वे कराने की तैयारी कर रही है। कई जानकार इस सर्वे में चुनावी डर का संकेत देखते हैं। उनका मानना है कि शायद नीतीश सरकार को डर है कि 2024 के लोकसभा चुनाव या अगले विधानसभा चुनाव में कहीं यह शराबबंदी का मुद्दा भारी न पड़ जाए।

☞ **सर्वे का मकसद :-** अप्रैल 2016 में शराबबंदी कानून लागू होने के बाद से इसके प्रावधानों और लागू करने के तरीके पर बार-बार सवाल उठाए गए। इसी वजह से इस कानून में कई बार संशोधन किए गए। पिछले महीने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने नशा मुक्ति दिवस के मौके पर जातिगत गणना की तरह ही घर-घर जाकर शराबबंदी पर सर्वेक्षण किए जाने की घोषणा की। सर्वे से यह पता चल सकेगा कि कितने लोग शराबबंदी के पक्ष में हैं और कितने नहीं। मद्य निषेध विभाग ने इसके लिए एक प्रश्नावली तैयार की है। कहा जा रहा है कि इस सर्वे में परिवार की सामाजिक-आर्थिक स्थिति के संबंध में भी जानकारी मांगी जाएगी। बिहार के सभी जिलों में कम-से-कम 2,500 घरों में सर्वे की योजना है। यह काम 12 हफ्ते में पूरा किया जाएगा। राज्य सरकार यह कवायद अपने खर्च पर करा रही है।

☞ **पहले के सर्वे में क्या पता चला? :-** इससे पहले 2018 में भी एक सर्वेक्षण किया गया था। उसमें डेढ़ करोड़ से ज्यादा लोगों के शराब छोड़ने की जानकारी सामने आई थी। सर्वे के मुताबिक, इन प्रतिभागियों ने बताया कि उन्होंने शराब से बचाए पैसे को सब्जी, कपड़े व दूध जैसी जरूरी चीजें खरीदने पर खर्च किया। इसके बाद दूसरा सर्वे फरवरी 2023 में हुआ, जिसमें राज्य के सभी 38 जिलों के तीन हजार से ज्यादा गांव शामिल किए गए थे। यह सर्वे चाणक्य लॉ यूनिवर्सिटी और जीविका (बिहार ग्रामीण आजीविका परियोजना) ने किया था। इसका सैंपल साइज 10 लाख से ज्यादा था। सर्वे से पता चला कि प्रतिभागियों में 99 प्रतिशत महिलाएं और 92 प्रतिशत पुरुष शराबबंदी के पक्ष में हैं। इसमें भी दो करोड़ से ज्यादा लोगों द्वारा शराब छोड़ देने की बात सामने आई थी। रिपोर्ट के अनुसार, 80 प्रतिशत से ज्यादा लोग शराबबंदी जारी रखने के समर्थन में थे।

☞ **शराबबंदी पर शुरू से ही सियासत :-** इस कानून के लागू होने के बाद से ही विपक्षी दलों ने सीधे-सीधे इसका विरोध नहीं किया। जानकार इसके पीछे राजनीतिक मजबूरी को कारण बताते हैं। हालांकि विपक्ष कानून को लागू करने के तरीके पर सवाल उठाता रहा है। तब विपक्ष में रहे राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) ने आरोप लगाया था कि इस कानून के जरिए केवल गरीबों को प्रताड़ित किया जा रहा है। लालू प्रसाद यादव ने तो शराबबंदी कानून को तुरंत खत्म करने की मांग की थी। तेजस्वी यादव ने भी इसके कारण हो रहे राजस्व के नुकसान का मामला उठाया था। हिंदुस्तानी अवाम मोर्चा (हम) के संरक्षक और बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी तो नीतीश कुमार के साथ रहते हुए भी शराबबंदी का विरोध करते रहे। मांझी कई बार कह चुके हैं कि इससे गरीबों का बड़ा नुकसान हुआ है। मांझी कहते हैं कि वर्तमान शराब नीति बहुत ही दोषपूर्ण है। आज चार लाख से ज्यादा लोग शराब पीने और बेचने के आरोप में जेल में बंद हैं। इनमें 80 प्रतिशत दलित और गरीब तबके के हैं। 2025 में अगर मेरी सरकार बनी, तो या तो गुजरात मॉडल लागू कर देंगे या शराबबंदी हटा देंगे। पहले भी लोग पीते थे, अब भी पी रहे हैं। शराबबंदी में तो लोग जहरीली शराब पीकर मर रहे हैं।

☞ **लोगों के मन की बात जानने की कोशिश क्यों? :-** सरकार की तमाम कोशिशों के बावजूद राज्य में देसी और विदेशी शराब का अवैध धंधा फल-फूल रहा है। शराबबंदी लागू होने के तीन महीने बाद ही गोपालगंज के खजूर बन्नी में जहरीली शराब पीने से 19 लोगों की मौत हो गई थी। एक रिपोर्ट के मुताबिक 2016 से अब तक इससे 250 से ज्यादा लोगों की जान

जा चुकी है। राज्य के विभिन्न थानों में इस कानून के उल्लंघन से संबंधित करीब साढ़े पांच लाख मामले दर्ज हैं। इनके अलावा करीब आठ लाख लोगों की गिरफ्तारी हो चुकी है। अदालतों में शराबबंदी से जुड़े मुकदमों का अंबार लगा है। यही वजह रही कि दिसंबर 2021 में सर्वोच्च न्यायालय के तत्कालीन चीफ जस्टिस एन।वी। रमन्ना ने इसे दूरदर्शिता की कमी के साथ लागू किया गया कानून बताया था। शराबबंदी लागू करने में लापरवाही बरतने या इससे संबंधित भ्रष्टाचार के आरोप में सैकड़ों पुलिसकर्मियों व सरकारी अधिकारियों-कर्मचारियों को निलंबित किया जा चुका है। ड्रोन के जरिए शराब बनाने के अड्डों की खोज की जा रही है। बरामदगी के आंकड़े और दूसरे राज्यों में माफिया की गिरफ्तारी से पता चलता है कि उत्तर प्रदेश, हरियाणा, झारखंड जैसे राज्यों से अवैध शराब बिहार में लाई जा रही है। शराबबंदी कानून लागू होने के बाद से इसमें अब तक कई महत्वपूर्ण संशोधन किए जा चुके हैं। अब तो पहली बार पीते हुए पकड़े जाने पर जुर्माना देकर छोड़ने का प्रावध ान हो गया है। पत्रकार संजय सिंह कहते हैं कि जहरीली शराब से होने वाली मौतों, अदालतों में मुकदमों के अंबार और अधिक संख्या में गरीबों-दलितों की गिरफ्तारी को लेकर शुरू से ही सवाल उठते रहे हैं। चुनाव नजदीक आ गया है, तो जाहिर है कि सरकार पर राजनीतिक दबाव तो होगा ही। सर्वेक्षण से इस मुद्दे पर आम लोगों के मूड का पता तो चल ही जाएगा।

☞ **क्या शराबबंदी का मकसद हासिल हुआ?** :- बिहार में शराबबंदी लागू करने में महिलाओं की बड़ी भूमिका रही है। रिपोर्ट्स बताती हैं कि बड़ी संख्या में महिलाओं द्वारा की गई मांग ने इस कानून की राह बनाई। नीतीश कुमार ने 2015 के चुनाव में जीत कर आने पर इसे लागू करने का वादा किया था। इस वादे से उन्हें महिला मतदाताओं का भरपूर समर्थन मिला। महिलाओं का वोट प्रतिशत 59।92 हो गया। सत्ता में लौटते ही नीतीश ने शराबबंदी की घोषणा कर दी। पत्रकार शिवानी सिंह कहती हैं कि यह सच है कि शराबबंदी लागू होने से उन महिलाओं को नई जिंदगी मिली, जिनके पारिवारिक जीवन को शराब ने नरक बना दिया था। उनके साथ घरेलू हिंसा में कमी आई। यह नारी सशक्तीकरण और महिला सुरक्षा की दिशा में वाकई एक ऐतिहासिक कदम था।

☞ **महिलाओं का नजरिया** :- जानकार मानते हैं कि इस कानून के कारण महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक दशा में सुधार भी हुआ है। हालांकि अब इसमें भी संशय नहीं कि अवैध शराब की बिक्री और जहरीली शराब पीने से होने वाली मौतों के कारण इस तबके में नाराजगी भी उभर रही है।

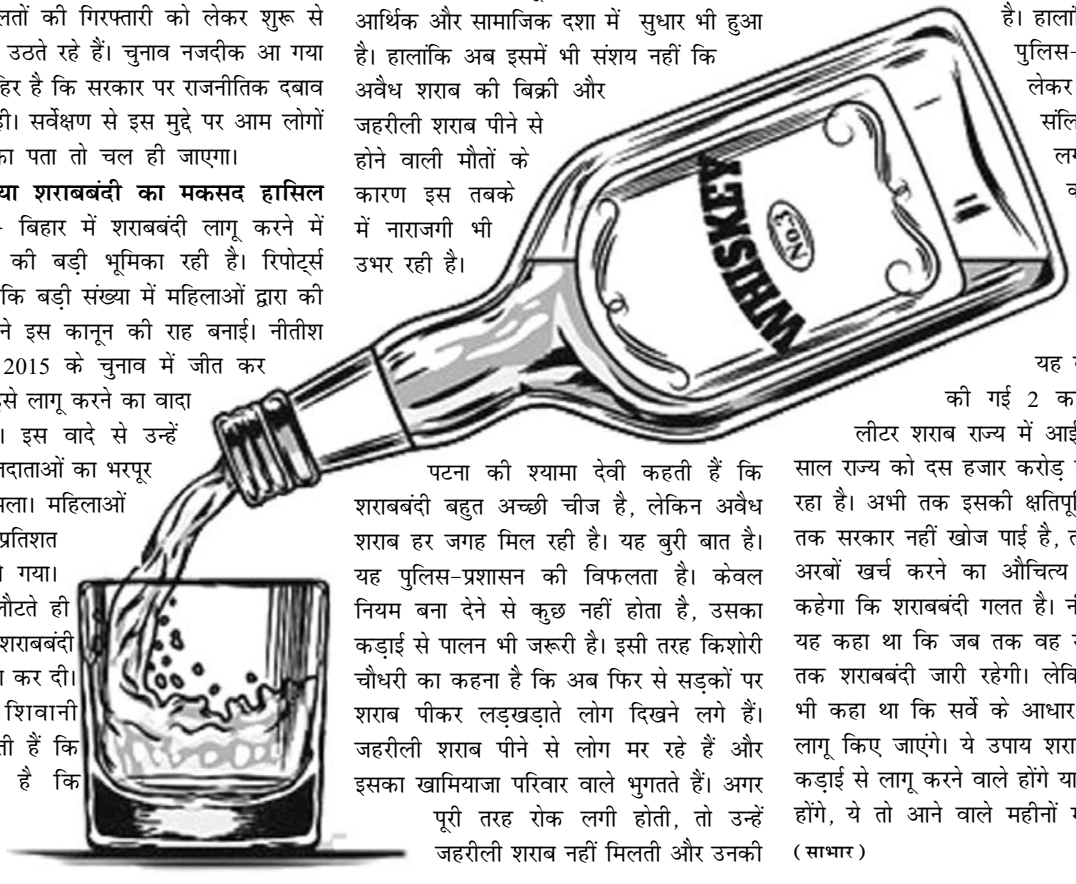

पटना की श्यामा देवी कहती हैं कि शराबबंदी बहुत अच्छी चीज है, लेकिन अवैध शराब हर जगह मिल रही है। यह बुरी बात है। यह पुलिस-प्रशासन की विफलता है। केवल नियम बना देने से कुछ नहीं होता है, उसका कड़ाई से पालन भी जरूरी है। इसी तरह किशोरी चौधरी का कहना है कि अब फिर से सड़कों पर शराब पीकर लड़खड़ाते लोग दिखने लगे हैं। जहरीली शराब पीने से लोग मर रहे हैं और इसका खामियाजा परिवार वाले भुगतते हैं। अगर पूरी तरह रोक लगी होती, तो उन्हें जहरीली शराब नहीं मिलती और उनकी जान नहीं जाती। नहीं तो लोग पहले भी पी रहे थे, क्या फर्क पड़ रहा था।

☞ **और कड़ाई या ज्यादा ढील?** :- अवैध शराब की भारी मात्रा में बरामदगी यह बताने के लिए काफी है कि सरकार और प्रशासन, शराब व्यापारियों के सिंडिकेट को तोड़ नहीं पा रही है। इनका नेटवर्क भी पूरी तरह काम कर रहा है। हालांकि इसके लिए पुलिस- प्रशासन से लेकर नेताओं तक पर संलिप्तता के आरोप लगते हैं। भाजपा के वरिष्ठ नेता और सांसद सुशील कुमार मोदी कहते हैं कि सरकार यह बताए कि जब्त की गई 2 करोड़ 16 लाख लीटर शराब राज्य में आई कहां से? हर साल राज्य को दस हजार करोड़ का नुकसान हो रहा है। अभी तक इसकी क्षतिपूर्ति का विकल्प तक सरकार नहीं खोज पाई है, तो अब सर्वे पर अरबों खर्च करने का औचित्य क्या है। कौन कहेगा कि शराबबंदी गलत है। नीतीश कुमार ने यह कहा था कि जब तक वह सत्ता में हैं, तब तक शराबबंदी जारी रहेगी। लेकिन उन्होंने यह भी कहा था कि सर्वे के आधार पर नए उपाय लागू किए जाएंगे। ये उपाय शराबबंदी को और कड़ाई से लागू करने वाले होंगे या ढील देने वाले होंगे, ये तो आने वाले महीनों में पता चलेगा।

(साभार)

बीएचयू में मनुस्मृति रिसर्च प्रोजेक्ट पर बवाल

बीएसएम और एबीवीपी आमने-सामने

● विजय विनीत

बीएचयू जैसे शीर्षस्थ विश्वविद्यालय में ऐसा कोई भी अध्ययन अथवा शोध नहीं होना चाहिए जो समाज को पीछे ले जाने वाला बना दे। आज जब पूरी दुनिया विकास के नए आयाम गढ़ रही है ऐसे में अपने अतीत से चिपककर बैठे रहना उचित नहीं है।

काशी हिन्दू विश्व विद्यालय (बीएचयू) में मनुस्मृति पर रिसर्च के लिए फेलोशिप शुरू किए जाने को लेकर उपजा विवाद गहराने लगा है। एक तरफ भगत सिंह स्टूडेंट्स मोर्चा (बीएसएम) मनुस्मृति पर नए रिसर्च प्रोजेक्ट का विरोध कर रहा है तो दूसरी ओर बीजेपी का अनुसांगिक संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) 'मनुस्मृति दहन' के विरोध में खड़ा हो गया है। बीएसएम ने सोमवार की शाम कला संकाय के मनुस्मृति की प्रतीक प्रतियां फूंकी तो अभाविप ने इसके विरोध में मंगलवार को कुलपति आवास पर प्रदर्शन किया और भद्दे नारे लगाए। इस दौरान कुलपति और चीफ प्राक्टर पर भद्दी टिप्पणियां भी की गईं। बीएसएम का आरोप है कि, 'सत्ता में बैठे लोगों ने ब्राह्मणवाद सर्वश्रेष्ठ बताने को इस मनुस्मृति रिसर्च प्रोजेक्ट के लिए भारी-भरकम धनराशि स्वीकृति कराई है। सत्ता की शह पर बीएचयू में जातिवादी और सांप्रदायिक माहौल बनाने के लिए झूठ और भ्रम का वितंडा खड़ा किया जा रहा है।'

बीएचयू के कला संकाय के बाहर भगत सिंह छात्र मोर्चा के दर्जन भर छात्रों के समूह ने सोमवार को सादे पन्ने पर मनुस्मृति के श्लोक लिखकर उसकी प्रतियां फूंकी और आक्रोश व्यक्त किया। मनुस्मृति में ब्राह्मणवाद के महिमामंडन की आलोचना करते हुए ब्राह्मणवाद- मुर्दाबाद, मनुवाद-मुर्दाबाद और जातिवाद को धवस्त करो जैसे नारे भी लगाए गए। भगत सिंह स्टूडेंट्स मोर्चा के फेसबुक पेज पर एक वीडियो भी पोस्ट किया गया है, जिसमें मनुस्मृति की प्रतियां भी जलाई जा रहीं हैं। यह मोर्चा पिछले कई दिनों से मनुस्मृति के खिलाफ मुहिम चला रहा है। दूसरी ओर, मनुस्मृति दहन के विरोध में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से जुड़े स्टूडेंट्स भास्कर आदित्य, राजकुमार, मृत्युंजय तिवारी, पतंजली पांडेय आदि ने मंगलवार को कुलपति आवास पर पहुंचकर मनुस्मृति दहन के विरोध में प्रदर्शन किया और भद्दे नारे भी लगाए। इनके विरोध प्रदर्शन का एक वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें कुलपति और कुलसचिव के खिलाफ आपत्तिजनक शब्दों का प्रयोग किया जा रहा है। बीएचयू में मनुस्मृति पर शोध शुरू किए जाने के साथ ही विरोध के स्वर तेज होने लगे हैं। भगत सिंह स्टूडेंट्स मोर्चा के अलावा बहुजन समाज छात्र संगठन भी बीएचयू में मनुस्मृति पर रिसर्च का विरोध कर रहा है। इनका आरोप है कि मनुस्मृति में बहुत कुछ ऐसी गलत बातें लिखी गई हैं जो समाज में जातिवाद, वर्ण व्यवस्था और धर्मांधता को बढ़ावा देती हैं।

☞ **मनुस्मृति पर रिसर्च का विरोध क्यों? :-** भगत सिंह छात्र मोर्चा से जुड़ी आकांक्षा आजाद कहती हैं, 21वीं सदी में शोषित और वंचित तबके में एक नई रैडिकल चेतना का संचार हुआ है। ऐसे में अतीत के स्याह दौर की याद दिलाती इस किताब की प्रयोज्यता की बात करना दुनिया में भारत की कैसी छवि बनाएगा? बाबा साहेब भीमराव आंबेडकर ने सामाजिक बुराइयों को मिटाने के लिए मनुस्मृति की प्रतियां फूंकी थी। मौजूदा समय में वो समस्याएं जस की तस हैं। महिलाओं और शूद्रों के साथ भेदभाव व असमानता बरकरार है। डा.आंबेडकर हिन्दू धर्म की बुराइयों पर सीधे वार करते थे और कहते थे कि मैं हिन्दू धर्म में पैदा हुआ हूं लेकिन इस धर्म में मरूंगा नहीं। हिन्दू धर्म समानता और स्वतंत्रता का

विरोधी है। उन्होंने मनुस्मृति में वर्णित चारो वर्ण व्यवस्था का जमकर विरोध किया और बाद में उन्होंने बौद्ध धर्म अपना लिया था।' मनुस्मृति को लेकर दलित और पिछड़े वर्ग का प्रबुद्ध तबका दशकों से विरोध करता आ रहा है। दरअसल, इस पुस्तक में दलितों और महिलाओं के बारे में कई ऐसे श्लोक हैं जिनकी वजह से अक्सर विवादों का जन्म होता है। इतिहासकारों के मुताबिक, स्मृति का मतलब धर्मशास्त्र होता है। ऐसे में मनु द्वारा लिखा गया धार्मिक लेख मनुस्मृति कही जाती है। मनुस्मृति में कुल 12 अध्याय हैं जिनमें 2684 श्लोक हैं। कुछ संस्करणों में श्लोकों की संख्या 2964 है। मनुस्मृति को लेकर मराठी के अग्रणी लेखक प्रो. नरहर कुरूंदकर ने एक पुस्तक लिखी है जिसमें वह अपनी सोच को रेखांकित करते हुए कहते हैं, 'मैं उन लोगों में शामिल हूं जो मनुस्मृति को जलाने में विश्वास करते हैं। ईसा से करीब दो सौ साल पहले मनुस्मृति लिखी गई थी।'

☞ **पहले से पढ़ाई जाती है मनुस्मृति :-** मनुस्मृति को एक खेमा खारिज करता नजर आ रहा है तो दूसरा खेमा एक के बाद एक नए सबूत पेश कर रहा है कि उनकी बात किस तरह सही है? इस बीच बीएचयू के धर्मशास्त्र मीमांसा विभाग ने 'दलितों एवं स्त्रियों को अपमानित करने वाली किताब मनुस्मृति पर शोध फेलोशिप लाकर नए सिरे से विवाद को बढ़ा दिया है। दरअसल, यही वो किताब है जो सौ साल से भी अधिक समय से विवादों में रही है और उसे लेकर बड़े-बड़े आंदोलन भी हुए हैं।' काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में धर्मशास्त्र-मीमांसा विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर शंकर कुमार मिश्रा कहते हैं, ष्यह पहला मौका नहीं है जब मनुस्मृति पढ़ाई जा रही है। जब से उनका विभाग बना है तभी से मनुस्मृति समेत कई ग्रंथ कोर्स में हैं और पढ़ाए जाते रहे हैं। उनके विभाग में हर वर्ग के स्टूडेंट्स पढ़ने आते हैं। वो पीएचडी भी करते हैं। स्मृतियों में मानवता के लिए उपदेश है। सद-आचरण की शिक्षा से भ्रमित लोगों को उबारने के लिए शोध की जरूरत है। धर्मशास्त्र में कई विचार और विषयों को सरल शब्दों और संक्षेप में जनमानस के सामने रखा जाए ताकि मानव कल्याण की बताई गई बातों से आम जनता परिचित हो। इस मामले में दुष्प्रचार किया जा रहा है। 'भारतीय समाज में मनुस्मृति की प्रयोज्यता' विषय पर शोध की योजना का धर्मशास्त्र मीमांसा विभाग की ओर से प्रस्तुत किया गया है। शोध और

शिक्षा में किसी तरह की राजनीति नहीं होनी चाहिए। इस प्रोजेक्ट के लिए इंस्टीट्यूट ऑफ एमिनेंस से मिलने वाले बजट से अनूठे शोध होंगे। सरकारी अधिसूचना के मुताबिक, केंद्र सरकार ने इंस्टिट्यूशंस ऑफ एमिनेंस स्कीम के तहत मनुस्मृति पर रिसर्च करने के लिए देश के दस सार्वजनिक शिक्षण संस्थाओं के लिए एक हजार करोड़ रुपये की मंजूरी दी है। यह धनराशि रिसर्च और डेवलपमेंट पर खर्च की जाएगी। मनुस्मृति का फेलोशिप प्रोग्राम भी इसी का हिस्सा है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में 'मनुस्मृति की भारतीय समाज पर प्रयोज्यता' विषय पर रिसर्च कराएगा। रिसर्च फेलोशिप इसी साल31मार्च 2023 को संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय ने शुरू कराई है।

☞ **कहां है विवाद की जड़ :-** मनुस्मृति को लेकर उठे विवाद पर 'न्यूजक्लिक' ने दिल्ली विश्वविद्यालय में राजनीति शास्त्र के पूर्व प्रोफेसर डाशमशुल इस्लाम से विस्तार से बात की। वह इस पुस्तक के इतिहास को समझाते हुए कहते हैं, 'बाबा साहेब के हिन्दू धर्म को छोड़ने की सबसे बड़ी वजह मनुस्मृति रही। दुर्भाग्य यह है कि हिन्दू कट्टरवाद का हिन्दुओं के बारे में जो एजेंडा है उस पर आज तक कभी कोई डिस्कशन नहीं हुआ है। मनुस्मृति के समर्थकों की तरह मुस्लिम लीग ने भी गैर-बराबरी और औरतों की हकमारी का एजेंडा चलाया था। मुगल शासक औरंगजेब के जमाने में जो इस्लामी शरीयत (फतवा-ए-जहागीरी) लागू की गई वह पूरी तरह मनुस्मृति से प्रभावित थी। औरंगजेब सोचता था कि हिन्दुओं के साथ वह मुसलमानों को कैसे नियंत्रित करे तो उसने शरीयत के अंदर मनुस्मृति की सारी बातें डाल दी। फतवा-ए-जहागीरी को मनुस्मृति की प्रतिकृति कहा जा सकता है।' प्रो. शमशुल यह भी कहते हैं, 'इस्लाम में औरतों को पुरुषों के बराबर अधिकार दिया गया है। कुरान में कहीं भी पर्दा प्रथा का समर्थन नहीं किया गया है। औरतों को गुलाम बनाकर रखने के लिए मुगल शासकों ने शरिया कानून थोपा। जिस तरह मुस्लिमों के पास कानून की किताब के रूप में शरिया है उसी तरह हिंदुओं के पास मनुस्मृति है। मनुस्मृति बताती है कि ब्राह्मणों का स्थान सबसे ऊपर है इसलिए उसका सम्मान किया जाना चाहिए। अपने पति की सेवा के बगैर औरतें स्वर्ग प्राप्त नहीं कर सकती हैं। मनुस्मृति और शरिया कानून दोनों ही औरतों और शूद्रों के धार्मिक और शैक्षणिक अधिकारों को खारिज करती है। काशी के पंडितों ने अंग्रेजों को समझा दिया था कि मनुस्मृति हिन्दुओं के जीवन का सूत्रग्रंथ है। इसके प्रचार-प्रसार से ही अपराधों पर अंकुश लग सकता है। अंग्रेजों ने जब इस किताब के जरिये कानूनी मामलों को हल करना शुरू किया तो मनुस्मृति चर्चित हो गई।'

☞ **'पाखंडियों की संरक्षक है मनुस्मृति' :-** इतिहास के पन्नों को पलटने से पता चलता है कि महात्मा ज्योतिबा फुले ने सबसे पहले मनुस्मृति को चुनौती दी और खेतिहर किसानों, मजदूरों, वंचित तबके के लोगों की हालत देखकर उन्होंने ब्राह्मणों की आलोचना की। इसके बाद 25 जुलाई, 1927 को बाबा साहेब डा. भीमराव आंबेडकर ने महाराष्ट्र के कोलाबा में मनुस्मृति को जलाया। फिर देश में कई स्थानों पर मनुस्मृति जलाई गई। बाबा साहेब कहा करते थे कि मनु की जाति व्यवस्था एक बहुमंजिली इमारत की तरह है जिसमें एक से दूसरी मंजिल में जाने के लिए कोई सीढ़ी नहीं होती है। मनुस्मृति में कर्म को विभाजित करने के बजाय काम करने वालों को ही बांट दिया गया। उनका मानना था कि जाति व्यवस्था और पाखंडियों की संरक्षक मनुस्मृति है। आजादी के बाद साल1970 में कांशीराम ने बामसेफ बनाकर इस पुस्तक का विरोध किया। कांशीराम का भी मानना था कि मनुस्मृति की वर्ण व्यवस्था के चलते भारतीय समाज को हजारों जातियों में बांट दिया गया। हाल के दिनों में समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता स्वामी प्रसाद

मौर्य ने मनुस्मृति का कई मंचों पर विरोध किया है। तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस में औरतों व शूद्र जातियों के उत्पीड़न और अपमानजनक चित्रण की उन्होंने आलोचना की तो हर तरफ बहस छिड़ गई। मनुस्मृति को लेकर एक बड़ा विवाद उस समय भी खड़ा हुआ था जब दिल्ली उच्च अदालत की न्यायाधीश प्रतिभा सिंह ने फिक्की द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में इस पुस्तक की जमकर तारीफ की तो उनकी जबर्दस्त आलोचना हुई। न्यायाधीश प्रतिभा का कहना था कि मनुस्मृति 'महिलाओं को सम्मानजनक दर्जा देती है।' मनुस्मृति की वकालत करने वालों का मानना है कि मनु ने विश्व कल्याण के लिए ये किताब लिखी। वह कानून विशेषज्ञ थे। मनुस्मृति का समर्थन करने वाले दावा करते हैं कि यह पांचवा वेद है जो समाज के कल्याण की बात करती है। इस पुस्तक का अनादर किया जाना ठीक नहीं है। इस बीच मनुस्मृति की तरफदारी करने के लिए धर्मगुरुओं ने भी दुनिया को बताना शुरू कर दिया कि इस पुस्तक में वेद का सारांश है। इस मुद्दे पर बनारस के वरिष्ठ पत्रकार राजीव मौर्य कहते हैं, 'बीएचयू अब आरएसएस का गढ़ बन गया है। यही वजह है कि मनुस्मृति पर रिसर्च के नाम पर भारी-भरकम धनराशि स्वीकृत की गई है। दुनिया जानती है कि भारत में जब बौद्ध धर्म का फैलाव होने लगा तो मनुस्मृति के जरिये ही ब्राह्मणों ने अपने प्रभाव को बढ़ाने के लिए मिथक रचना शुरू कर दिया कि उनका स्थान समाज में सबसे ऊपर है। उनके लिए अलग और दूसरों के लिए अलग नियम हैं। महामना मदन मोहन मालवीय की बगिया में समाज को जाति और धर्म के खांचे में बांटने का ढकोसला बंद होना चाहिए।'

☞ **नफरत पैदा करेगा मनुस्मृति पर रिसर्च** :- मनुस्मृति के शोध पर उपजे विवाद पर 'न्यूजक्लिक' ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के सामाजिक परिष्करण एवं समावेशी नीति अध्ययन केंद्र के एसोसिएट प्रोफेसर डा. अमरनाथ पासवान से विस्तार से बात की। डा.पासवान कहते हैं, 'मनुस्मृति का विरोध इसलिए भी जायज है क्योंकि इस पुस्तक ने सौ साल से औरतों और शूद्र जातियों को अपमानित किया है और उनकी तरक्की भी रोकी है। इस तबके को आर्थिक और सामाजिक तौर पर स्थायी रूप से गुलाम बनाने की कोशिश की है। मनुस्मृति को किसी भी तरीके से धार्मिक अथवा पवित्र पुस्तक नहीं कहा जा सकता। इस मुद्दे को फिर से सैनिटाइज्ड किए जाने से मनुस्मृति को नए सिरे से वैधता मिलेगी और हिन्दू समाज में ऊंच-नीच की खाई गहरी होगी। बाबा साहेब ने मनु की जिस व्यवस्था को पूरी तरह खत्म कर दिया था, शोध के जरिये उसे फिर जिंदा करने की कोई जरूरत नहीं है।' बनारस के वरिष्ठ पत्रकार एवं चिंतक प्रदीप कुमार कहते हैं, 'मनुस्मृति पर शोध की योजना आरएसएस के चिंतन से मिलती-जुलती है। हिन्दुस्तान की आजादी के बाद जब संविधान बनाया जा रहा था उस समय भी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और हिन्दू महासभा के शीर्षस्थ नेता गोलवलकर और सावरकर ने मनुस्मृति के एजेंडे को लागू कराने की कोशिश की थी। हिन्दुत्व के नाम पर सियासत करने वालों को मनुस्मृति आज भी सम्मोहित करती है। दरअसल, यह एक ऐसी पुस्तक है जो महिलाओं के पैरों में हथकड़ी डालती है और मर्दवादी समाज को तमाम दोषारोपणों से आजाद करती है। यही नहीं, यह इकलौती ऐसी पुस्तक है जो आरएसएस की चालाकी और बीजेपी की सियासत के लिए उर्बर जमीन भी तैयार करती है।' प्रदीप कहते हैं, सबसे बड़ी बात यह है कि देश भर में जहां विश्वविद्यालयों के खर्चों में जबर्दस्त कटौती की जा रही है, वहीं आरएसएस और बीजेपी के एजेंडे को आगे बढ़ाने वाली पढ़ाई के लिए टैक्सपेयर का मनमाना धन लुटाया जा रहा है। कोई भी पुस्तक जो समाज में गैर-बराबरी और नफरत पैदा करती हो, ऐसी पुस्तक की पढ़ाई गैर-वाजिब है। बीएचयू जैसे शीर्षस्थ विश्वविद्यालय में ऐसा कोई भी अध्ययन अथवा शोध नहीं होना चाहिए जो समाज को पीछे ले जाने वाला बना दे। आज जब पूरी दुनिया विकास के नए आयाम गढ़ रही है ऐसे में अपने अतीत से चिपककर बैठे रहना उचित नहीं है। (साभार)

यौन शोषण के खिलाफ

कैंपस से लेकर सड़क और संसद भवन में गूंजी आवाज

● **सोनिया यादव**

महिला सुरक्षा का मुद्दा इस देश में तभी सुर्खियों में आता है, जब या तो कहीं चुनाव हों, या कहीं कोई बड़ी घटना घटित हो गई हो। इसके अलावा ये मुद्दा हमारी सरकारी नीतियों में भी सिर्फ दावों और वादों के बीच पीठ थपथपाने के लिए इस्तेमाल होता रहा है। हालांकि छात्र और महिला संगठन तमाम आंदोलनों- प्रदर्शनों के जरिए साल भर सरकार को इस गंभीर विषय पर नींद से जगाने की कोशिश करते रहे हैं। न्यूजक्लिक के इस लेख में एक नजर 2023 के उन विरोध प्रदर्शनों और आंदोलनों पर जो विश्वविद्यालय कैंपस से लेकर सड़कों और संसद भवन तक महिला हिंसा और यौन शोषण के खिलाफ हुए।

☞ **महिला पहलवानों का बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ प्रदर्शन** :- इस साल की शुरुआत में भारतीय कुश्ती महासंघ 18 जनवरी को उस वक्त अचानक खबरों में आ गया, जब देश के जाने माने दिग्गज पहलवान फेडरेशन के

खिलाफ राजधानी दिल्ली के जंतर-मंतर पर धरना देने बैठ गए। इन पहलवानों ने भारतीय कुश्ती संघ के अध्यक्ष बृज भूषण शरण सिंह पर कुश्ती संघ को मनमाने तरीके से चलाने का आरोप लगाया। धरने पर बैठी महिला पहलवानों ने महासंघ के प्रेसिडेंट पर यौन उत्पीड़न के गंभीर आरोप भी लगाए। इन पहलवानों में ओलंपिक्स, एशियन गेम्स और राष्ट्रमंडल खेलों में भारत को कई पदक दिलाने वाली महिला कुश्ती खिलाड़ी विनेश फोगाट, साक्षी मलिक, बजरंग पुनिया समेत देश के कई दिग्गज पहलवान शामिल थे। खेल मंत्री से कई दौर की बातचीत के बात लगभग तीन दिन बाद ये प्रदर्शन जांच के आश्वासन के बाद खत्म हो गया। हालांकि तीन महीने बाद किसी ठोस कार्रवाही के आभाव में ये खिलाड़ी एक बार फिर पोडियम से फुटपाथ पर धरना देने के लिए लौटे। इस बार ये

धरना कई महीने चला। खिलाड़ियों के समर्थन में आम लोग और महिला संगठन भी आए। कई नेताओं का भी जंतर-मंतर पर जमावड़ा हुआ। नई संसद के उद्घाटन के दिन खिलाड़ियों का जोरदार प्रदर्शन देखने को मिला और इसके बाद इनका धरना समाप्त हो गया। फिलहाल ये मामला अदालत में है और पहलवान न्याय का इंतजार कर रहे हैं।

☞ **अंकिता भंडारी के न्याय के लिए उठे हाथ :-** उत्तराखंड के बहुचर्चित अंकिता भंडारी हत्याकांड मामले में महिला और मानवाधिकार संगठनों की संयुक्त फैक्ट फाइंडिंग टीम ने 7 फरवरी को दिल्ली के प्रेस क्लब में अपनी फैक्ट रिपोर्ट जारी की थी। इस रिपोर्ट में कई चिंताओं और सवालों के साथ ही उन तथ्यों को भी सामने रखा गया, जो टीम ने अंकिता के घर से लेकर घटनास्थल तक अपनी आंखों से देखा और लोगों से सुना था। इसके अलावा एसआईटी जांच, पोस्टमार्टम रिपोर्ट और आरोपियों के खिलाफ दाखिल चार्जशीट के भी तमाम पहलुओं को भी इस रिपोर्ट के केंद्र में रखा गया था। इस फैक्ट फाइंडिंग रिपोर्ट में एसआईटी पर जांच में जानबूझकर लापरवाही बरतने समेत वनंतरा रिजॉर्ट पर बुलडोजर चलाने, पुलिस रिमांड की मांग न करने और राजस्व पुलिस से लेकर उत्तराखंड पुलिस तक के गोलमोल भूमिका पर सवाल खड़े किए गए थे। देश में दिन-प्रतिदिन महिलाओं के खिलाफ बढ़ती हिंसा और आरोपियों को मिलते सरकारी संरक्षण के खिलाफ 14 फरवरी को भी दिल्ली के जंतर-मंतर पर ऑल इंडिया महिला सांस्कृतिक संगठन के नेतृत्व में तमाम महिला कार्यकर्ताओं ने एकजुट होकर जोरदार धरना प्रदर्शन किया था। इस प्रदर्शन में अंकिता की मां सोनी देवी भी शामिल हुई थीं और उन्होंने शासन-प्रशासन पर जानबूझकर मामले की गंभीरता को दबाने का आरोप लगाया था। इस प्रदर्शन में महिलाओं ने एक सुर में सरकार से महिलाओं की सुरक्षा के वादे नहीं नीयत और नीति की मांग की थी।

☞ **जूनियर महिला कोच का मंत्री संदीप सिंह के खिलाफ संघर्ष :-** अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर हरियाणा में एक राज्यस्तरीय कार्यक्रम के दौरान जब मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर महिलाओं के सम्मान में कसीदे पढ़ रहे थे, ठीक उसी समय महिला संगठन उनके मंत्री संदीप सिंह को लेकर जोरदार प्रदर्शन कर रहे थे। यहां महिला प्रदर्शनकारियों से पुलिस के दुर्व्यवहार के आरोप भी लगे। अखिल भारतीय जनवादी महिला समिति (एडवा) समेत कई अन्य नागरिक और महिला संगठनों की न्यायिक संघर्ष समिति ने एक साझा बयान में कहा कि राज्य के मुख्यमंत्री महिलाओं की जायज मांगों को अनसुना करके अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस मनाने का ढोंग कर रहे हैं। मुख्यमंत्री को महिला विरोधी रवैये के लिए सार्वजनिक माफी मांगनी चाहिए। ध्यान रहे कि भारतीय हॉकी टीम के पूर्व कप्तान और हरियाणा में बीजेपी के नेता संदीप सिंह के खिलाफ एक जूनियर महिला कोच ने बीते साल 26 दिसंबर को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में यौन उत्पीड़न के गंभीर आरोप लगाए थे। साल के आखिरी दिन 31 दिसंबर को संदीप सिंह के खिलाफ चंडीगढ़ के सेक्टर 26 पुलिस थाने में केस भी दर्ज हुआ था। तब से इस मामले को लेकर हरियाणा की सड़कों और विधानसभा भवन में कई प्रदर्शन भी हुए, बावजूद इसके बीजेपी मंत्री को कोई फर्क नहीं पड़ा। ये मामला भी फिलहाल कोर्ट में है और पीड़िता न्याय की

आस लगाए बैठी है। मणिपुर में महिलाओं के साथ हिंसा, एकजुट हुआ देश इस साल की सबसे बड़ी महिला हिंसा की खबर मणिपुर से आई, जहां कुछ महिलाओं को निर्वस्त्र करके परेड कराने और गैंगरेप का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। इसके बाद देशभर में प्रगतिशील नागरिक समाज के लोगों में भारी रोष देखने को मिला। इसको लेकर देश के कई इलाकों में विरोध प्रदर्शन हुए। दिल्ली से लेकर यूपी-बिहार और हरियाणा में जगह-जगह प्रदर्शन किए गए। ये प्रदर्शन किसी एक संगठन या दल का नहीं था बल्कि आम जनता का था, जिसने हिंसा को नकारने का आह्वान किया था। इसमें बड़ी संख्या में छात्र, नौजवान और महिला संगठन और नागरिक समाज के लोग शामिल हुए थे।

मानसून सत्र के दौरान संसद में भी इस मामले ने खूब तूल पकड़ा और सदन में विपक्षी सांसदों ने नारे लगाए, तख्तियां दिखाई। सांसद इस मुद्दे पर चर्चा और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से पूरे मामले पर बयान की मांग कर रहे थे। कई दिन संसद में ये हंगामा जारी रहा, सांसद निलंबित हुए और विपक्ष ने महात्मा गांधी की प्रतिमा के सामने एकजुट होकर 'इंडिया फॉर मणिपुर' की तख्तियां लिए विरोध प्रदर्शन किया।

☞ **हैदराबाद इफलू विश्वविद्यालय में यौन उत्पीड़न के खिलाफ लांबद हुए छात्र :-** इसी साल अक्तूबर में हैदराबाद के अंग्रेजी और विदेशी भाषा विश्वविद्यालय (ईएफएलयू)

परिसर में अज्ञात व्यक्तियों द्वारा कथित तौर पर एक छात्रा का यौन उत्पीड़न किए जाने को लेकर छात्रों ने जोरदार विरोध प्रदर्शन किया था। इस प्रदर्शन में पीड़िता के लिए न्याय की मांग के साथ ही कैंपस में सुरक्षा का मुद्दा भी उठा। इफलू के विद्यार्थी काफी समय से विश्वविद्यालय में यौन उत्पीड़न की संवेदनशीलता, रोकथाम और निवारण (स्पर्श) समिति के पुनर्गठन की मांग को लेकर प्रदर्शन कर रहे थे जिसमें अधिकतर तादाद में महिला छात्राएं मौजूद थीं।

☞ **यौन शोषण के खिलाफ बनारस हिंदू यूनीवर्सीटी के छात्रों का धरना :-** बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी यानी बीएचयू एक बार फिर यौन शोषण को लेकर इस साल सुर्खियों में रहा। पिछले साल नवंबर में आईआईटी बीएचयू के परिसर में अध्ययनरत एक बीटेक छात्रा के साथ परिसर में हुए यौन उत्पीड़न का मामला सामने आने के बाद हजारों विद्यार्थी धरने पर बैठ गए। विद्यार्थियों ने आरोपियों के जल्द से जल्द गिरफ्तारी के लिए शांतिपूर्ण धरना किया। कैंपस में पोस्टर हाथ में लिए विद्यार्थियों ने सुरक्षा के कड़े इंतजाम को बढ़ाने और GSCASH को लागू करने की मांग रखी। बता दें कि बीएचयू में 2017 में हुए लड़कियों के ऐतिहासिक आंदोलन की सबसे बड़ी मांग विश्वविद्यालय में जेंडर सेंसिटाइजेशन कमेटी अगेंस्ट सेक्सुअल हैरेसमेंट (GSCASH) को लागू करना था। इसके बाद भी यौन शोषण को लेकर हुए कई बड़े प्रदर्शनों में छात्रों ने सुरक्षा व्यवस्था के पुख्ता इंतजाम के साथ ही GSCASH की मांग रखी लेकिन प्रशासन ने आज भी करीब पांच साल बीत जाने के बाद भी इस पर कोई सुनवाई नहीं की। इसके उलट लड़कियों पर हॉस्टल में तमाम पाबंदियां लगाने की कोशिश की गई। छात्रों को प्रदर्शन में भाग न लेने का नोटिस निकाल दिया गया और बात-बात पर लड़कियों को कैंपस के अंदर ही 'कैरेक्टर-सर्टिफिकेट' बांटे जाने लगे। जिसके खिलाफ छात्र खुलकर सामने आए। (साभार)

नए बने कानून की सफलता राज्य सरकारों पर निर्भर

● त्रिलोकी नाथ प्रसाद

भाजपा मीडिया प्रभारी डॉक्टर लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल ने कहा है कि त्वरित न्याय के लिए कानून समय सीमा में बंधे हैं। एफ आई आर से लेकर फैसला सुनाने तक की निश्चित अवधि 120 दिनों की है। देरी से मिला न्याय न्याय नहीं कहा जा सकता। रसूखदार अभियुक्त मौत के दिनों तक कि मुकदमा लटकाए रखते हैं ,और मुकदमा की शुरुआत होती है आरोपी को अदालत में चुनौती देने और आरोप मुक्त हो घोषित करने की मांग से अगर किसी मामले में ज्यादा आरोपी हैं तो वह एक-एक करके आरोपी मुक्त होने की अर्जी देते हैं और मामला वर्षों लटका रहता है लेकिन अब ऐसा नहीं होगा। लेकिन अब ऐसा नहीं होगा नए कानून के तहत आरोपित इस व्यवस्था में 7 दिन के अंदर ही अपील कर सकता है। न्यायाधीश को 7 दिन में सुनवाई पूरी करनी होगी इस व्यवस्था से 120 दिनों के अंदर केस ट्रायल पर आ जाएगा। सीआरपीसी में बार्गेनिंग के लिए भी कोई समय सीमा तय नहीं है। लेकिन नए कानून में कहा गया है कि अगर आरोप तय होने के 30 दिनों में आप गुनाह स्वीकार कर लेंगे तो सजा कम होगी। बार्गेनिंग को तीस दिनों में समाप्त करना होगा। केस में दस्तावेजों की प्रक्रिया को भी 30 दिन में पूरा करना होगा ।अब फैसला देने की भी समय सीमा तय है। ट्रायल पूरा होने और मामले में बहस पूरी होने के बाद अदालत को 30 दिन में फैसला सुनाना होगा। लिखित रूप से कारण दर्ज करने पर फैसला देने की अवधि 45 दिन तक हो सकती है, लेकिन इससे ज्यादा नहीं। कानून में दया याचिका के लिए भी समय सीमा तय की गई है, सुप्रीम कोर्ट में अपील खारिज करने के 30 दिन में ही दया याचिका दाखिल करनी होगी। विभिन्न स्तरों पर समय सीमा तय करने के साथ ही इलेक्ट्रानिक माध्यमों से साक्ष्य और गवाहियां मुकदमे की गति देगी।

पुराने कानून के अनुसार दीवानी मुकदमों में 3 तारीख से ज्यादा स्थगन नहीं हो सकता है, बावजूद मुकदमों का निपटारा तीन पीढियां से भी ज्यादा समय में हो रहा है। नए कानून लागू की तारीख तय करने के बाद बड़े पैमाने पर किताब का प्रकाशन करना होगा इसके साथ वकील, पुलिस और जजों को ने कानून के अनुसार जानकारी और प्रशिक्षण देने की जरूरत होगी। संविधान के अनुसार कानून और व्यवस्था राज्यों के अधीन है जिला अदालत्तो का सिस्टम हाई कोर्ट के अधीन है जिनके संसाधन और इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए राज्य सरकार है जवाब देह है। तारीख पर तारीख के मर्ज को खत्म करने के लिए कानून में बदलाव के साथ जज और न्यायपालिका को भारतीयकरण जरूरी है। समय सीमा के भीतर मुकदमा करने प्रारंभ नहीं करने वाले जजों को नकारात्मक रेटिंग हो। गलत गिरफ्तारी पर

पुलिस और जांच एजेंसियों की जवाब देही हो। झूठे मुकदमा करने वालों के खिलाफ दंड और जुर्माना का प्रधान होना चाहिए तथा निर्दोष को जेल भेजने पर डीएसपी,एसपी को जवाब देही तय करनी होगी। भारतीयों के जल्द न्याय के लिए अधिकार को कानून में शामिल करने पर ही आम जनता को तारीख पे तारीख से मुक्ति मिलेगी। डॉ लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल ने कहा कि कानून ऐसी हो कि निर्दोष जेल न जाए। निर्दोष को जेल भेजने वालों से लेकर सुपरविजन करने वाले पदाधिकारियों को भी जेल भेजना होगा। बताया जाता है कि 75% से ज्यादा निर्दोष व्यक्ति ही जेल में रहते हैं। इसके लिए सीआईडी से जांच करवा कर निर्दोषों को जेल से बाहर कर देना चाहिए। ●

फतुहा होते हुए किऊल तक बिछेगी तीसरी और चौथी लाइन

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

पंडित दीनदयाल उपाध्याय जंक्शन से पटना होते पटना साहिब, फतुहा, खुसरूपुर,बख्तियारपुर, बाढ़ मोकामा होते हुए तीसरी और चौथी लाइन एक साथ होगा। वर्ष 2024 में ही दोनों लाइनों के निर्माण को शुरू करने की भी योजना है। जनवरी में ही सर्वे का काम शुरू करेंगी। दो नई लाइन के निर्माण से ट्रेनों के विलंब परिचालन में से मुक्ति मिलेगी। 390 किलोमीटर के इस रेलखंड पर तीसरी और चौथी लाइन बनाने की मंजूरी रेल मंत्रालय की ओर से मिल चुकी है। कोईलवर पुल का विकल्प भी तैयार किया जाएगा, क्योंकि यह अंग्रेजो के जमाने का पुल है जिसके ऊपर से रियल लाइन गुजरती है। दो नई लाइन को बिछाने के लिए सोन पर नया पुल तैयार किया जाएगा। लेट लतीफे को कम करने के साथ ट्रेन की गति क्षमता बढ़ाने पर भी जोर दिया जा रहा है। इस नई लाइन पर हाईएस्ट स्पीड ट्रेनें चलाई जाएगी। अभी इस रेल खंड पर 110-130 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलती है,जिसे 160 किलोमीटर तक बढ़ाने की योजना है। बताया जाता है कि वह ट्रैक अग्रेंजों के जमाने का है, इसलिए नए ट्रैक पर ही ट्रेनों कि गति को 160 किलोमीटर प्रति घंटे पर कि रफ्तार तक पहुंचाना संभव है।

वर्तमान में पटना की किऊल रेलखंड पर ट्रेनों का दबाव काफी अधिक है अक्सर ट्रेन समय से नहीं चलती है। बताया जाता है कि एक्सप्रेस ट्रेनों को पास करने के लिए कई बार सवारी गाड़ियों को घंटों किसी जंक्शन पर रोकना पड़ता है। इससे भी मुक्ति मिलेगी और सवारी गाड़ियों का समय से परिचालन भी हो सकेगा। ट्रेनों के विलंब होने का कारण पटना जंक्शन से क्षमता से अधिक ट्रेनों को खोलने और गुजरना भी है प्लेटफार्म खाली नहीं होने के कारण कुछ देर के लिए कभी-कभी ट्रेनों को रोकना पड़ता है जब जून नई रेल लाइन का निर्माण हो जाएगा इससे काफी हद तक मुक्ति मिलेगी। इसके लिए गोपाल जी बीज दुकान, भाजपा मीडिया प्रभारी डॉ लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल, भाजपा जिला मंत्री शोभा देवी ,अनील कुमार शर्मा, अनामिका पाण्डेय, शोभा पटेल, ममता पटेल, टीपू सिंह, लक्ष्मण साहू जितेंद्र मिस्त्री, सत्येंद्र पासवान आदि ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को बधाई दी है।●

होम्योपैथी से संवारे चेहरे को लेकर स्वास्थ्य शिविर आयोजित

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

भाजपा कार्यालय मां तारा उत्सव पैलेस गोविंदपुर फतुहा में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया जिसका अध्यक्षता भाजपा नगर उपाध्यक्ष अनील कुमार शर्मा तथा मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल, भाजपा जिला मंत्री शोभा देवी, मुख्य अतिथि डॉ लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल ने संबोधित करते हुए कहा कि आज के बदलते परिवेश में हर कोई सुंदर दिखना चाहता है चाहे वह स्त्री हो या पुरुष हर किसी की चाहत होती है कि उसकी सुंदरता में निरंतर वृद्धि हो, चेहरा कांति में बना रहे, अच्छा दिखे एवं खिला रहे हैं, लेकिन कभी-कभी ऐसा भी होता है कि चेहरे के सौंदर्य को ग्रहण लग जाता है। चेहरा कुरूप होने के कारण व्यक्तित्व पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है,हीन भावना आती है।

होम्योपैथी दवाइयां चेहरे के सौंदर्य को बरकरार रखनी ही है उसको लो लावण्यमय, कांतिमय और खुबसुरत बनाने में भी सहायता करती है। किसी महिला के गालों पर एक काला तिल हो तो वह उसके सौंदर्य में चार चांद लगा सकता है, परंतु यदि चेहरे पर अनेक तिल हो जाए तो एक चेहरे का भाड़ा बना देते हैं होम्योपैथी में ऐसे अनेक दवाइयां है जो आपके चेहरों के तिलों से निजात दिला सकती है। तिलों में राहत प्राप्त करने के लिए दवा का नाम थुजा 30, कास्टिकम 30 आदि दवाइयां लाभदायक है। नवयुवक यूवतियों के चेहरे के दुश्मन होते हैं मुहांसे, फूल जैसा चेहरा मुंहासे से मुर्झा जाता है और कांतिहीन हो जाता है। मुंहासे से निजात पाना है तो होम्योपैथिक दवाइयां लड़की को कैलकेरिया

कार्बन सी एम एम महीना में एक बार लेना है। एलेटेरिस 30 एक बूंद तीन बार रोज लेना चाहिए, कैली बाईक्रोम 30 एक बूंद तीन बार रोज लेना। गैस्ट्रिक रहने पर कार्बो वेज 30 एक बूंद तीन बार रोज।

खूबसूरत ,दमकने हुए चेहरे वाली किसी युवती के गालों पर, काली काली झाइयां चेहरे की रंगत को उड़ा देती है। चेहरे पर उगने वाले मस्से चेहरे को बदसूरत बना देते हैं। दवा निम्न प्रकार है गर्दन में रहने पर थुजा 200 एक बूंद एक बार रोज लेना है। नाइट्रिक एसिड 30 एक बूंद तीन बार रोज। तलहथी में नेट्रम म्यूर 200 एक बूंद एक बार रोज। असमय बाल गिरना भी आपकी खूबसूरती को कम कर देता है कभी-कभी बालों का गिरना अनुवांशिक होता है तो कभी-कभी बीमारी के कारण ऐसा होता है। होम्योपैथिक दवाइयां बाल गिरने की गति को रोक देती है। यदि बाल के गुच्छे झड़ते हैं तो फास्फोरस यदि रुसी के कारण बाल कम हो तो थुजा तथा चिंता या मानसिक अवसाद के कारण बाल गिर रहे हैं तो एसिड फास, महिलाओं को गर्भावस्था के दौरान बाल झड़ रहे हैं तो सीपीया आदि दवाइयां प्रयोग कर बालों के तेजी से झड़ने से रोका जा सकता है। बालों को तेजी से बढ़ने और चमक लाने के लिए विस्बैडन दवा लाभदायक साबित हो सकती है। काले, लहराते बाल जहां महिलाओं की खूबसूरती में चार चांद लगा देते हैं, वही काले बालों पर पुरुषों को भी नाज होता है, बाल और असमय सफेद हो जाए तो दिल पर क्या गुजरेगी, होम्योपैथिक दवाइयां बालों को सफेद होने से रोक सकती है दवा का नाम है थायारोडिनम 30, लाइकोपोडियम 30, एसिड फास 30, फास्फोरस 30जैसी दवाइयां आपको इस समस्या से निजात दिला सकती है।

होम्योपैथिक दवाइयां आपके सुंदर में चार चांद लगा सकती है बर्शते योग चिकित्सा के परामर्श पर ली जाए और उसका नियम से प्रयोग किया जाए। ओठ काले-फास्फोरस 30 एक बूंद तीन बार रोज लेना है। आंख के चारों ओर गहरे दाग चायना 30 एक बूंद तीन बार रोज। एड़ी का जाड़े के मौसम में फटना पेट्रोलियम 200 एक बूंद एक बार रोज लेना है। कोई भी दवा चिकित्सा सलाह से ही इस्तेमाल करें। इस अवसर पर पुजा कुमारी,अनीस कुमार, अंजली कुमारी,पुनम पटेल आरती पटेल,निशांत पटेल, ममता पटेल,अनामिका पटेल, शोभा पटेल, रंजीत प्रसाद आदि मौजूद थे।●

अभी कलम उठाइये

आपके सामने हो रहे भ्रष्टाचार एवं अपराध की खबर की समीक्षा करें और सरकार सहित पुलिस-प्रशासन तक उसको पहुंचाने के लिए केवल सच पत्रिका के साथ जुड़े। खबर की जानकारी इस नम्बर पर दें

सम्पर्क करें:- 9431073769/9955077308

ई-मेल:- editor.kstimes@rediffmail.com पर भेजें।

जमुई की उपलब्धियां

जमुई जिला झारखण्ड राज्य के सीमावर्ती जिला होने के कारण तथा जैन मताबलंबियों के पर्यटन स्थल होने के कारण प्रशासनिक, राजनीतिक एवं धार्मिक दृष्टीकोण से काफी महत्वपूर्ण है। जिले में आधारभूत संस्थाओं के निर्माण के साथ साथ अन्य सभी बुनियादी विकास संबंधी कार्यों को अंजाम देते हुए विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट उपलब्धियां हासिल की गयी हैं एवं की जा रही हैं। प्रस्तुत है पत्रिका प्रतिनिधि अजित त्रिपाठी की रिपोर्ट :-

जमुई जिले का भौगोलिक क्षेत्र इस प्रकार का है कि यहाँ पर्यटन की काफी संभावनाएं हैं, जमुई जिलान्तर्गत खैरा, प्रखंड स्थित गरही डैम में पर्यटक सुविधाओं के विकास हेतु पर्यटन विभाग, बिहार सरकार के द्वारा लगभग 10 करोड़ 78 लाख रूपये की योजनाओं की स्वीकृति प्रदान की जा चुकी है, जिसके अंतर्गत गरही डैम को एक महत्वपूर्ण पर्यटक स्थल के रूप में विकसित करने हेतु इस योजना के अंतर्गत प्रवेश द्वार का निर्माण, बाउंड्री वाल, चेन लिंक, फेंसिंग व्यूइंग पॉइंट, रिक्रियेश्नल जोन (recreational zone), नेचर स्पॉट एवं पिकनिक एरिया इत्यादि के निर्माण करने का कार्य किया जाना है। यह प्रयास पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र बनेगा द्य जमुई जिला में इसके अतिरिक्त सात अन्य प्रमुख पर्यटन स्थलों (लछुआड़, नागी, नकटी, पंचपहाड़ी, पत्नेश्वर, गरही एवं सिमुलतला) को प्लास्टिक मुक्त क्षेत्र बनाने एवं पर्यटन के दृष्टिकोण से और अधिक विकसित करने का कार्य किया जा रहा है।

☞ बिहार राज्य खेल प्राधिकरण, बिहार, पटना के द्वारा ताइक्वांडो खेल विधा के संवर्द्धन एवं विकास के लिए गैर आवासीय प्रशिक्षण केंद्र खोले जाने हेतु जमुई जिला का चयन किया गया है जो कि इस जिले के लिए बड़ी उपलब्धि है।

☞ जमुई जिला में पहली बार 'खेलो इंडिया' योजना अंतर्गत स्थानीय श्री कृष्ण सिंह स्टेडियम परिसर में 60 मीटर ◦ 40 मीटर ◦ 12.5 मीटर का मल्टीपरपज हाल एवं 08 लेन का सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक के निर्माण हेतु कार्रवाई की जा रही है, जो की जमुई जिला के खिलाडियों के लिए मील का पत्थर साबित होगा।

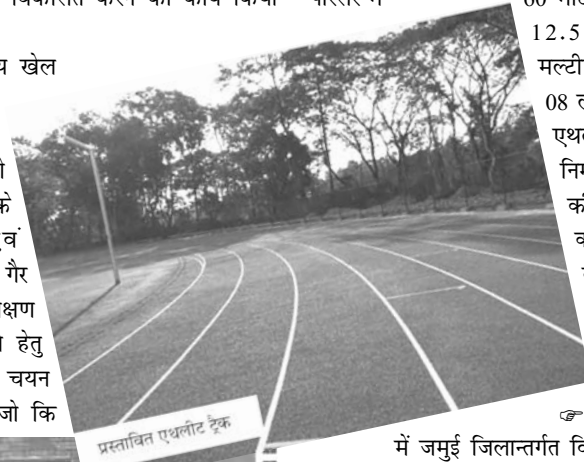

प्रस्तावित एथलीट ट्रैक

☞ स्वास्थ्य विभाग में जमुई जिलान्तर्गत विभिन्न अस्पताल परिसरों के उन्नयन के साथ ही अन्य स्वास्थ्य संबंधी सुविधाओं को बढ़ाने का कार्य जारी है, जिसमें पहली बार सदर अस्पताल जमुई में 10 बेड का ICU बनकर तैयार हो गया है जिससे जमुई जिला के लोगों को काफी उन्नत स्वास्थ्य सुविधाएँ प्राप्त होती रहेंगी।

☞ आकांक्षी जिला कार्यक्रम अंतर्गत सूचीबद्ध विषयों पर कार्य करते हुए जमुई जिला को पहली बार पूरे भारतवर्ष में शिक्षा के क्षेत्र में नीति आयोग के डेल्टा रैंकिंग में द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ है जो कि जमुई जिला के लिए एक बड़ी उपलब्धि है।

☞ जमुई जिला के 1271 टोलों में लगभग 450 करोड़ रूपये की राशि व्यय कर नलजल योजना से गैर आच्छादित इलाकों में पेयजल पहुँचाने की

व्यवस्था की जा रही है इसी प्रकार फ्लोराईड प्रभावित क्षेत्रों में जलशोधन यंत्र के अधिष्ठापन का कार्य भी तेजी से किया जा रहा है।

☞ जमुई जिला के लक्ष्मीपुर प्रखंड अंतर्गत हरला पंचायत में जिला जल एवं स्वच्छता समिति जमुई के सहयोग से हरला पंचायत को ट्रेनिंग लर्निंग सेंटर के रूप में विकसित किया गया है जिसके प्रतिफल के रूप में बिहार राज्य के अन्य जिलों से स्वच्छता की टीम आकर जमुई जिले से स्वच्छता के गुर सीख रहे हैं। हरला पंचायत में ही अपशिष्ट प्रसंस्करण इकाई, प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन इकाई एवं गोबरधन प्लांट की स्थापना की गयी है। वर्तमान में गोबरधन गैस प्लांट से 50 से अधिक घरों को बायोगैस सस्ते दरों पर उपलब्ध कराया जा रहा है साथ ही किसानों को भी जैविक खाद उपलब्ध कराया जा रहा है द्य

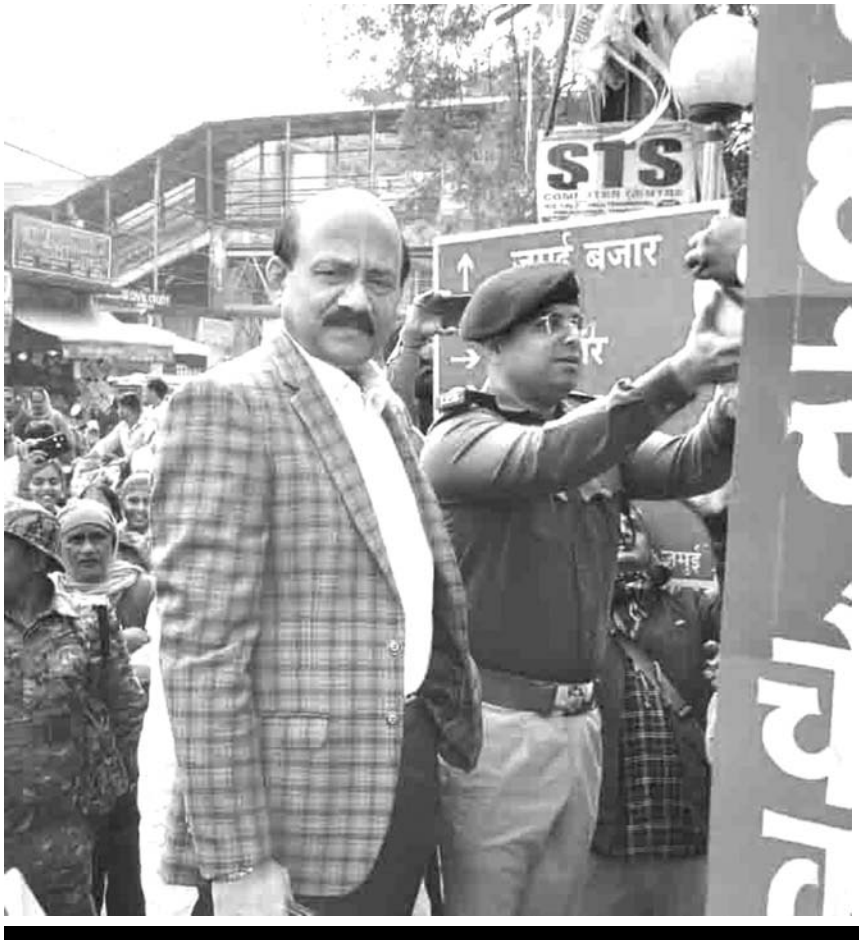

जिलाधिकारी
जमुई

FACCI SANITAION AWARD - 2023 में लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान अंतर्गत जमुई जिले में किये गए कार्यों को सराहा गया।

☞ जमुई जिला में पहली बार महिला रग्बी खेल का आयोजन सफलतापूर्वक संपन्न कराया गया, जिससे जिले का मान सम्मान भी बढ़ा साथ ही महिला सशक्तिकरण का एक नायब उदाहरण भी स्थापित हुआ।

☞ जमुई शहर के सौंदर्यीकरण हेतु अथक प्रयास किया जा रहा है जिसके तहत बुडको (Bihar Urban Development Corporation) के द्वारा सीवरेज प्लांट का टेंडर की प्रक्रिया पूर्ण कर ली गयी है अब कार्य प्रारंभ किया जायेगा द्य साथ ही जाम की समस्या के सुधार हेतु पहली बार जिले में यातायात थाना एवं तीन (खैरा, महिसौडी एवं कचहरी चौक) ट्रैफिक पोस्ट का निर्माण किया गया है।●

सनातनियों के नववर्ष युगाब्द

● प्रो० रामजीवन साहू

यह सच है कि सिर्फ तारीख बदलने से नया वर्ष नहीं हो जाता है, परन्तु भारत के शहर के कुछ प्रतिशत लोग ईसाई नव वर्ष को भी नव वर्ष मान ही नहीं लेते, ब्लकि उसके एकाध पद्धति को अपना भी लिए हैं। नव वर्ष तो तब होता है, जब तारीख के साथ -साथ जलवायु, प्रकृति, दैनिक जीवन में परिवर्तन के साथ -साथ रहन-सहन में भी नयापन आ जाता है। फूल के पौधों में फूल खिल जाते हैं। इस समय न जाड़ा न गर्मी रहती है। रात्रि में कहीं भी आराम से सो सकते हैं। लेकिन एक जनवरी में कोई परिवर्तन नहीं दिखाई पड़ती है, फिर भी वे लोग कह रहे हैं आज नया वर्ष आ गया है।

सनातनियों का नव वर्ष युगाब्द (5125 है), बिक्रम सम्बत (2080 है) ,शक सम्बत (1945 है)। इन सबों के नव वर्ष का प्रथम दिन चौत्र मास के शुक्ल पक्ष प्रथमा से प्रारम्भ होता है। इस समय बसंत ऋतु रहता है। बसंत ऋतु ऋतुओं का राजा कहा जाता है। इस समय सम्पूर्ण वातावरण खुशनुमा हो जाता है। इस समय लगता है प्रकृति भी अपने -अपने स्तर से नव वर्ष को स्वागत के लिए तत्पर है। पौधों में फूल निकल आते हैं। मन्द-मन्द सुगंधित हवा चलने लगती हैं। चैत्र शुक्ल पक्ष प्रथमा के दिन से ही बासंती दुर्गा पूजा आरम्भ हो जाता है।फसल कटने लगते हैं। नया अनाज बाजार में उपलब्ध हो जाते हैं। कहीं भी बिना अतिरिक्त व्यवस्था के कहीं भी आ-जा सकते हैं, क्योकि इस समय न कंपकपाने वाली सर्दी पड़ती है और न छिलमिलाने वाली गर्मी पड़ती है। खुले में भी कहीं आराम से सोया जा सकता है। इसको कहते हैं नव वर्ष। दुनियां का सबसे पुराना सम्बत युगाब्द है। इसलिए सनातनी युगाब्द को नव वर्ष मानते हैं। एक जनवरी को नव वर्ष मनाना अत्यंत ही दु:खदायी है। इस नव वर्ष को मुख्यरूप से वही मनाते हैं, जिनके बच्चे अंग्रेजी विद्यालय में पढ़ते हैं। इनका हाल चौथेपन में कहने योग्य नहीं रह जाता है। एक समय बड़े गर्व से सीना फुलाकर कहा करते थे कि मेरा पुत्र और पुत्री अंग्रेजी विद्यालय में पढ़ता है । जब वे चौथेपन में आ जाते हैं, तब धीमी स्वर में अपने किसी रिश्तेदार को नहीं, बल्कि पराये व्यक्ति को कहते हैं कि मैं अपने पुत्र को अंग्रेजी विद्यालय में पढ़ाकर बहुत बड़ी गलती की है। ऐसा मैं इसलिए कहता हूँ कि वहाँ मातृ-पितृ देवो भव् नहीं सिखाया जाता है। ऐसी शिक्षा नहीं दी जाती है, जिसके कारण उसमें माता-पिता का सेवा करने का संस्कार नहीं मिलता है। जब संस्कार ही नहीं मिलेगा, तो वह माता-पिता की सेवा कैसे कर सकता है।

एक व्यक्ति भगवान का बहुत बड़ा भक्त था। वह बड़ी श्रद्धा और ईमानदारी के साथ भगवान की पूजा करता था, इसलिए भगवान उनके सभी इच्छाओं की पूर्ति कर देते थे। एक बार वह अर्थ संकट में पड़ गया। इसलिए मंदिर जाकर उसने भगवान से कहा हे कृपानिधान! मैं आजकल अर्थ संकट से जूझ रहा हूँ। अत: भगवान मेरे ऊपर दया की वर्षा कीजिये? दूसरे ही दिन भगवान ने उसके आंगन में जल से भरा सोने का एक बड़ा कलश रख दिये। प्रात:काल उठते ही उस व्यक्ति की दृष्टि आँगन में पड़े स्वर्ण कलश पर पड़ी। उसने भगवान को धन्यवाद दिया। उसके बाद उसने कलश के जल को गिरा दिया और स्वर्ण कलश को बाजार में बेच दिया। उससे उसने सर्वप्रथम बकाये राशि का भुगतान किया, फिर एक अच्छा सा भवन का निर्माण करवाया। अब भाई आराम से रहने लगा। कुछ वर्षों के बाद ही सभी भाइयों के बीच भयंकर विवाद खड़ा हो गया। विवाद इतना बढ़ गया कि भगवान के उस भक्त का जीना दूभर हो गया। वह इतना विवस हो गया कि वह पुन: मंदिर जाकर भगवान से शिकायत किया कि हे दयानिधि! आपने जो स्वर्ण कलश दिया वह अब मेरे लिए खतरनाक साबित हो रहा है। भगवान ने कहा अरे मुर्ख! तुमने तो दिखावटी वस्तु को स्वीकार किया और जिससे सबों को संस्कार मिलता उसे तूने पानी समझ कर फेंक दिया। जिसके कारण यह परिस्थिति उत्पन्न हो गयी है। आज अंग्रेजी विद्यालय में बच्चों को पढ़ाने वालों के साथ यही हो रहा है। अत: किसी भी व्यक्ति को चौथेपन में सभी प्रकार की सहायता की आवश्यकता होती है। इसलिए बच्चों को वही शिक्षा देना चाहिए, जो आपके बुढ़ापा में सहयोगी बने। जनवरी प्रथम को नववर्ष मानना सर्वथा अनुपयोगी है।●

गर्भ में माता-पिता की भाषा सीख जाते हैं बच्चे

● डॉ० लक्ष्मीनारायण सिंह

भाजपा कार्यालय मां तारा उत्सव पैलेस गोविंदपुर फतुहा में स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया जिसका मुख्य अतिथि सुप्रसिद्ध होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ लक्ष्मी नारायण सिंह पटेल ने कहा कि अमेरिका में हुए अध्ययन में यह बात सामने आई है। बताया गया है की मां के पेट में 5 से 7 महीने के समय के दौरान शिशु गर्भ से बाहर आवाज सुनने की क्षमता विकसित हो जाती है। इस अध्ययन को साइंस एडवांस में प्रकाशित किया गया है। अध्ययन के लिए शोध कर्ताओं ने माता के गर्भ में पलने वाले शिशु और उनके पैदा होने के बाद 105 दिन तक अध्ययन किया, इसमें उन्होंने एगका उपयोग किया, उन्होंने पाया कि दिमाग की तरंगों से भाषा और बोलने की क्षमता समझी जा सकती है ,इसलिए उन्होंने नवजातों के दिमाग के संरचना का अध्ययन किया। अध्ययन में नवजातों को कुछ प्रचलित गाने सुनाए गए और उनके सिर पर इलेक्ट्रोड दिमाग में के उन हिस्सों के पास लगाए गए जिनका सुनने,बोलने की समझ से संबंध रखता है, इससे मस्तिष्क की तरंगों के बदलाव को एग के जरिए रिकॉर्ड किया गया। परंपरागत तौर पर नवजात शिशुओं को सार्वभौमिक श्रवण करता माना जाता है जो किसी भी भाषा सीखने में सक्षम है। पैदा होते ही पहचाने लगते हैं खास सवाल, नवजात शिशुओं का दिमाग पैदा होते ही भाषा की खास सामाजिक पहचान में विशेषज्ञ हासिल करने लगता है। इसमें भ्रूण 5 से 7 महीने तक का समय के दौरान घर से बाहर आवाज सुनने की क्षमता का बहुत महत्व है। जन्म का पहला साल अहम है। अध्ययन के बाद शोध कर्ताओं ने बताया कि शिशु के जन्म का पहला साल ही भाषा की क्षमताएं सीखने के लिए लिहाज से बहुत अहम माना जाता है अध्ययन में बताया गया है कि नवजात शिशु को उसे भाषा के बारे में पहले से ही जानकारी होती है जिससे उनका सामना गर्भकाल के दौरान ही होता है यह नतीजा नवजात शिशुओं के भाषा के अनुभव के आधार पर जुटाए गए सबसे अच्छे प्रमाण माने जा रहे हैं शोधकर्ताओं का कहना है कि यह प्रमाण शिशुओं का जन्म से पहले के दिमाग की क्रियात्मक जानकारी दे रहे हैं वैज्ञानिक इससे मस्तिष्क विकास और भाषा सीखने की क्षमता पर शुरुआती जीवन के प्रभाव की समझ के लिहाज से बड़ी उपलब्धि मान रहे हैं।●

महामहिम राज्यपाल को डीएन मिश्रा ने दिए ज्ञापन

● अरविंद मिश्रा

नवादा विधि महाविद्यालय के प्राचार्य और मगध विश्वविद्यालय के विधि संकाय के डीन डॉ0 डी0एन मिश्रा जी बिहार के महामहिम राज्यपाल से बुधवार को मिलकर नवादा के लॉ कॉलेज में एल 0एल0 एम0 की शीघ्र पढ़ाई शुरू करने के लिए अनुरोध किए हैं, इसके साथ महामहिम महोदय को दिए गए ज्ञापन में, डॉ0 डी0 एन मिश्रा ने नवादा विधि महाविद्यालय में नए पुस्तकालय का उद्घाटन और मुख्य द्वार का उद्घाटन करने का भी अनुरोध किए है, जिस पर महामाहिम राजपाल महोदय ने सुकृति प्रदान की है, जिसके लिए जल्द ही तिथि निर्धारित भी की जाएगी, महामहिम से घंटो मुलाकात के बाद जहां एल एल एम की पढ़ाई जल्द शुरू करने के लिए महामहिम द्वारा आश्वाशन दिया गया है, वही महाविद्यालय के शैक्षणिक व्यवस्था को बेहतर बनाने तथा कानून की पढ़ाई को उच्च शिक्षा दिलाने आदि कई बिंदुओं पर भी चर्चा हुई है,और डॉ0 डी०एन० मिश्रा जी, अंग वस्त्र और भगवान विष्णु का चरण चिन्ह का प्रतीक महामहिम राज्यपाल को भेंट किए, डॉ0 डीएन मिश्रा ने कहा कि महामहिम राज्यपाल महोदय ने नवादा विधि महाविद्यालय को उत्कृष्ट महाविद्यालय बनाने के लिए हर सहयोग का आश्वासन दिए हैं, नवादा विधि महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ0 डी0एन मिश्रा जी के प्रयास से नवादा विधि महाविद्यालय में पिछले वर्ष 2023 में आयोजित एक सेमिनार जो एक्सपेंडिंग हरिजन ऑफ जुडिशल

एक्टिविटीज इन इंडिया विषय पर आयोजित कार्यक्रम की गई थी, उस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि मगध विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर शशि प्रताप शाही थे, कुलपति महोदय ने भी नवादा विधि महाविद्यालय में जल्द ही एल एलएम की पढ़ाई शुरू करने के लिए आश्वासन दिए थे, यह बता दें कि डॉ0 डी0एन मिश्रा जी अदम्य साहस के धनी व्यक्तित्व हैं, सामान्य परिवार से उन्होंने अपना जीवन व्यतीत किया, और उनके दिल में सदैव शिक्षा के क्षेत्र में बहुत कुछ करने का जज्बा था, और कहा गया है होनहार बिरवान के होत चिकने पात, वैसे व्यक्ति को बचपन में ही प्रभु विलक्षण प्रतिभा दे देते हैं, और इस विलक्षण प्रतिभा साहस और मेहनत के बदौलत व्यक्ति उसे मंजिल पर पहुंच जाता है जहां उसकी चाह होती है, और डॉ0 डीएन मिश्रा जी ने भी अपने मेहनत ,परिश्रम और अनंत कठिनाइयों के बाद भी लॉ कॉलेज स्थापित करने में सफल रहे, यह लॉ कॉलेज एक प्रतिष्ठित आई0 एस 0ओ0 प्रमाणित संस्थान है, जो बी,सी,आई नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त है, इस लॉ कॉलेज की स्थापना 19 88 में नवादा में ही हुई थी, आज नवादा विधि महाविद्यालय अपने उत्कृष्ट कार्य, गुणवत्ता शिक्षा के लिए, अनुशासन के क्षेत्र में भी, विधि व्यवस्था एवं विद्यालय के कुशल प्रबंधन के वजह से मगध के लिए ही नहीं बिहार में भी अपना एक स्थान बना चुका है, विधि महाविद्यालय में प्रतिवर्ष गण्यमान्य विभूतियां का आना-जाना सेमिनार में बना रहता है, जिसमें कई प्रशासनिक पदाधिकारी ,मंत्री कुलपति पूर्व मुख्यमंत्री सांसद, विधायक सामाजिक कार्यकर्ता पत्रकार, न्यायिक पदाधिकारी आते रहते हैं, जिससे महाविद्यालय की गरिमा और भी बन जाती है, महाविद्यालय में अतिथियों का स्वागत की परंपरा इतनी शानदार रहती है की, हर आए अतिथि पुन: आने के लिए उत्सुक रहते हैं, प्रतिवर्ष विभिन्न मुद्दों पर सेमिनार के द्वारा नई जानकारियां भी विधि महाविद्यालय द्वारा मिलता रहता है, नवादा बासी दिल से कहते हैं की यह महाविद्यालय और भी उत्कृष्ट और ऊंचाइयों पर पहुंचे, ताकि नवादा का भी नाम बढ़ता रहे, आज नवादा के विधि महाविद्यालय में एल, एल एम की की पढ़ाई शुरू जल्द होने की संभावनाओं को देखते हुए विधि महाविद्यालय में और आसपास में खुशी का लहर देखने को मिल रहा है।●

अपर मुख्य सचिव शिक्षा विभाग पहुचे नवादा

प्रशिक्षण ले रहे नवनियुक्तफ शिक्षकों को दी नसीहत, कहा-बच्चों को पढ़ाना हीं होगा

● मिथिलेश कुमार

बिहार शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव के के पाठक राज्य की शिक्षा प्रणाली को बेहतर करने के उद्देश्य से लगातार स्कूलों और अन्य संस्थानों का दौरा कर रहे हैं। इसी सिलसिले में नवादा पहुंचते ही के के पाठक ने नव नियुक्त शिक्षकों से कहा कि बिहार में अधिकतर स्कूल गांवों में हैं। चूंकि राज्य में 90 प्रतिशत स्कूल गांवों में हैं, इसलिए आप सभी को भी गांवों में ही रहना होगा। इसलिए इसकी तैयारी कर लें। उन्होंने नवनियुक्त शिक्षकों से कहा कि आप लोगों को गांव में रहने के साथ ही बच्चों को अच्छी शिक्षा भी देनी होगी। इसके पूर्व नवादा पहुंचने पर के के पाठक का जोरदार स्वागत किया गया। पाठक ने कहा कि आप एक अच्छे शिक्षक के रूप में स्कूल जाएंगे तो वहां पर बच्चों को बेहतर शिक्षा भी दीजिएगा। काम में किसी भी प्रकार का कोई कटौती नहीं कीजिएगा। के. के. पाठक ने बिहार के सीएम नीतीश कुमार की तारीफ करते हुए कहा कि नौकरियों का पिटारा खुल चुका है। अब बहुत जल्द पटना के गांधी मैदान में फिर से नियुक्ति पत्र बांटा जाएगा। के के पाठक अचानक देर रात नवादा के डायट भवन पहुंचे और वहां पर बीपीएससी के शिक्षकों को संबोधित किया। शिक्षकों को संबोधित करते हुए पाठक ने कहा कि पहले लोग 50 फीसदी स्कूल जाते थे लेकिन अब 100 फीसदी लोग स्कूल जाते हैं। शिक्षकों का दायित्व है कि बच्चों को टाइम दें। अपर मुख्य सचिव एक निजी होटल से निकले और अपने वाहन पर बैठकर चलते रहे। के के पाठक के साथ डीएम आशुतोष कुमार वर्मा, डीडीसी दीपक कुमार मिश्रा, एसडीओ अखिलेश कुमार समेत पदाधिकारी और शिक्षा विभाग के पदाधिकारी उपस्थित थे। के.के. पाठक की एक झलक देखने के लिए लोगों का हुजूम उमड़ पड़ा। पाठक का आगमन होते ही लोगों ने फूल का बरसा कर स्वागत किया। के के पाठक ने सुबह में प्रोजेक्ट कन्या इंटर विद्यालय का निरीक्षण किया ,उन्होंने नीरीक्षण के दौरान प्रधान शिक्षक को आवश्यक निर्देश भी दिया उन्होंने सदर प्रखंड अंर्तगत कादिरगंज मध्य विद्यालय एवं पौरा स्थित उत्क्रमित इंटर विद्यालय का भी निरीक्षण किया। उन्होंने उन्होंने प्रधानाध्यापक को निर्देश भी दिया। प्रधानाध्यापक ने विद्यालय में भवन का निर्माण एवं चहारदीवारी के साथ साथ शिक्षको की कमी के बारे में भी कहा। उन्होंने सभी कमियों को दूर करने का आश्वाशन के

साथ विद्यालय में पठन पाठन को सुव्यवस्थित करने का निर्देश भी दिया। वहीं वारिसलीगंज प्रखण्ड के हाजीपुर, अब्दलपुर एवं मोतालिफ गावँ स्थित विद्यालय का नीरीक्षण किया।उन्होंने बच्चों को जमीन पर बैठ कर पढ़ाई करने पर प्रखण्ड शिक्षा पदाधिकारी एवं प्रधान शिक्षक का वेतन अगले आदेश तक बंद कर दिया है। उन्होंने बच्चों से मध्याह्न भोजन के बारे में भी पूछताछ किया तथा बैगलेस डे में अविभावकों की उपस्थिति के बारे में भी बात किया। अपर मुख्य सचिव के आगमन की खबर से जिले के सभी प्रखंडो में हड़कप मचा हुआ था। कई शिक्षक उनके रूट का भी पता करने में लगे हुए थे।

बहरहाल, शिक्षा विभाग के अपर मुख्य सचिव, श्री के.के. पाठक कल देर रात डायट पहुंचे जहां बीपीएससी से चयनित नव नियुक्त प्रशिक्षु शिक्षकों का मार्गदर्शन दिया। नवनियुक्त प्रशिक्षु शिक्षकों को दायित्व और कर्तव्य का पाठ पढ़ाये। उन्होंने कहा कि शिक्षकों को काम करने की आदत डालनी होगी। अच्छे शिक्षकों को हर जगह प्रतिष्ठा मिलती है। अच्छे ढ़ंग से प्रशिक्षित हों और बच्चों को अच्छी शिक्षा दें। आज 10:00 बजे पूर्वा0 में जिलाधिकारी, पुलिस अधीक्षक, उप विकास आयुक्त, जिला शिक्षा पदाधिकारी आदि के साथ शिक्षा विभाग के द्वारा संचालित योजनाओं/कार्यक्रमों के संबंध में विस्तृत समीक्षा बैठक किये। जिले में भवनहीन विद्यालयों को भवन बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण निर्देश दिए'उन्होंने कहा कि विभागीय मार्ग निर्देशन के अनुरूप लक्ष्य हासिल करना सुनिश्चित करें। तत्पश्चात उन्होंने डायट परिसर का मुआयना किया और पुराने और जर्जर भवनों को साफ कर हरा भरा मैदान बनाने के लिए कई आवश्यक निर्देश दिये। इंडोर स्टेडियम में निरीक्षण के उपरांत कहा कि जो भी भवन आज अनुपयोगी है और जर्जर है उसे हटाकर शिक्षा भवन का निर्माण कराना सुनिश्चित करें। प्रोजेक्ट इंटर विद्यालय का औचक निरीक्षण किये एनसीसी के छात्राओं के द्वारा मार्च पास्ट करते हुए कार्यालय तक ले गई और बुके देकर सम्मानित किये। विद्यालय के कम्प्यूटर रूम, पुस्तकालय एवं शिक्षण कक्ष का भी निरीक्षण किया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि विद्यालय से कचरा को हटायें। शौचालय को साफ रखें, जहां रनिंग वाटर देना सुनिश्चित करें। सभी विद्यालयों में चेतना सत्र, खेल आदि विकसित करने का निर्देश दिये। अपर मुख्य सचिव ने विद्यालयों के निरीक्षण के समय बच्चों से पठन-पाठन के संबंध में फिडबैक प्राप्त किया और शिक्षकों को बेहतर ढ़ंग से शिक्षण

कार्य के लिए कई महत्वपूर्ण निर्देश दिये। आज जिले के 09 विद्यालयों का औचक निरीक्षण किये। लक्ष्य के अनुरूप कार्य नहीं करने के कारण जिला शिक्षा पदाधिकारी, नवादा, प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी नवादा और वारिसलीगंज तथा 04 प्रधानाध्यापकों का वेतन बंद करने का निर्देश दिये। नवादा सदर प्रखंड के उत्क्रमित माध्यमिक विद्यालय पौरा का औचक निरीक्षण किये। उन्होंने कहा कि विद्यालय को सही ढ़ंग से साफ-सफाई कराना सुनिश्चित करें। प्रधानाध्यापक के द्वारा लक्ष्य के अनुरूप कार्य नहीं करने के कारण उनका वेतन अगले आदेश तक स्थगित करने का निर्देश दिये। उन्होंने पुराने भवनों को हटाकर विद्यालय की चहारदिवारी कराने के लिए उप विकास आयुक्त को कई आवश्यक निर्देश दिये। राजकीय मध्य विद्यालय और उच्च माध्यमिक विद्यालय हाजीपुर प्रखंड वारिसलीगंज का औचक निरीक्षण किये। उन्होंने कहा कि विद्यालय के मैदान को समतल बनायें, जिससे कि बच्चे चेतना सत्र और खेल-कूद आदि में बेहतर ढ़ंग से उपयोग कर सकें। यहां 252 बच्चों में से 164 बच्चे उपस्थित पाये गए। लापरवाही और कर्तव्यहीनता के प्रधानाध्यापक अजीत कुमार का वेतन अगले आदेश तक बंद करने का निर्देश दिये।

अपर मुख्य सचिव ने कहा कि प्राथमिक और मध्य विद्यालय में छात्रों के अनुपात में थाली उपलब्ध कराना सुनिश्चित करें। उन्होंने कहा कि प्रत्येक दिन 03:30 बजे अप0 से दक्षता मिशन में कमजोर बच्चों को पढ़ाना सुनिश्चित करें और शनिवार को जॉच परीक्षा और अविभावकों का बैठक बुलाना प्रत्येक विद्यालय में सुनिश्चित करें। उच्च माध्यमिक विद्यालय हाजीपुर में अतिरिक्त कमरों का निर्माण करने का निर्देश दिये। लेकिन फिलहाल पंचायत सरकार के तीन कमरों में शिक्षण कार्य संचालित करने का निर्देश दिये। बेतरकीव ढ़ंग से बने भवनों को ठीक करने का निर्देश दिये। तत्पश्चात् नव सृजित प्राथमिक विद्यालय अवदालपुर (मुशहरी) का औचक निरीक्षण किये। इस विद्यालय में एक वर्ग कक्ष में ताला बंद था, जिसको खोला गया तो काफी संख्या में विद्यार्थियों के लिए पाठ पुस्तक पायी गयी। उन्होंने कहा कि इसमें प्रधानाध्यापक का लापरवाही है जो कि समय पर बच्चों को पाठ पुस्तक उपलब्ध नहीं कराया। उन्होंने अखिलेश कुमार सिंह प्रधानाध्यापक का वेतन अगले आदेश तक बंद करने का निर्देश दिये। इस विद्यालय में 148 बच्चे नामांकित हैं, जिसमें से 101 बच्चे आज उपस्थित थे। किताबों का वितरण और

विद्यालयों का निरीक्षण नहीं करने के कारण प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी वारिसलीगंज का वेतन भी बंद करने का निर्देश दिया गया। लक्ष्य के अनुरूप शिक्षा विभाग द्वारा संचालित कार्यक्रमों को विद्यालय में समयबद्ध ढ़ंग से लागू नहीं करने के कारण जिला शिक्षा पदाधिकारी नवादा का भी वेतन बंद करने का निर्देश जिला पदाधिकारी नवादा को दिया गया। तत्पश्चात् प्राथमिक विद्यालय मल्लीचक का औचक निरीक्षण किया गया जहां 85 बच्चे नामांकित थे जिसमें से 41 बच्चे उपस्थित पाये गए। लेकिन विद्यालय में ब्लैक बोर्ड नहीं था जिसको गंभीरता से लिया गया और कहा कि दो दिनों के अंदर सभी कमरों में बोर्ड का निर्माण करायें। विद्यालय में गंदगी और शौचालय नहीं रहने के कारण प्रधानाध्यापक को हटाकर वरीय शिक्षकों को वित्तीय प्रभार देने का निर्देश दिया। पूर्व प्रधान अध्यापक का भी वेतन बंद करने का निर्देश दिए। विद्यालय में दो कमरे में ताला बंद पाया गया और बच्चे बाहर ओसारे में पढ़ रहे थे। उन्होंने प्रधानाध्यापक को निर्देश दिया कि अपना कार्यालय बाहर करें और कमरे में बच्चों का पठन पाठन कराना सुनिश्चित करें। प्राथमिक विद्यालय भलुआ प्रखंड पकरीबरावां का औचक निरीक्षण में पाया गया कि 112 बच्चे नामांकित हैं, जिसमें से 70 बच्चे उपस्थित थे। इस विद्यालय में मात्र दो कमरे हैं और शिक्षकों की संख्या 10 है। उन्होंने जिला शिक्षा पदाधिकारी को निर्देश दिया कि बच्चों के अनुपात में शिक्षकों का समायोजन सभी विद्यालयों में कराना सुनिश्चित करें। शौचालय को साफ-सफाई एवं उपयोग लाईक बनाने का निर्देश दिये। उन्होंने कहा कि एजेंसी से या विद्यालय के निधि से सभी कमरे और शौचालय का साफ-सफाई कराना सुनिश्चित करें।

नव सृजित प्राथमिक विद्यालय तरहारा (प्रखंड पकरीबरावां) संचालित हो रहा है लेकिन अभी तक विद्यालय का भवन नहीं बना है। अपर मुख्य सचिव ने इसे गंभीरता से लिया है और कहा कि दो दिनों के अंदर फैब्रीकेटेड विद्यालय भवन बनाना सुनिश्चित करें जिससे कि बच्चे मौसम की प्रतिकूल दशाओं से बचते हुए अध्ययन कर सकें। इसके अलावे उप विकास आयुक्त को सामुदायिक भवन में दो कमरे शीघ्र बनाने का निर्देश दिये। उप विकास आयुक्त ने कहा कि गांवों तक आने वाले कच्ची सड़क को आरडब्लूडी के द्वारा बनाने के लिए टेंडर हो गया है। अपर मुख्य सचिव ने कहा कि पठन-पाठन में टोला सेवक को भी लगाओ। इस विद्यालय में 106 विद्यार्थी नामांकित हैं, जिसमें 47 उपस्थित थे। तत्पश्चात उत्क्रमित मध्य विद्यालय बुधौली, प्रखंड पकरीबरावां का निरीक्षण किया गया जहां शौचालय का यूनिट मात्र दो था, लेकिन बच्चों की संख्या 544 था। उन्होंने विद्यालय के मैदान को समतल बनाने और चार यूनिट का शौचालय बनाने का निर्देश दिये। मनरेगा से चहारदिवारी का निर्माण करने का निर्देश उप विकास आयुक्त को दिया गया। उन्होंने वर्ग कक्ष में जाकर विद्यार्थियों से पठन-पाठन के संबंध में फिडबैक प्राप्त किया। आज विद्यालय निरीक्षण के समय श्री आशुतोष कुमार वर्मा जिला पदाधिकारी, श्री अम्बरीष राहुल पुलिस अधीक्षक, श्री दीपक कुमार उप विकास आयुक्त, श्री रविशंकर कुमार अपर शिक्षा परियोजना पदाधिकारी, श्री अखिलेश कुमार अनुमंडल पदाधिकारी नवादा सदर, श्री दिनेश कुमार चौधरी जिला शिक्षा पदाधिकारी, श्री सत्येन्द्र प्रसाद जिला जन सम्पर्क पदाधिकारी, श्री तनवीर आलम डीपीओ स्थापना, प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी आदि उपस्थित थे।●

भूवनेश्वर से ट्रेनिंग लेकर लौटे नवादा के शिक्षक पटना में देंगे प्रशिक्षण

● अमित कुमार सिंह/अनिता सिंह

क्षेत्रीय शिक्षण संस्थान सह राष्ट्रीय शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद भुनेश्वर उड़िसा में आयोजित पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में नवादा के एक शिक्षक ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसमे उत्क्रमित उच्च माध्यमिक विद्यालय डेरमा अकबरपुर के शिक्षक अमित कुमार शामिल हुये। एन सी आर टी के क्षेत्रिय शिक्षक संस्थान भुवनेश्वर में बिहार और उड़िसा के विज्ञान शिक्षको के लिए मै कैपेसिटी विलिडंग प्रोग्राम फॉर इफेक्टिव यूज ऑफ साइस लैव प्रोग्राम 11 दिसम्बर से 15 दिसम्बर तक हुआ। जिसमे नवादा समेत बिहार के 12 शिक्षको ने भाग लिया। K.R.P KEY OF RESURCE PERSON के लिए गये थे। कार्यक्रम का आगाज प्रोफेसर एल वहेरा ने किया। उन्होने एनई सी 2020 के बारे में विस्तार रूप मे जानकारी दी। कार्यक्रम के संचालन में बिहार उड़िसा के शिक्षको का योगदान सराहनीय रहा। कार्यक्रम का संचाल कॉडिनेटर डा0 बी0एन दास के नेतृत्व मे किया गया। उन्होने कहा कि स्कूलो का अपना समझने पर सब कुछ हो सकता है। शिक्षक राष्ट्र निर्माता है। समर्पण भाव हर कार्य संभव है। आप एक थैला ले और प्रैटिकल के छोटे-छोटे समान को सग्रह कर अपने बच्चो एवं विद्यालय के बच्चो को विद्यालय स्तर से राज्य एवं देश स्तर पर आगे ले जा सकते है। उड़िसा से उ0 शिक्षक आये थे। जिसमें दो महिला शिक्षक भी थे तथा बिहार से 12 शिक्षक गये थे। लेकिन महिला शिक्षक एक भी नही गई थी। बिहार के शिक्षको का नेतृत्व अमित कुमार +2 डेरमा नवादा ने किया वही उड़ीसा के शिक्षक का नेतृत्व अजय साहु ने किया। प्रो0 वी0सी0 आचार्या और डॉ0 एस महोनतकी से पेड़ पौधे के बारे में बताया और प्रयोग कर के भी बताया। जन्तु विज्ञान के डॉ0 ए0वाल एवं डॉ0 ए0 गंगाधरण और MSR मोहलिन ने विशेष रूप से जन्तु के बारे में बताया। साइंस किटस के बारे में प्रो0 एच0ओ0 गुप्ता और प्रो0 एस के दास ने बताया। और प्रायोगिक स्तर पर करके सभी विषयो की साफट कॉपी एवं हार्ड कॉपी उपलब्ध कराया। प्रो0 आर0 के मोहालिक ने ICT IN TEACLING के बारे में विस्तार से बताया और प्ले स्टोर से KAHOOT एवं कई तरह की जानकारी दी और उन्होने कहा कि

अगर आप बच्चे को मोबाइल नहीं दिया तो DIGITAl SYSTEM से10 से 20 वर्ष Backwardness हो जायेगा। लेकिन इसकी लगाम अपने पास रखने की हिदायत ही O.T.P पासवार्ड, E-mail का पासवार्ड, आधार कार्ड मे मोबाइल नं0 अपना रजिस्टर्ड करने को कहा ताकि आपका बच्चा का सारा सूचना आप तक पहुँचे। बच्चे हमारे क्या कर रहे है। प्रो0 एच के सेनापति School assessment as per nep 2020 के बारे मे विस्तार रूप से बताया और सब कुछ संभव है। अगर आप चाहे तो अंतिम दिन सभी शिक्षको ने अनुसंधान केन्द्र में सभी प्रयोगो को वहाँ का प्रोफसरो ने बताया। इस कार्यक्रम में सभी शिक्षको ने गणित, वनस्पति विज्ञान, जन्तु विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिकी विज्ञान मे प्रायोगिक तौर पर बताया गया। उसके बाद सभी शिक्षको का वस्तुनिष्ट एवं लघु उतरीय प्रश्नों का परीक्षा लिया गया। उसके बाद प्रमाण पत्र का वितरण मुख्य अतिथि प्राचार्य डॉ0 पी0सी0 अग्रवाल के हाथो किया गया। कार्यक्रम में कुछ शिक्षको ने दो प्रयोग करके बताया और कहा कि इस तरह का कार्यक्रम पूरे देश मे राज्य एवं जिला स्तर पर होनी चाहिए। ताकि ज्ञान का द्वीप घर-घर जले। इसके बाद राष्ट्रीय गान जन-गन-मन के साथ कार्यक्रम का समापन डॉ0 वी0एन0 दास के द्वारा किया गया। इसके बाद फोटोग्राफी की गई। उत्क्रमित उच्च विद्यालय डेरमा, अकबरपुर के शिक्षक अमित कुमार प्रशिक्षण देगें। उनके साथ दो अन्य शिक्षक भी प्रशिक्षण में शामिल होगें। बच्चों को दक्ष बनाने में उनका सहयोग प्लस टू तैलिक बालिका उच्च विद्यालय बरबीघा, शेखपुरा के शिक्षक अमित कुमार तथा जी.एन.एस. डी.उच्च. विद्यालय वैशाली के शिक्षक कुमार मुकुल देगें। एन.सी.आर.टी.आर.आई.ई. भुवनेश्वर से प्रशिक्षण प्राप्त कर लौटे बिहार के 12 प्रशिक्षुओं में से यह तीन शिक्षकों को बच्चों की तीन दिवसीय कार्यशाला में एन.ई.पी. 2020 और आई.सी.टी. के बारे में जानकारी देगें प्रशिक्षक अमित कुमार ने बताया कि बच्चों की तीन दिवसीय कार्यशाला में राष्ट्रीय शिक्षा नीति में आईसीटी की भूमिका पर चर्चा चलेगी। पूरे देश को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान अर्थव्यवस्था में बदलने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली इस योजना के तहत प्रौधोगिकी स्वयं शैक्षिक प्रक्रियाओं और परिणामों के सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका आदि पर प्रशिक्षण होगा। एआई, मशीन लर्निंग, ब्लॉक चेन, स्मार्ट बोर्ड,

हैंडहेल्ड कंप्यूटिंग डिवाइस, छात्र विकास के लिए अनुकूली कंप्यूटर परीक्षण और अन्य प्रकार के शैक्षिक सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर से जुड़ी नई प्रौधोगिकियों की बात होगी। इसके साथ ही शैक्षिक प्रौधोगिकी में उचित बुनियादी ढांचे का निर्माण, इस क्षेत्र के दौरान रणनीतिक महत्व वाले क्षेत्रों की कल्पना और अनुसंधान और नवाचार के लिए नई दिशाओं पर बनी कार्य योजना की जानकारी दी जाएगी। मौके पर प्रो0 S.K. दास डॉ0 संजीव दास, डॉ0 बी0बी0 दास, डॉ0 एस पंडा प्रभातसा सेना पति, प्रो0 चैनी प्रो0 ए0 मंडला, डॉ0 एस मिश्रा, डॉ0 ए. गजधरम और प्रो0 M.S.R. मो हलिम, अमित कुमार, मुकुल कुमार पाण्डेय, डॉ0 जगरनाथ ठाकुर, प्रमोद कुमार, डॉ0 रमेश कुमार झा, रीतेश कुमार, मो0 जाकाउला, विवास सिंह, अभिनन्दन पुष्प, अभिषेक कुमार सिंह, राम रजन पाण्डेय, स्वान पावा स्वेन, सुभा दर्शनी अहिपीसा, सरोज कुमार सिंह, लक्ष्मण शरण, रविन्द्र नाथ, अचुतानन्दन, अजय साहु, अजय कुमार मेहर, देवदत, गौतम भारती समेत बुद्धिजीवी मौजूद थे। इधर पटना SCERT में तीन दिवसीय कार्यशाला में रश्मि प्रभा संयुक्त सचिव ने नेतृत्व कॉडिनेटर V.K. Singh एवं रश्मि प्रभा संयुक्त सचिव CERT ने संयुक्त रूप से द्वीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का विधिवत उदधार ने किया। रश्मि प्रभा ने बच्चो की उज्जवल भविष्य के लिए NCERT से सहयोग के लिए कहा तथा सभी को शुभकामना दी। इधर V.K Singh कॉडिनेटर ने संयुक्त सचिव रश्मि प्रभा को संज्ञान मे लेकर हर सहयोग का वादा किया तथा उन्होने कहा कि हमे प्रेरणा किसी से भी लेनी चाहिए। डॉ0 रजनी पाण्डेय जन्तु विज्ञान, विभाग मगध महिला कॉलेज मे वाजरा (Millet) के बारे में वृहत ज्ञान वंर्धक जानकारी दी। जिससे शिक्षिका रशमी कोमल ने भी बहुत सारी जानकारी शिक्षको एवं बच्चो को गृह विज्ञान के बारे में बताया। अन्त मे शिवम कुमार ने बच्चो की उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामना दी मौके पर पिंकी रानी, अलकारानी, नीरा कुमारी, वेदना कुमारी, नेहा, सोफिया जी समेत कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।●

धूमधाम से मनाया गया गुलमोहर एकेडमी का स्थापना दिवस समारोह

● **मनीष कमलिया**

नगर परिषद क्षेत्र के फुलबारी गली स्थित गुलमोहर एकेडमी का स्थापना दिवस समारोह पूर्वक मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि सेवा निवृत्त प्राचार्य डॉ गोविंद जी तिवारी ने कहा कि यह विद्यालय वारिसलीगंज का बहुत ही पुराना विद्यालय है जहां नन्हे मुन्हे बच्चों को शिक्षा के साथ संस्कार का ज्ञान भी देती है। उन्होंने कहा कि लंबे अरसे से चले आ रहे विद्यालय में खास कर नर्सरी से लेकर पांचवी क्लास तक कि पढ़ाई के लिए यह नजीर है। बच्चों के मानसिक विकास और उसमें शिक्षा के प्रति ललक पैदा करने के लिए बहुत ही मेहनत और लगन की जरूरत होती है जो यहां के निदेशक एवं शिक्षकों के द्वारा दी जाती है। उन्होंने कहा कि विद्यालय का वार्षिकोत्सव विद्यालय के एक बर्षो के सफल संचालन का आईना होता है। बच्चों को अपनी प्रतिभा को निखारने के अवसर भी मिलता है। इस अवसर पर विद्यालय के बच्चों ने भी अपनी सांस्कृतिक प्रस्तुति

देकर अविभावकों एवं अतिथियों का मन मोह लिया सांस्कृतिक कार्यक्रम में पायल, श्रुति, सन्नी सहित दर्जनों बच्चे शामिल हुए। विद्यालय के संस्थापक सह निदेशक डॉ राज कुमार ओझा ने आगत अतिथियों के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि व्यवसायिक शिक्षा के दौर में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं बच्चों को उनके योग्यता के अनुसार उन्हें परखने और ज्ञान देना महत्वपूर्ण कार्य है जो गुलमोहर एकेडमी कर रहा है। उन्होंने अविभावकों के भरोसे पर हमेशा खरा उतरने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को जाहिर किया। उन्होंने विद्यालय के स्थापना काल से सहयोगी रहे पत्रकार मिथिलेश कुमार एवं मनीष कमलिया के प्रति भी आभार जताया। डॉ शम्भू शरण ने कहा कि प्राचार्य अमन की अनुपस्थिति में विद्यालय को सँवारने एवं शैक्षणिक गतिविधियों को सुचारू रूप से चलाने में शिक्षिका अलीफा प्रवीण,खुशी परवीन एवं अभय तिवारी का बहुत बड़ा योगदान है। मौके पर महर्षि तनिक, प्राचार्य अमन, डॉ शम्भू शरण,मुखिया प्रभु प्रसाद सहित दर्जनों अविभावक मौजूद थे।●

न्यू ईरा किड्स विद्यालय का वार्षिकोत्सव धूमधाम से संपन्न

● **मिथिलेश कुमार**

नगर परिषद क्षेत्र अंतर्गत गया-नवादा रोड स्थित न्यू ईरा किड्स एंव सीनियर अकादमी के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आर्शिवाद होटल में आयोजित समारोह का उद्घाटन प्राइवेट स्कूल ऑफ चिल्ड्रेन वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रो० विजय कुमार एवं विद्यालय के निदेशक ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। आगत अतिथियों का स्वागत विद्यालय के छात्राएं साक्षम कुमारी, शिवानी शगुन, राधिका, साईमा सोम्या प्रवीण ने अपने मधुर कंठ से स्वागत गान से किया। समारोह में विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने अपनी सांस्कृतिक प्रस्तुति से उपस्थित अतिथियों एवं अविभावकों का मन मोह लिया। छात्राओं ने एकल गायन, समूह गायन, नृत्य संगीत, समूह नृत्य, देश भक्ति गीत एवं लोक भाषा पर आधारित गीतों की प्रस्तुति पर अविभावकों को ताली बजाने पर मजबूर कर दिया।

वार्षिक समारोह

के दौरान न्यू इरा किड्स एंड सीनियर अकादमी के छात्र एंव छात्राओं ने अनेको प्रकार के जलवा बिखेरा बम बम भोले डांस, अनिकेत ग्रुप तेरे जैसा यार कहां गीत सक्षम कुमारी, इन पंछियों को देखकर डांस सुप्रिया ग्रुप, दिल है छोटा सा डांस आरोही ग्रुप, लिजी डांस प्रिंस ग्रुप, डोला रे डोला डांस सक्षम ग्रुप ,यादव ब्रांड देव शंकर चिंता ता चिंता रौनक कुमार, मखना डांस राधिका ग्रुप ,दुनिया बनाने वाले रुद्रदेव बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ एक्ट सक्षम शगुन ग्रुप इन छात्र एवं छात्राओं के द्वारा अनेकों प्रकार का संगीत नृत्य कला और समाज में हो रही कुरीतियों को प्रदर्शित किया गया इस मौके पर न्यू इरा किड्स एंड सीनियर एकेडमी के डायरेक्टर प्रमोद कुमार एवं प्रिंसिपल रोहित ने कहा की यह संस्थान गरीबों का रहा है और गरीबों का एक छोटा सा मुकाम लेकर रोहित कुमार के द्वारा इस अकादमी को चलाया जा रहा है। प्राचार्य ने बताया कि यहां पर बहुत ही कम खर्च में बच्चों की सुव्यवस्था सुचारू रूप से सभी क्षेत्र में संगीत डांस एक्सीलेंट टीचर के तहत सारी सुविधाएं दी जाती है। मुख्य अतिथि ने सांस्कृतिक प्रस्तुति पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि वार्षिकोत्सव समारोह विद्यालय के एक बर्षो का मेहनत और बच्चों की प्रतिभा को निखारने के अवसर प्रदान करता है। यह एकेडमी बच्चों में शिक्षा के साथ नैतिक गुणों का समावेश भी करता है। विद्यालय के निदेशक ने आगत अतिथियों के प्रति आभार प्रकट करते हुए कहा कि हम अविभावकों के भरोसे को कायम रखने के लिए प्रतिबद्ध है। मौके पर विद्यालय के सभी छात्र छात्राएं एवं सैकड़ो अविभावक मौजूद थे।●

नवादा पब्लिक स्कूल का भव्य उद्घाटन

● अमित कुमार वर्मा/अखिल किशोर शर्मा

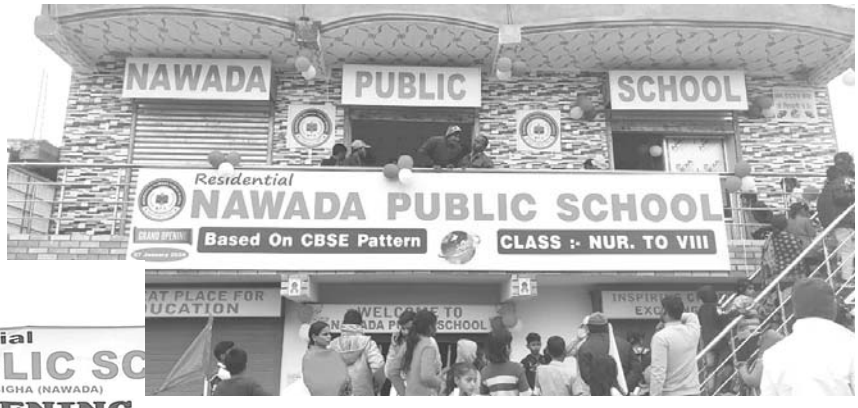

नवादा जिले के गोसाई बीघा भनैल मोड़ के समीप नवादा पब्लिक स्कूल का उद्घाटन सेवानिवृत्त शिक्षक सह कुशवाहा सेवा समिति के अध्यक्ष महेश्वर प्रसाद एवं सेवानिवृत्त एएनएम श्री मति ललिता कुमारी ने संयुक्त रूप से फीता काटकर किया।इस अवसर पर आयोजित उद्घाटन समारोह सह पारितोषिक वितरण सम्मान समारोह में सैकड़ो बच्चों को शील्ड एवं प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। वक्ताओं ने विद्यालय उद्घाटन समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि आस पास के दर्जनों गावँ के बच्चों को बेहतर शैक्षणिक प्लेटफॉर्म की कमी थी जो निश्चित तौर पर नवादा पब्लिक स्कूल के प्रबंधन के द्वारा पूरा किया जाएगा। विद्यालय के निदेशक एवं संस्थापक सदस्यों के द्वारा अविभावकों के विश्वास और भरोसे पर खरा उतर कर ग्रामीण प्रतिभाओं को पंख देकर उड़ान भरने के लिए तैयार करेगा। उन्होंने कार्यरत शिक्षकों से कहा कि आपके ऊपर बच्चों को बेहतर शैक्षणिक भविष्य के निर्माण की जिम्मेवारी दी गयी है इसमें आप अपना श्रेष्ठ देकर उनके अविभावकों के अरमान को पूरा करने का प्रयास करे, उन्होंने कहा कि आने वाले समय मे यह विद्यालय क्षेत्र में अलग स्थान कायम करेगा। विद्यालय प्रबंधन कमिटी के सलाहकार दीपक कुमार ने मंच का संचालन किया। इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धि हासिल करने वाले दर्जनों व्यक्ति को अंग बस्त्र देकर सम्मानित किया गया। विद्यालय में नामांकन को लेकर 24 दिसम्बर को परीक्षा का आयोजन किया गया था जिसमें करीब तीन सौ से अधिक बच्चों ने भाग लिया था। सभी वर्गो के शीर्ष दस छात्रों को अतिथियों के हाथों सम्मानित किया गया।आगत अतिथियों का स्वागत रविकांत कुमार वर्मा, राजेश कुमार ने स्वागत किया।मौके पर ओहारी पंचायत के सरपंच संजय सिंह, शिक्षक विजय कुमार, भाजपा नेत्री अनिता कुशवाहा, अरविंद कुमार, सन्तोष कुमार सहित सैकड़ों लोग मौजूद थे।●

मिस बिहार स्मृति भगत को किया गया सम्मानित

● सन्दीप कुमार

नवादा जिले की बेटियां भी बेटों से कम नही है। चाहे शिक्षा का क्षेत्र हो या खेल का क्षेत्र हो या किसी भी क्षेत्र की बात हो तो नवादा की बेटियों ने नवादा एवं बिहार को देश के मानचित्र पर स्थापित कर नया आयाम स्थापित किया है।नवादा की बेटियाँ ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी प्रतिभा का बेहतर प्रदर्शन कर बिहार का नाम रौशन किया है।नवादा पहुंची मिस बिहार स्मृति भगत का स्वागत में नगर के बेहतरीन होटल में आयोजित स्वागत सह सम्मान समारोह आयोजन किया गया जिसमें जिला के कई प्रसिद्ध लोग मिस बिहार को बुके व मोमेंटो से स्वागत किया। मौके पर बुद्धा रेजेंसी के प्रोपराइटर वीरेंद्र कुमार गुप्ता, उद्यमि राजीव सिन्हा, गोपाल प्रसाद, इत्यदि लोगो ने खूब आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर स्मृति ने कहा कि यह हमारे एवं जिले के लिए गौरव का पल है। लड़कियों को शिक्षा के साथ अपना पैशन भी समान रूप से आगे कर अपनी पहचान और मंजिल पाने के लिए परिश्रम करने की जरूरत है। जिसमें परिवार की भूमिका भी अहम है। उन्होंने कहा कि इसके बाद मुझे डिग्री हासिल करने के साथ अंतरराष्ट्रीय इवेंट में शामिल होने की तम्मना है। मौके पर पत्रकार सन्दीप सहित दर्जनों बुद्धिजीवी मौजूद थे।●